मैथिली आन्दोलन : एक सर्वेक्षण

[एक गवेषणात्मक निबन्ध]

A Critical Study of the Development of Maithili

पण्डितश्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'



All India Maithili Writers' Conference
Vaidehi Samiti
Darbhanga

1962

Issued as Vaidehi Special Oct-Dec. '62
Regd. No. P-714

मैथिली आन्दोलन : एक सर्वेक्षण

[एक गवेषणात्मक निबन्ध]

A Critical Study of the Development of Maithili

●

पण्डितश्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'

एम्. एल. एकेडमी, लहेरियासराय

●

●

श्रीकृष्णकान्तमिश्र, मन्त्री, वैदेही समिति एवं अखिल भारतीय मैथिली साहित्य सम्मेलन दरभंगा द्वारा दरभंगा प्रेस कम्पनी लिमिटेड, दरभंगामे मुद्रित ओ प्रकाशित

●

१९६२

मैथिली-आन्दोलन : एक सर्वेक्षण

भूमिका

भारतीय भाषा[1] साहित्यमे मैथिलीक प्राचीनता प्रमाणित भै चुकल अछि। ताहूमे विशेषता ई अछि जे मैथिलीमे जे सबसँ प्राचीन ग्रन्थ एखन

१—शिक्षाक हेतु संस्कृत भाषा छल जे शास्त्र कहबैत छल। भाषा शास्त्रमे परिगणित नहि होइत छल। आधुनिक युगमे भाषा विद्या मानल जाय लागल अछि।(A) संस्कृत जखन सर्वजन बोध्य नहि रहि गेल तँ तकर अर्थ लोक भाषामे होमै लागल जकरा भाषा टीका ग्रन्थ कहल जाइछ। भाषा कहलासँ संस्कृतसँ भिन्न कोनो भाषा बूझल जाइत छल से प्रान्त भेदेँ अपन-अपन प्रान्तीय-भाषा लोक बुझैत छल। एहि उक्तिक पुष्टिमे गोस्वामी तुलसीदासकृत रामायणक मङ्गलकेँ लै सकैत छी। गोस्वामी तुलसीदास लिखैत छथि :

नाना पुराण निगमागम सम्मतं यत्, रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि।
स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथ-गाथा-भाषा-निबद्धमतिमञ्जुलमातनोति॥

एहिमे 'भाषा निबद्धम्' पद उक्तिक पुष्टि करैछ। ओ हिन्दी वा अवधी वा कोनो प्रान्तीय भाषाक नामोल्लेख नहि कैलनि। हमरा जनैत संस्कृत देवभाषा ओ ताहिसँ अतिरिक्त लोकभाषा थीक। लोकभाषाकेँ मानुषी भाषा कहि वाल्मीकि सेहो उल्लेख कैने छथि। अशोक वाटिकामे जखन महावीरजी पहुँचैत छथि तखन सीताक समक्ष कोन रूपेँ उपस्थित होइ तकर मनहि मन विचार करैत छथि :

अहं ह्यति तनुश्चैव वानरस्य विशेषतः।
वाचं चोदाहरिष्यामि मानुषीमिह संस्कृताम्॥१७॥

यदि वाचं प्रदास्यामि द्विजातिरिव संस्कृताम्।
रावणं मन्यमाना मां सीता भीता भविष्यति॥१८॥(B)

—वाल्मीकीय रामायण, सुन्दरकाण्ड

अतः एहि निबन्धमे जतै कतहु लोकभाषा शब्देँ कहल जैत तकर तात्पर्य संस्कृतसँ इतर भाषा बूझक चाही। यद्यपि स्वतन्त्र भारतमे भाषाक अनेक वर्गीकरण कै ओझरौट लगा देल गेल अछि। यथा : राष्ट्रभाषा, राजभाषा, क्षेत्रीय भाषा, लोकभाषा आदि।

(A) देखू डा० श्रीजयकान्तमिश्रक इतिहासमे प० श्रीरमानाथझाक उद्धरण—Voll II पृ० ३।
(B) देखू म० म० मुरलीधरझा लिखित 'मिथिलाभाषा'—मिथिला अङ्क १ वर्ष १ पृष्ठ ११।

धरि प्रकाशमे आबि सकल अछि से थीक गद्य-ग्रन्थ[1] वर्णरत्नाकर, संगहि कोमलकान्त-पदावलीक रचयिता अभिनव जयदेव, मैथिल-कोकिल महाकवि विद्यापतिकेँ तँ हिन्दी ओ बंगलाबला सेहो प्रथम कवि मानिते छथि। तेँ तँ पाठ्य-ग्रन्थक प्रणयन जे भेल अछि, ताहिमे सर्वप्रथम कविता मैथिल-कोकिलेक संकलित अछि, से हिन्दी बंगला तकरो। नाटकोक क्षेत्रमे मैथिली लोक-भाषा साहित्यमे सबसँ प्राचीन अछि।[2]

एतेक प्राचीन भाषा ओ साहित्य रहितो स्वतन्त्रता प्राप्तिक बाद मैथिलीकेँ उचित अधिकारसँ वंचित रहै पड़लैक तकर कारण की? एहि प्रश्नक उत्तरमे मैथिलीक वर्त्तमान प्रगति ओ आन्दोलन पर विहंगम दृष्टि देब आवश्यक, संगहि भविष्यक हेतु कोन मार्गक अनुसरण उचित से सर्वथा चिन्तनीय विषय थीक।

मैथिली साहित्यक इतिहास लिखबाक स्तुत्य प्रयास सबसँ पहिने चिरजोवी डा० श्रीजयकान्तमिश्र कैलनि जे अन्यभाषाभाषी (मैथिलीसँ अनभिज्ञ) विद्वानक हेतु परम आवश्यक छल, तेँ ओ अङ्गरेजीमे लिखलनि। हुनके अनुज आयुष्मान् प्रो० श्रीकृष्णकान्तमिश्र मैथिलीमे इतिहास लिखि मिथिलाक निवासी, अङ्गरेजीसँ अनभिज्ञ, मातृभाषा-प्रेमी लोकनिक हेतु प्रस्तुत कैलनि। तदनन्तर हिन्दीमे सेहो संक्षिप्त इतिहास[3] लिखबाक प्रयास भेल जे पटनाक एक प्रकाशक प्रकाशित कैलनि।

१९६१ मे श्री बालगोविन्दझा 'व्यथित' एम्० ए० (द्वय) द्वारा तेसर इतिहास प्रकाशित भेल अछि जे संक्षेपमे वर्तमान प्रगति धरि पर प्रकाश दैत

१—'जाहि ठाम अन्यान्य साहित्यक आरम्भ होइछ गीतिकाव्यसँ ताहि ठाम हमरा साहित्यक आरम्भ होइछ एहि गद्य काव्यसँ। एहन हयब असम्भव, परन्तु उपलब्ध साधनक आधारपर तँ इएह कहल जा सकैछ।'

—वर्ण रत्नाकरक भूमिका पृ० ७ स्व० प० बबुआजीमिश्र

२—देखू—मैथिली साहित्य परिषद पत्रमे प्रो०श्रीतन्त्रनाथझा लिखित—'मिथिलाभाषाक नाटकक परम्परा'।

३—श्रीवैद्यनाथसिंह 'विनोद' अजन्ता प्रेस पटना।

अछि। अतः साहित्यक गति-विधि, उत्थान-पतन आदि विषयक ज्ञानक हेतु उपर्युक्त इतिहास सब एखन पर्याप्त अछि। यद्यपि ओहि आधारपर आरो स्पष्ट रूपेँ नवीन इतिहासक प्रयोजन एखन अछिए, किन्तु एहिमे हम केवल मैथिलीक आन्दोलन पर अपन अनुभवक आधार पर थोड़ बहुत प्रकाश देबाक चेष्टा करब। वर्त्तमान युगक न्यों कोना पड़ल, ओकर भित्ति दुर्बल छैक अथवा सबल से बुझबाक हेतु पहिने सामाजिक, शैक्षणिक ओ राजनीतिक दृष्टिएँ विचार आवश्यक अछि।

भारतवर्षमे नवीन चेतनाक युग उनैसम शताब्दक उतरार्द्ध सँ आरम्भ होइछ। एहीकालमे एहिठाम वृटिश-साम्राज्यक पूर्ण स्थापना भेल। मिथिलाक शासन एक प्रकारेँ वर्त्तमान दरभंगा राज्यक अधीन छल। जनसाधारणकेँ वृटिश सरकारसँ साक्षात् कोनो सम्पर्क नहि छलैक। सुख-दुख, सुविधा-दुविधा सबमे एक आश्रय लोकक हेतु मिथिलेशे छलथिन, किन्तु एही परिवर्त्तन कालमे तत्कालीन मिथिलेश महाराज महेश्वर सिंहक देहान्त[1] भै गेलनि। मिथिला राज्यक व्यवस्था १९ वर्षक हेतु 'कोर्ट ऑफ वार्ड्स'[2]क अधीन कै देल देल। महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह एवं महाराजाधिराज रमेश्वर सिंह जाधरि बालिग भेलाह ताधरि राज्य संचालनक हेतु चलैत मैथिलीभाषा ओ तिरहुता लिपिक स्थान पर आन भाषा आ आन लिपि प्रतिष्ठित भै गेल छल।[3]

१—'In 1860 Maharaja Maheshwarasimha died'.

—डा० श्रीजयकान्तमिश्र

२—सन् १२६८ सालक आश्विन सुदि अष्टमीमे पिताक देहान्त भेलापर महाराज लक्ष्मीश्वरसिंह पैतृक राज्य पदाधिकारी भेलाहो तँ अत्यन्त बाल्य अवस्थाक भेलेँ ओ अधिकार वृटिश सम्राट् केर प्रतिनिधि लार्ड महोदय द्वारा कोर्ट आफ वार्ड्स नामक साम्राजी संस्थाक अधीन कयल गेल।

—'मिथिलाभाषामय इतिहास' म० म० बख्शी मुकुन्दझा

३—'Now during these years the first stirrings were felt from the contact with the west. Unfortunately, however, they abolished the use of the maithili language and script, and established Urdu and Persian in public life.

एहि स्थलमे सबसँ पैघ अपराध (अज्ञानसँ)[1] महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह द्वारा भै गेलनि जे मैथिलीक हित-विरोधक कारण भै गेलैक। मैथिलीक चलैत परम्पराक बिनु अन्वेषण कैनहि राजकाजक हेतु हिन्दीकेँ ग्रहण कै लेलनि।[2]

हिनके सत्प्रयासेँ दरभंगामे अङ्गरेजी स्कूलक स्थापना भेल। जखन अङ्गरेजीक शिक्षाक प्रसार भेलैक तँ संस्कृतक गढ़ मिथिला धर्मच्युतिक भयसँ

१—बाल्य अवस्थाक कारणेँ उचित परामर्शक अभावमे अपन स्फूर्तिसँ हिन्दीकेँ ग्रहण कैलनि। बुझबाक ई थीक जे भावनामे मैथिली रहलो होइन्ह, किन्तु 'ओहि भाषाक एतेक महत्त्व भविष्यमे भै सकैत छैक' ई सोचबाक विषय कोनो मनीषीक हेतु भै सकैत छलनि। देशमे अङ्गरेजी शिक्षाक प्रवर्त्तन भै चुकल छलैक, राजसी ठाठ वाटपर मुसलमानी(A) दरबारक ढंग ढाँचा बनले छलैक (जकर प्रसादात् गोसाउनिक घरमे 'सलामी' पहुँचि गेल, तखन दलाने धरि तखतपोश रहल तँ कोन भारी बात ?) स्वयं ओ ओही वातावरणमे पालल गेलाह तेँ अङ्गरेजी शिक्षा ओ हिन्दी भाषा दिस ध्यान गेलनि तँ एक युवक महाराजक विचार युगक प्रतिकूल नहि कहल जा सकैछ। हुनक राज्य - शासन प्रजाक हेतु प्रिय छलनि। शिक्षाक प्रसारमे, धार्मिक अनुष्ठानमे, सार्वजनिक हितकार्यमे उदार चित्तेँ खर्च करैत छलाह।(B)

२—'When the new Maharaja Lakshmishvarsimha was reinstated he was advised to make Hindi instead of Persian and Urdu,.........'

A History of Maithili literature' —डा० श्रीजयकान्तमिश्र

(A) भेषभूषा सेहो प्रभावित छलनि।

(B) देखू म० म० वक्शीजीक 'मिथिलाभाषामय इतिहास' पृ० ४२५ त्रयोदश विश्राम।

ओहि शिक्षाके ग्रहण करबे नहि केलक[1]। आन-आन भाषाभाषी शत-शत संख्यामे बी० ए० पास करै लगलाह[2] तावत धरि प्रथम बी० ए० स्व० विन्ध्यनाथ झा भेल छलाह। एहि हेतु महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह छात्रवृत्ति दैत छलथिन, जकर उपभोक्ता म० म० डा० सर गंगानाथ झा सेहो छलाह।[3] एहि प्रकारेँ अंग्रेजी शिक्षाक प्रसार मिथिलामे भेल।

हिनके समयमे कवीश्वर चन्दा झा (चन्द्रनाथ झा) एहि दरबारमे पहुँचलाह। एहि ठाम ई उल्लेख करब आवश्यक जे भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जखन हिन्दीक आन्दोलन आरम्भ कैलनि ताहिसँ कतेक पहिनेसँ कवीश्वर मैथिलीमे रचना करैत छलाह। एहि दृष्टिएँ आधुनिको युगमे मैथिली हिन्दीसँ जेठ अछि।

राजकाजसँ मैथिलीक बहिष्कार भेलाक बाद ओकरा हेतु एक मात्र स्थान रहि गेल छलैक। मिथिलामे शिक्षा होइत छलैक संस्कृतक ओ तकर माध्यम छलैक मैथिली। एहि तथ्य दिस इतिहासकार लोकनि सूक्ष्म-दृष्टि नहि देलनि अछि। एखनो सूत्र-ग्रन्थ मैथिलीएक माध्यमसँ पढ़ाओल जाइत अछि। एहि ठाम ईहो कहब अत्युक्ति नहि हैत जे एखनहुँ जे विद्वान् मिथिलासँ बाहर जाय अध्यापन नहि कैलनि अछि ओ संस्कृत तथा मैथिलीसँ इतर भाषामे सूत्रक व्याख्या नहि कै सकताह। तेँ मैथिलीसँ सम्पर्क संस्कृतज्ञ विद्वान् लोकनिकेँ रहलनि आ एकर क्षीण दशा देखि सबसँ बेसी चिन्तितो वैह लोकनि भेलाह।

१–'जखन महाराज लक्ष्मीश्वरसिंह परमोदार चरित राजगद्दीकेँ सुशोभित कैल तखन थोड़ेक देशी पण्डितगण, किछु पहलवान, थोड़ेक मोसाहेब हिनका सबहिक प्रवेश तँ भेल किन्तु ततेक अङ्गरेजी कानून जल सिंचल जाए लागल जे पिच्छड़मे सब दरबारीकेँ पैर बचाए-बचाए चलए पड़न्हि।'(A)

—'मिथिला' मासिक अंक १ वर्ष १ पृ० १२

२—'देखू—म० म० डा० सर गंगानाथझा लिखित मिथिलाक अधोगतिक निदानक समीक्षा।'

३—देखू—प्रो० श्रीरमानाथझा लिखित—म० म० डा० सर झाक जीवनी।

(A) देखू 'मिथिलाभाषा' शीर्षक निबन्ध म० म० मुरलीधरझा। अरबी फारसी प्रचारक समय सेहो एहिठामक पण्डित लोकनि प्रचार करैत छलाह—'न वदेत् यावनीं भाषां प्राणैः कण्ठगतैरपि।'

मैथिली-साहित्यमे नवीन चेतनाक द्वार कवीश्वरे द्वारा उद्घाटित भेल अछि। ओ गद्य, पद्य, नाटक,[1] शोध कार्य सब दिस[2] प्रवृत्त भेलाह। समय आगाँ ससरि चुकल छल। महाराजाधिराज रमेश्वर सिंह सामाजिक संगठनक नेतृत्व अपना हाथमे उठा लेलनि। अपन संस्कृति ओ साहित्य, धर्म ओ जातिक मर्यादा बचैबाक हेतु सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक ओ धार्मिक संस्था सभक संगठनक आवश्यकताक अनुभव लोक करै लागल छल। एहन संगठनक महत्त्व शिक्षिते वर्ग बुझैत छलाह। संरक्षण कोनो एहन विशाल व्यक्तित्वक अपेक्षित छल जाहिसँ आधार सुदृढ़ रहि सकै। एहि युग धरि धनक ततेक प्रतिष्ठा भै चुकल छलैक[3] जे साधारणो धनवान् लोक समाजमे मुखियाक स्थान ग्रहण कै चुकल छल। महाराजाधिराज रमेश्वर सिंह तँ ओहि वंशमे अवतीर्ण भेल छलाह, जाहि वंश पर लक्ष्मी ओ सरस्वती दूनूक कृपा बनल रहलनि अछि, अपितु ई कहक चाही जे लक्ष्मी तँ सरस्वतीकेँ कतेक ठाम किनने छथि, सरस्वती लक्ष्मीकेँ एही वंशमे किनलनि। हिनके नेतृत्वमे सामाजिक संगठन भेल। हिनक नेतृत्वमे लोककेँ आस्था भेलैक तकर एक आरो कारण छल। हरिद्वारमे गंगाक मुख्य धाराकेँ बान्हि नहरि द्वारा पंजाब दिस लै जैबाक आदेश जखन वायसराय देलथिन तँ काश्मीर आदि देशी नरेश लोकनिक अग्रसर भै ओहि आदेशमे मिथिलेशे परिवर्त्तन करौलनि। गंगा सन पवित्र धाराक पुनरुद्धारक भेलाह तेँ 'अपर भगीरथ'क उपाधिसँ विभूषित कैल गेलाह।

१—पुरुष परीक्षाक मैथिली अनुवाद, मिथिलाभाषा रामायण, चन्द्रपद्यावली, अहल्योद्धार (नाटक) जे अपूर्ण रहलनि।

२—Versatile genius, can be claimed Father of modern maithili Literature

—डा० श्रीजयकान्तमिश्र

३-देखू मासिक पत्र मिथिला पृ० ३१५—'ब्राह्मण समाजमे सरस्वतीक अपेक्षा लक्ष्मीक अधिक आदर भेने...'

धार्मिक अनुष्ठानमे हिनक सहयोग देखि विद्वत्समाजक दिशसँ 'धर्मरत्नाकर' उपाधि से हिनका प्राप्त छलनि[1]। ई एक दिस भारतधर्म महामण्डलक संरक्षक छलाह, जाहि माध्यमसँ सनातनधर्मक रक्षा होइत छलैक। स्वामी दयानन्द सरस्वतीक नेतृत्वमे आर्यसमाजक आन्दोलन चलि रहल छलैक जे विशुद्ध वैदिक धर्मक नामपर ब्राह्मण धर्मकेँ पाखण्ड-पूर्ण धर्मक संज्ञा दैत छलैक। कर्मकाण्डक रक्षार्थ ई संस्कृत महाविद्यालय, विद्यालय आदिक स्थापना सेहो कैलनि जाहिमे वेद, कर्मकाण्ड, धर्मशास्त्र, न्याय, व्याकरण, वेदान्त, मीमांसा, काव्य, साहित्य, ज्योतिष, आयुर्वेद आदि समस्त शास्त्रक अध्यापनक व्यवस्था कैलनि[2]। धर्मसमाज संस्कृत कालेजमे कर्मकाण्डक स्थान बनबौलनि[3], कर्मकाण्डक ग्रन्थ सभक उद्धार करौलनि, सभक प्रकाशन भेलैक। दृश्यगणनानुसार पञ्चाङ्गक व्यवस्था करौलनि, (सुनल अछि जे दरभंगामें 'वेधशाला' निर्माणक आकांक्षा सेहो छलनि जकरा पूर्ण नहि कै सकलाह)।

एक टा अद्‌भुत काज ई आरो कैलनि। प्राचीन मन्दिर सभक जीर्णोद्धारक अतिरिक्त भारतक प्रत्येक तीर्थ ओ प्रमुख नगरमे राजकीय प्रासादक संग देव-मन्दिरक स्थापना करैत गेलाह, जाहि ठाम कमसँ कम तीन व्यक्ति मैथिली-भाषी निश्चित रूपेँ रहै लगलाह। राज्य-कार्यक विस्तार ओ व्यवस्था ताहि रूपेँ कैलनि जे दस हजारसँ बेसी लोककेँ आश्रय भेटि गेलैक।

हिन्दुत्वक रक्षाक चिन्ता सेहो हिनका रहैत छलनि जाहि कारणेँ हिन्दू विश्वविद्यालयक स्थापनामे स्वयं ५ लाख टाका दै भिक्षुक ब्राह्मण जकाँ

१—देखू—मिथिलाभाषामय इतिहास—पृ० ४४३

२—जेना—रमेश्वरलता महाविद्यालय दरभंगा, कपिलेश्वर स्थान संस्कृत विद्यालय, लोहना विद्यापीठ, लक्ष्मीपुर संस्कृत विद्यालय, राजनगर संस्कृत विद्यालय, आदि

३—'सर्वश्रेष्ठतमे मुजफ्फरपुरे विद्यालयेऽध्यापनम्।
स्वीकृत्य विनियोजितोऽभवमहो सत्कर्मकाण्डत्रये ॥'
म०म० बखशी मुकुन्द शर्मणः जीवन चरित्रम पृ० १८

प० मदनमोहन मालवीयजीक संग भिक्षा-पात्र लै सब देशी नरेशक ओतै पहुँचलाह। (यद्यपि एकरे प्रसादेँ पछाति मैथिलीकेँ उक्त विश्वविद्यालयमे स्थानो भेटलैक, भने बादमे कोनो संगठन अथवा व्यक्ति एहि हेतु आरो प्रयास कैने हो) किन्तु एतेक होइतो सरकारी काजमे मैथिलीक प्रवेशक कोनो उद्योग नहि कैल गेल, एतबा धरि सत्ये[1]। एहि हेतु संस्कृतज्ञ तथा मैथिलीक हितचिन्तक किछु आक्रोश[2] सेहो करैत छलाह।

सामाजिक संगठन जे १६१० ई० मे भेल तकर नाम भेल मैथिल महासभा, किन्तु ओहिमे सदस्य बनबाक अधिकारी भेलाह केवल हरिसिंह-देवीय व्यवस्थाक अन्तर्गत परिगृहीत मैथिल ब्राह्मण ओ कर्णकायस्थ मात्र, जे महाराजाधिराजक निकट सम्पर्कमे छलाह। एहि संगठनपर दुनू गोट प्रभाव छल। एक तँ ओहि समयमे आन-आन जातिक जातीय संगठन भै रहल छलैक, दोसर ओही समयमे वंग-विच्छेद-आन्दोलन चलि रहल छलैक। मिथिला अथवा तिरहुत बिहार नामक नव-निर्मित-प्रान्तक अन्तर्भुक्त कैल गेल, (एहू हेतु मैथिलीक भविष्यक सम्बन्धमे गम्भीर चिन्तन कैनिहार कम चिन्तित नहि भेलाह[3]) तेहन स्थितिमे अपन राजनीतिक स्थिति सुदृढ़ रखबाक हेतु जातीय संगठन आवश्यक भै गेल छलैक।

१—'जाहि करुणागारकेँ 'मिथिलेश' रुचिकर, किन्तु मैथिली भाषाक उन्नतिक हेतु कनेको उत्साह नहि, यदि दैवात् कनेक उन्मुनो होइतहुँ छन्हि तँ तेहन-तेहन राज प्रधान मिथिला-लवण-भक्त हाउ लोकनि छथि जे मैथिली कलकत्ता युनिवर्सिटीमे सफल मनोरथ परन्तु बिहारमे–'दुर-दुर छी-छी।'
म० म० मुरलीधर झा, 'मिथिला' अंक १ वर्ष १ पृ० १३

२—हमर त विश्वास अछि जे यदि पचीस वर्ष पूर्व मैथिलीक स्वीकृतिक हेतु यत्न कयल जाइत तँ आइ बिहारक भाषा हिन्दी नहि, किन्तु मैथिली कहबैत। —श्रीभुवनेश्वरझा बी. ए. आनर्स तथा प० श्रीरमानाथझा बी. ए. आनर्स 'मिथिला' वर्ष १ अंक १ पृ० १५

३—'ई सब त जे किछु, जे तेहन महापुरुष लोकनि विचार कैलन्हि जे परम याज्ञिक विश्व विख्यात मिथिला देश, तिरहुत ओ विदेह नहि कहाए बिहार भए गेल !!!' म०म० मुरलीधर झा, 'मिथिला' वर्ष १ अंक १ पृ० १२

एमहर जातिमे बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह, कन्या-विक्रय, निरर्थक जातिक अभिमान,[1] एमहर थोड़ बहुत अङरेजी शिक्षाक सम्पर्कसँ आचार ओ निष्ठाक प्रति अनास्थाक भाव[2] समाजमे बढ़ि रहल छलैक।[3] तेँ एहि सब दोषक निराकरण, स्त्री शिक्षाक प्रचार, संस्कृतक संवर्द्धन तथा मेडिकलमे छात्रक प्रवृत्तिक हेतु छात्रवृत्तिक व्यवस्था आदि कार्यकेँ अपनौलक, किन्तु मैथिलीक हेतु कोनो ठोस कार्यक्रम एकरो सोझाँ नहि अयलैक। १९१९ ई० मे आबि कै मैथिली साहित्य परिषद् (मिथिलाभाषा साहित्य परिषद्) क आयोजन मैथिल महासभाक अवसरपर कैल गेल।[4]

भाषा ओ लिपिक[5] प्रचारार्थ एहि अवधि धरि अनेक प्रकारक प्रयास चलि रहल छल। किन्तु मैथिल महासभाक उद्देश्य ओ नाममे भिन्नता रहलाक कारणेँ परिणाम ई भेल जे मिथिलामे निवास करितो मैथिल ब्राह्मण ओ कर्णकायस्थक अतिरिक्त लोक अपनाकेँ अमैथिल बूझै लगलाह, संगहि मैथिली साहित्यकेँ अपन भाषा - साहित्य मानब हुनका सभक हेतु निषिद्ध भै गेलनि, जकर प्रभाव एखन धरि समाजपर अछिए। यद्यपि

---

१ 'की हेतु भेल खल मैथिल तोर नाश
मिथ्याभिमानरत चेत अरे ! हताश' श्रीचिरंजीव झा, बी. ए. बी. एल्
—'मिथिला' अंक २ वर्ष १ पृ० ६३

२ 'द्विज कुल जनमि जनौ जे जानै कुंजी बान्हक ताग
तकर भेष भूषण शिर धैलें अपन खसौलें पाग
पढ़ि टुम टाम टका दिशि टक धै मानि अपन बड़भाग,
....
सुयश पूर्व पुरुषक अरजल जे तनहु लगौलें दाग'
—महाकवि श्रीसीतारामझा—मिथिला वर्ष १ पृ० १

३ 'आहि देशक धर्म कर्म देखि सभ देश दासत्व स्वीकार करैत छल ताहि देशक लोककेँ सदाचारहुक ज्ञान नहि ?' श्रीत्रिलोकनाथझा, मिथिला पृ०२०९

४ देखू—'मिथिला' मासिक पत्रक सम्पादकीय पृ० ४६८

५ देखू—'मिथिला' सम्पादकीय पृ० ४८

'मिथिलायांभवः मैथिलः' एहि व्युत्पत्तिक अनुसार एहि भ्रान्तिक निवारणक प्रयास तहिएसँ होइत रहल अछि।[1] तथापि एहि भ्रान्तिक निवारण एखन धरि भै नहि सकल अछि।

ई पहिने कहि आयल छी जे मैथिलीक चिन्ता संस्कृतज्ञे लोकनिकें छलनि, मुदा एकरा बिसरबोक नहि चाही जे एहि भाषा साहित्यक अतीत-गौरव-गरिमापर सबसँ पहिल दृष्टि पड़लनि डा० जॉर्ज ग्रियर्सनक जे कलकत्तामे बंगालिओक कंठसँ विद्यापति रचित भाव विभोर पद सुनने छलाह आ मिथिलाक हृदय प्रदेश मधुबनीमे रहि कपिलेश्वर, राजेश्वर जाइत मैथिल-ललनाक कंठसँ सेहो वैह पद सब सुनलनि। हुनक उत्सुकता प्रेरित कैलकनि, तखन ओ सहायता लेब आरम्भ कैलनि, से कवीश्वरेसँ। एहि प्रकारें अङ्रेजी जननिहारक कोन कथा स्वयं अङ्रेजे एकर मूलकें सिंचित कैलनि, किन्तु एहिठामक अङ्रेजी ज्ञाता सहायक नहि भै सकलथिन से भेलथिन. संस्कृतज्ञे।

यद्यपि संस्कृतज्ञोमे किछु लोक एहन छलाह जे कवीश्वर द्वारा होइत महत्त्वपूर्ण कार्यसँ भीतर-भीतर ईर्ष्या करैत छलथिन आ अप्रतिष्ठ करबाक हेतु षडयन्त्र रचैत रहैत छलथिन जकर फलस्वरूप कवीश्वरक पद सब समय समयपर राग, ताल, छन्द, लय, भाषा, भाव आदिक कसौटीपर कसल जाइत छलनि। एहि प्रकारक अहम्मन्यताक कारणें मैथिलीक प्रगति अवरुद्ध होइत रहलेक अछि।

भाषाक क्षेत्रमे एक क्रान्ति मनबोध अपन 'कृष्णजन्म' मे आरम्भ कै चुकल छलाह। ओ 'देसिल बअना सब जन मिट्ठा' क मर्म बुझैत छलथिन तें ठेंठ[2] शब्दावली, जे शब्दक पँजियाड़ीमे जयवार (वाभन) मानल जाइत छल, प्रयोगमे अनलनि। कवीश्वर ठेंठ शब्दावली, उपलक्षण, वाग्धारा

---

१ देखू (क)—म०म० मुरलीधर झाक निबन्ध, 'मिथिला' पृ० १३

(ख) ठाकुर धर्मलाल सिंहक—'मैथिल ककरा कही' मैथिलोक अंक ७ वर्ष २ पृ० २३

२ 'हरि पुनु हथगर गोड़गर भेल', 'पहरेक अड़रा कड़रा पड़ल', 'गुड़कल गुड़कल भिड़कल जाय' 'सर सर कय घर पैसलि धाय' 'सकटक अकट बकट सब फूटल' आदि—कविवर मनबोध

आदिपर अद्भुत अधिकार'[१] रखैत छलाह, हुनक रामायण एहि सभक छोट छीन कोषे छनि। किन्तु 'भाषा कवि' कहि हिनको प्रति हीन-भावना उत्पन्न करबाक चेष्टा चलैत छल। एखनहुँ ठेँठ शब्दावलीक प्रयोगकेँ एक वर्ग-विशेषक लोक हीन भावनासँ[२] देखितहि छथि आ वर्त्तमान कालमे शब्दपर अद्भुत अधिकार रखनिहार महाकवि श्रीसीतारामझाक रचनापर एहन दोषारोपण कैलो जाइत छनि। तथापि मैथिलीक हितचिन्तनक प्रवृत्ति संस्कृतेक विद्वानमे देखल जाइत अछि।

अङरेजी शिक्षा प्रसार भेबो कैल तँ सरकारी राजकाजमे मैथिलीकेँ कोनो स्थान नहि रहलाक कारणेँ ओहि शिक्षामे सेहो कोनो स्थान नहि रहलैक। परिणाम स्वरूप अङरेजी शिक्षा प्राप्त कैनिहार, जनिका संस्कृतसँ साक्षात् सम्पर्क नहि रहलनि, से मैथिलीओसँ उदासीने रहलाह। एकर पुष्टिमे हम (मैथिली १९२५ ई० पृ० ३४) श्रीभोलालालदासक लिखल निम्नलिखित उद्धरण उपस्थित करैत छी—

'जनता मूर्ख अछि। शिक्षित समाजमे दू भाग अछि एक तँ अङरेजी पढ़ल व्यक्तिक ओओर दोसर संस्कृतज्ञक। अङरेजी शिक्षित व्यक्ति एक तँ पण्डित लोकनिक अपेक्षा थोड़ छथि दोसर अहिमे अधिक व्यक्ति टाका कमाय केवल अपना स्वार्थ साधनकेँ जीवनक एकमात्र उद्देश्य बनौने छथि।......

दोसर दल पण्डित लोकनिक अछि। यथार्थ पूछी तँ अद्यापि अही दलक प्रभाव मैथिल जनतापर अछि। पण्डितवर्गकेँ संस्कृत साहित्यक ज्ञान बेश रहैत छैन्ह किन्तु सामयिक ज्ञान नहि रहलासँ ओ दोष अन्वेषण नेहि कै सकैत छथि।'

---

९ (Canda Jha had) wonderful mastery over the language appropriate idioms and figures of speech................. Laldasa tried to follow the lead given by Canda Jha in his Rameshvara Ramayana......It does not have the variety of metres and Ragas, the command over the vocabulary, idioms and proverbs, and the poetical qualities of Canda Jha's Ramayana.

—डा० श्रीजयकान्तमिश्रक इतिहास Vol. II पृ० ८४

१ देखु—'मैथिली साहित्य परिषद पत्र' अंक १ वर्ष १ मे प० श्रीकाशीनाथझा 'किरण'क निबन्ध 'मैथिलीक शब्द समाज'

एहिठाम ई कहब अत्युक्ति नहि हैत जे म० म० डा० सर गंगानाथझा जँ कनडेरिएँ मैथिली दिस तकलनि त तकर कारण संस्कृतसँ साक्षात् सम्पर्क छलनि। ओहीठाम हुनके सुपुत्र डा० अमरनाथझा, जे अपन वैदुष्यक प्रसादे विश्वमे ख्याति प्राप्त कैने छलाह, मातृभाषाक सेवा ओहि अनुपातमे नहि कै सकलाह। ओना तँ श्रोत्रिय - ब्राह्मण वंशमे उत्पन्न हैबाक कारणेँ संस्कृतसँ अनभिज्ञ नहिएँ छलाह, अपितु उर्दू साहित्य पर्यन्तपर अपन अद्भुत अधिकार ओ रुचि रखैत छलाह, किन्तु ओ जतेक उच्च पद सभक प्रतिष्ठा बढ़ौलनि से मैथिलीकेँ नहि प्राप्त भै सकलैक। एहि दृष्टिएँ म० म० डा० श्रीउमेशमिश्रक प्रयास स्तुत्य छनि आ मैथिलीभाषी जे एहि आभारकेँ स्वीकार नहि करताह से निश्चय निष्पक्ष इतिहासक पृष्ठपर कृतघ्न नामे अङ्कित हैताह।

संस्कृत शास्त्रक ज्ञान गरिमाक प्रसादेँ अत्रत्य विद्वान लोकनि भारतक विभिन्न भागमे जीविकोपार्जन हेतु पूर्वहिसँ रहैत आयल छथि। अङ्ग्रेजी शिक्षाक प्रसार एवं यातायातक सुविधाक कारणेँ एहि संख्यामे दिनानुदिन वृद्धिएँ होइत गेलैक, आ मिथिलामे भाषा-साहित्यक प्रति उदासीनता देखि प्रवासमे रहनिहार पण्डित लोकनिक सदुद्योगसँ मैथिलीमे सेहो पत्रकारिताक युग आरम्भ भेल तथा अनेक प्रकारक सङ्गठन होमै लागल जाहिमे सूचनार्थ किछु संस्थाक नामोल्लेख करैत छी।

१ मैथिल शिक्षित समाज (कलकत्ता), २ मैथिल सम्मेलन तथा ३ सुबोधिनी सभा (पटना), ४ मैथिल युवक संघ (अड़ाइडंगा ओ पूर्णियाँ), ५ बंगीय मैथिल ब्राह्मण सभा (मालदह), ६ संयुक्त प्रान्तीय मैथिल महासभा (आगरा, अजमेर, अलवर, जबलपुर, हाथरस, इटावा झाँसी, जैत-मथुरा) आदि। एहि संस्था सभक द्वारा भाषा, संस्कृति, समाज एवं साहित्य सब क्षेत्रमे उन्नतिक मार्ग प्रशस्त करबाक चेष्टा होइत रहल।[1]

मिथिलामे एहि समयमे धार्मिक आन्दोलन नहि भेल[2] से नहि कहल जा सकैछ। गोवध निरोधार्थ महाराज लक्ष्मीश्वरसिंह सेहो गोरक्षिणी सभाक

---

१ देखू—'मैथिली साहित्यक इतिहास' पृ० २५४—प्रो० श्रीकृष्णकान्त मिश्र
२ 'आलोच्य अवधिमे कोनो उल्लेखनीय धार्मिक आन्दोलन मिथिलाक भूमिमे नहिभेल' 'मैथिली साहित्यक इति१'६०प्रपृदसो ०श्रीबालगोविन्दझा'व्याथित'

संगठन अनेक प्रान्तमे करबौने छलाह तथा रखबारीमे पाँच सै बीघा गोचर भूमि तथा पाँच सै टाका वार्षिक सहायता[1] दैत छलथिन। दरभंगा गोशाला सोसाइटी आइ एकासी-बिरासी वर्षसँ सेवा कै रहल अछि। हिन्दुत्वक, सनातनधर्मक[2] एवं संस्कृत विद्याक रक्षार्थ महाराजाधिराज रमेश्वरसिंह जे कार्य कैलनि से ऊपर कहले गेल अछि। तथापि होइत-होइत आर्यसमाजी आन्दोलनक प्रभाव थोड़ बहुते पड़बे कैल। छोटका लोक सब ब्राह्मणक प्रति अविश्वास करै लागल। मासी श्राद्ध कैनिहार तेरहा आरम्भ कैलक,[3] सब वर्गमे सामाजिक व्यवस्था ढील[4] ढाल भै गेल छलैक, स्वभाषा स्वसंस्कृति सभक प्रति अनास्था बढ़ल जा रहल छलैक, जाहिसँ धार्मिक जगतमे भीतर भीतर भयङ्कर ह्रासक भय बढ़ल जा रहल छलैक। एमहर अङरेजी शिक्षाक कारणेँ वेशभूषा पर्यन्त बदलल जाइत छल आ संगहि संस्कृत अर्थकरी विद्या नहि रहि गेल छलैक तेँ पैघ-पैघ विद्वान् लोकनि सेहो अपना धीया-पूताकेँ अङरेजिए शिक्षा दिस प्रवृत्त कै रहल छलाह। ई छलैक सामाजिक धार्मिक ओ शैक्षणिक स्थिति।

पत्र युगक आरम्भ

एहि धरातलपर मैथिलीक न्यों पड़ि रहल छल जाहिमे संस्कृतमे लिखित उपदेशात्मक कथा, नीति, सुभाषित आदिक अनुवाद गद्य पद्य सब क्षेत्रमे चलि रहल छल।

---

१ देखू 'मिथिला भाषा मय इतिहास' पृ० ४३१ म०म० बख्शी मुकुन्दझा

२ जखन सनातन वैदिक धर्म पर भिन्न-भिन्न प्रकारक आक्रमण भय रहल अछि तखन की विदेहक मिथिला वैदिक धर्म रक्षणार्थ उद्यत नहि होयत ?... हमरा दृढ़ विश्वास अछि जे सनातन वैदिकधर्मक उपासक हमर मैथिल समाज एहि धर्मकेँ भिन्न-भिन्न प्रकारक आक्रमणसँ रक्षा करताह।'

—प० श्री देवनारायण झा, मिथिला—पृ० ६१

३ देखू—कुमार श्री गङ्गानन्द सिंह लिखित 'विहाड़ि' कथा।

४ 'समाजमे कम व्यक्ति एहन जे भय रहित भै स्पष्ट रूपसँ सामाजिक नियमक विरुद्धाचरण नहि करैत होथि। सम्प्रति समाजमे अनेक प्रकारक कुत्सित संस्कार आबि उपस्थित भै गेल अछि जाहिसँ उन्नति हैब असम्भव प्रतीत होइछ।' —प० परमेश्वर मिश्र, मिथिला पृ० ४३३

काशी मैथिल-पण्डित लोकनिक गढ़ छलनि। हिन्दीक उद्धारक युग, प्रवर्त्तक साहित्यकार बाबू हरिश्चन्द्र द्वारा हिन्दीक आन्दोलन बल पकड़ि नेने छल। काशीमे ओना तँ सम्पूर्ण भारतक लोकक संगम होइते रहैत अछि। एही सब कारणेँ मैथिलीक उद्धारार्थ ओहू ठामक विद्वन्मण्डली साकांच भेलाह आ मिथिलामोदक जन्म भेलैक। एमहर दरभंगा ओमहर काशी दूनू ठाम अनेक संस्था संगठित भेल जे शोध, प्रकाशन आदि कार्यके मुख्य रूपेँ अपनौलक ताहिमे प्रमुख छल—मैथिल क्लब, मिथिला रिसर्च सोसाइटी मिथिला पब्लिशिंग कम्पनी, मैथिली साहित्य सभा, मैथिल विद्वज्जन समिति आदि।

जखन वर्णाश्रम धर्मपर संकट[1], संस्कृत शास्त्रक उपेक्षा भै रहल छलैक, ई स्वतः सिद्ध अछि जे शिक्षाक आलोकसँ आलोकित संस्कृतज्ञक बाहुल्य रहलाक कारणेँ एही दूनूक रक्षा विशेष महत्त्वक काज बूझै जाय लागल छल। अतः ओकरा अप्रगतिक सूचक बूझब अथवा बोझिल कहब विवेक शून्यताक परिचय देब थिक। ओहि कालमे तँ एक दिश ग्रन्थमालाक रूपमे धर्मशास्त्रक प्रकाशन[2] एवं धर्मक रक्षार्थ वर्णाश्रम धर्म सेवक समितिक[3] स्थापना एहने-एहने काज सामाजिक उत्थानक हेतु आवश्यक छल संगहि देश, जाति, धर्म आदिक गौरव वर्णन द्वारा जनसाधारणमे स्वाभिमानक भावना जगैबाक काज प्रमुख बूझल जाइत छल। तेँ प्राचीन विद्वान लोकनिक परिचय,[4] मिथिलाक इतिहास,[5] स्त्री शिक्षाक[6] उत्थान आदि साहित्यक अंग भै गेल। किन्तु एहिसँ ई नहि बूझक थीक जे एतावन्मात्र विषय छल अपितु

१—देखू 'मैथिली' पृ० १६ श्रीगोबिन्दमिश्र काव्यतीर्थक निबन्ध,

२—देखू 'मैथिली' पृ० २५

३—देखू 'मैथिली' पृ० २५

४—देखू 'मैथिली' पृ० ३१ प० ताराचरणझाक लेख 'मैथिल विद्वान' तथा—
पृ० ५४ नन्दकिशोरलालक लेख 'शंकरमिश्र' आदि

५—देखू 'मैथिली' पृ० १०, ३४ नन्दकिशोरलालक लेख 'मिथिलाक इतिहास'

६—देखू 'मैथिली' पृ० ४० श्रीनगेन्द्रकुमरक कविता 'स्त्री कर्त्तव्य'

संवाद ओ चर्चा जे राजनीतिक क्षेत्रमे क्रान्तिकारी परिवर्त्तन आनि रहल छल ताहू दिस प्रोत्साहनक हेतु विचार व्यक्त कैल जाइत छल[1] देश दशा, मिथ्याभिमान, स्वास्थ्य रक्षा, समाचार पत्रक उपयोगिता, भाषाक स्वरूप निरूपण, समाजक स्थिति (वृद्ध विवाहक विरुद्ध समाचार प्रकाशित होइत छल)[2] वैवाहिक कुरीति, संघशक्ति, आर्थिक अवस्था, व्यवसाय, ग्राम्य संगठन, औद्योगिक ह्रास, मातृभाषा ओ मातृभूमिक महत्त्व, मैथिली लिपिक रक्षा, राजनीति ओ समाज नीति, नाट्याशास्त्र, इतिहासक महत्त्व, साम्यवाद, विकाशवाद, करविवेचना आदि-आदि विषय साहित्यक हेतु परिगृहीत भै गेल छल।

ओहि युगमे कतेको निर्भीक लेखक ओ पत्रकार भेलाह जे समाजक उन्नतिक हेतु उग्रसँ उग्र विचार व्यक्त करबामे नहि हिचकिचाइत छलाह। मैथिली, भारती, मिथिला आदि अनेक पत्र ओहो जागरणक प्रमाण थीक। अतः वर्त्तमान प्रगतिक महलक जे न्यों देल गेल अछि से अत्यन्त सुदृढ़ अछि जकर प्रसादेँ मैथिली भाषा साहित्यक उन्नति द्रुतवेगेँ भै रहल अछि।

बीसम शताब्दीक प्रथम चरण एही न्योंकेँ सुदृढ़ करबामे लागि गेल। कवीश्वर चन्दझा शोधकार्य दिस प्रवृत्त भै चुकल छलाह से डा० ग्रियर्सनक जिज्ञासासँ प्रभावित भै, तकरा आगाँ आनि कै हृदयंगम कैलनि म० म० वैयाकरण केसरी स्व० प० परमेश्वरझा, जकर फलस्वरूप मिथिला तत्त्व-विमर्शक प्रणयन कैलनि। स्व० नन्दकिशोरदास 'मैथिली' पत्रमे मिथिलाक इतिहास लिखब आरम्भ कैने छलाह, जकर बहुत अंश क्रमशः प्रकाशित भै चुकल अछि, एमहर वर्त्तमान दरभंगा नरेशक वंशक इतिहास म० म० बक्शी मुकुन्दझा लिखलनि आ पत्रकारिताक माध्यमसँ स्वदेश स्वभाषा, स्वसंस्कृतिक प्रति प्रेम ओ गौरवक उद्‌बोधन करैत नवीन प्रतिभा सबकेँ प्रोत्साहित करैत

१—देखू 'मैथिली' पृ० ५६

२—देखू 'मैथिली' पृ० ४६

रहलाह[1] म० म० प० मुरलीधरझा आ नाटकक क्षेत्रमे नवीन युगक आरम्भ कैलनि स्व० जीवनझा तथा हुनका बाँहि पुरैत रहलथीन साहित्य रत्नाकर मुंशी रघुनन्दनदास। एहि युगमे पद्यक धारा यदि अप्रतिहत गतिएँ बहिते रहल तँ संगहि गद्य साहित्यक जे विविध प्रकार जेना—इतिहास, शोधकार्य कथा, उपन्यास, नाटक, निबन्ध आदि सब क्षेत्रमे प्रगति आबि चुकल छल। एही परम्परामे म० म० डा० सर गंगानाथझाक 'वेदान्त दीपक', स्व० बाबू क्षेमधारीसिंहजीक 'सांख्य खद्योतिका' आदिकेँ राखल जा सकैत अछि। मोदक माध्यमसँ निबन्ध साहित्यकेँ परिपुष्ट करबाक प्रयास बड़े जोरशोरसँ चलि रहल छल[2] जाहिमे युगक अनुकूल एवं स्थितिक अनुकूल विचार सब व्यक्त कैल जाइत छल। भने आधुनिक इतिहासकार उपदेशात्मक एवं बोझिल[3]

१—देखू डा० श्रीजयकान्त मिश्र लिखित—'A History of Maithili Literature' ओ लिखैत छथि:—'A number of new writers were encouraged to write in it; such as, Trilocana Jha, Ramacandra Mishra, Anupa Mishra, Kusheshvara Kumara Sitarama Jha, Jyotishi Baladeva Mishra and Umesha Mishra'.

२—(क) देखू प्रो०श्रीकृष्णकान्तमिश्र लिखित 'मैथिली साहित्यक इतिहास'। ओ लिखैत छथि:—'आरम्भमे निबन्ध उपदेशात्मक ओ व्यंग्यात्मक छल, जकर स्वरूप म०म० मुरलीधर झा द्वारा सम्पादित मिथिला मोदमे प्रस्तुत कैल जाइत छल। विषय सभ छल—देशोन्नति वाद प्रतिवाद, मिथिलाक आर्त्तनाद, धर्म विचार, शिक्षा प्रणाली, स्त्री शिक्षा, सविनय निवेदन, उन्नतिकी?.........एहि सभमे सामाजिक दोषकेँ दूर करबाक प्रयत्न छल। म०म० जीक 'आत्म रक्षा' नामक निबन्ध मालामे जीवनक प्रत्येक अंग पर प्रकाश भेटैछ। स्पष्ट वादिता ओ शैलीक प्रौढ़ताक दृष्टिमे महामहोपाध्याय जी सन निबन्धकार भेटब बड़ कठिन अछि।

३—'मिथिला मोदमे सुन्दर तथा शशक्त निबन्ध सभ प्रकाशित होइत छल। परन्तु ओ निबन्ध सभ मूलतः उपदेशात्मक तथा सामाजिक समस्या पर प्रकट कैल गेल विचारसँ बोझिल छल।' —'मैथिली साहित्यक इतिहास'

—श्रीबालगोविन्दझा 'व्यथित'

विशेषणसँ विभूषित करथुन, मुदा वर्तमान गद्य साहित्यक महल ओही न्योंपर ठाढ़ अछि।

ओहि युगमे संस्कृतस भेल मैथिलीमे गद्य पद्यक अनुवाद, जे कवीश्वर चन्दाझा[1] सँ लै जनसीदनजी ओ कुशेश्वरकुमर धरि प्रचुर परिमाणमे तथा छिटफुट रूपेँ तकर बादो होइत रहल अथवा एखन धरि होइत आबि रहल अछि[2], तकरा किछु गोटे पछुआयल रहब बुझैत छथि, परन्तु एहि प्रकारक कार्यसँ मैथिली साहित्य अपन संस्कृतिकेँ पकड़ने रहल आ एकरा एक प्रकारक गुणो कहक चाही, जाहि प्रसादेँ मिथिलामे आचारक प्रति निष्ठा बनल रहि

पदयुगकमलेते आदिशक्तेः प्रणम्य प्रणमदखिलदेवे सर्व्वदे ये जनानाम्
अथ पुरुष परीक्षा शुद्ध भाषानुवादं रचयति कविचन्द्रस्तीरभुक्तेर्व्वचोभिः
१ कवीश्वर द्वारा अनूदित पुरुष परीक्षा १२९६ सालमे राजदरभंगा प्रेससँ प्रकाशित भेल, जकर भूमिका हिन्दीमे लिखल गेल अछि, जाहिसँ महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहक विद्याप्रेम एवं तत्कालीन मैथिलीक प्रगति पर प्रकाश पड़िते अछि, संगहि हिन्दीक की स्थिति मिथिलामे छलैक, ताहू पर पूर्ण प्रकाश पड़ैछ। ई भूमिका कोन विद्वान द्वारा लिखल गेल अछि, ताहि नामक उल्लेख नहि अछि। हँऽ एकर संशोधन कैने छलाह चुम्बनझा नैयायिक, जे निम्न-लिखित पदसँ स्पष्ट होइछ :—

'श्रीचन्द्र कवि मित्रेण पवित्रेण यशस्विना।
शोधितस्तर्क विज्ञेन श्री मच्चुम्बन शर्म्मणा॥'

हिन्दीक एकटा नमूना सेहो उपस्थित करबाक लोभ संवरण नहि कैल जाइछ। ते ओकरो उल्लेख कऽइए देब उचित। पुरुष परीक्षाक भूमिकामे कहल अछि:— 'वह देशमे प्राचीन पण्डित लोक संस्कृत गद्य ओ पद्य बनाते थे, भाषामे निरादर बुद्धिसेँ कोइवड़ा पुस्तक नहि बनाया ओ राजा लोक भी केवल संस्कृत विद्या विशेष जानते थे केतने भाषा उच्चारण भी नहीं करते थे' आदि।

२ प० श्री ईशनाथझाक 'शकुन्तला,' मृच्छकटिक, प० श्री जीवानन्दठाकुरक 'भास नाटकावली,' प० श्रीभवनाथझाक 'विक्रमोर्वशीय' पं० श्रीगोविन्दझाक 'मालविकाग्निमित्र' आदि।

सकल। आब ओहि आचारक प्रति ओ निष्ठा नहि रहि गेल अछि आ एही कारणें समाजक चारित्रिक पतन द्रुतगतिएँ दिनानुदिन भेल जा रहल अछि। खेदक बात ई जे आधुनिक साहित्यो ओहिमे सहयोग दै रहल अछि। कहबाक हेतु किछु अहम्मन्य लोक विद्यापतिओकें घोर शृङ्गारिक कहि नाक मुँह कोंचियाबथु, किन्तु एखन जाहि प्रकारक यौन आकर्षण ओ उद्दीपन सम्बन्धी साहित्यक निर्माण भै रहल अछि, तकर तुलनामे महाकवि जयदेवक 'विघटय जघन दुकूलम्' पर्यन्त मातु खा जाइत छथि। ई संक्रामक रोग मैथिलीओ साहित्यक क्षेत्रमे तरुण कथाकार लोकनिकें ग्रसि रहलनि अछि, जकरा साहित्य शब्दक मर्मस्पर्शी अर्थ-बोद्धा नीक कथमपि नहि कहि सकैत छथि।

साहित्य शब्द हितक भावक द्योतक थीक, एकरा द्वारा समाजक अहित कथमपि नहि हैबाक चाहिऐक। ई अवश्य जे साहित्य समाजक दर्पण थीक। ओकरे प्रतिबिम्ब साहित्यपर पड़ैत; किन्तु दर्पणमे लोक अपन मुहे देखैत अछि, आन अंगपर दृष्टि अपनहि पहुँचबामे समर्थ रहैत छैक। अपन हाथ पैरक मैलकें लोक दर्पणक सहायताएँ नहि देखैत अछि। साहित्य सत्य, शिव ओ सुन्दरक प्रतिष्ठापक थीक। आहार-निद्रा-भय-मैथुन आदि नैसर्गिक प्रवृत्तिमे मनुष्य पशुसँ कनेको भिन्न नहि अछि। ओकर विशेषता ओकर धर्म थिकैक[१]। तें नैसर्गिक प्रवृत्तिकें उद्बुद्ध करबाक हेतु साहित्यक सृष्टि ईप्सित नहि छैक। साहित्य तँ मनुष्यक स्वभावगत दुर्बलताक निवारण आ सत्प्रवृत्तिक उद्बोधन द्वारा जे सुपरिणाम उपलब्ध होइत छैक, तकर चित्र लोकोंमे उपस्थित कैनिहार थीक।

निरुद्देश्य अथवा दुरुद्देश्यसँ सृष्ट साहित्य अपन नामक प्रतिकूल प्रभाव समाजक अन्तस्तलमे विकीर्ण करत। आइ 'रोजी रोटी' पर्यन्त साहित्यक विषय बूझल जाइत अछि।

काव्य, नाटक आदि साहित्यक प्रमुख अङ्ग मानल जाइत अछि।

---

१ 'आहार निद्राभय मैथुनञ्च सामान्यमेतत्पशुभिर्नराणाम्
धर्मो हि तेषामधिको विशेषो धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः।'

काव्य[1] एवं नाटकक[2] उद्देश्य निरूपण करैत आचार्य लोकनि अर्थ-धर्म काम-यश-आयु-हित-बुद्धि-वर्द्धन-लोकोपदेश आदिक उल्लेख करैत छथि। ई भारतीय दृष्टिकोण थिकैक। एहन शोधल दृष्टिकोण अन्य देशीय साहित्यमे नहि, तेँ यदि मैथिली साहित्य एहि वादक विवादमे अपवादे बनल रहल तँ एकरा एक दृष्टिएँ नीके[4] मानक चाही। एहिसँ मौलिकताक रचे होइत छैक।

यद्यपि एहि मध्य हिन्दी साहित्यमे अनेक वादक जन्म भेल। अङ्गरेजी शिक्षामे हिन्दीक प्रमुखता रहबाक कारणेँ अङ्गरेजी-शिक्षा प्राप्त व्यक्ति मैथिलीओमे वादक परिकल्पना करै लगलाह आ ओही बटिखरासँ एकरो नाप तौल आरम्भ भै गेल। एतबा अवश्य जे से सब होइतो मैथिली-साहित्य अपन माटि पानिक गुणकेँ छोड़लक नहि, ओ एखनहुँ बेसी रस एहीठामक माटि पानिसँ ग्रहण करैत अछि जकरा परम्परावादक नामेँ अभिहित कै पश्चिम देशक चश्मा लगौनिहार एकरा पछुआयल बुझैत छथि, किन्तु वस्तुस्थिति से अछि नहि। नवीन प्रयोग जतेक भै रहल अछि ताहिसँ बुद्धिक विलासी लोक भने अपनाकेँ कृतार्थ बूझैत होथि, किन्तु जनसाधारण पर ओहि प्रकारक साहित्यक प्रभावकेँ नगण्य बूझक चाही। भविष्योमे विश्वविद्यालीय शिक्षाक सीमामे किछु दिन आबद्ध रहि सकै से भिन्न बात, किन्तु जनकण्ठमे स्थान ग्रहण करबाक मनोरथ एहि प्रकारक साहित्यक मोनेमे रहि जेतैक, ई निश्चित। 'देसिल वयना सब जन मिट्ठा' जे मैथिल कोकिल कहने छथि से 'सब जन मिट्ठा' क सौभाग्य एहि साहित्यकेँ नहि।

---

१ 'धर्माथकाम मोक्षेषु' वैचक्षण्यं कलासु च
करोति कीर्त्तिं प्रीतिञ्च साधु काव्य निषेवणम्'—'भामह'
चतुर्वर्गफल-प्राप्ति सुखादल्प धियामपि–'विश्वनाथ'

२ धर्म्मं यशस्यमायुष्यं हितम्बुद्धि विवर्द्धनम्
लोकोपदेश जननं नाट्यमेतद् भविष्यति'–भरत मुनि

३ आधुनिक मैथिली साहित्यकेँ पाश्चात्य प्रभावक एक सूत्र नहि बूझक थीक, अपितु मिथिलाक नवजागरणसँ प्लावित ओ वातावरणक अनुकूल बूझक चाही (मैथिली साहित्यक प्रति विचार) श्री प्रियरंजन सेन

आर्थिक पृष्ठभूमि

बीसम शताब्दीक पूर्वार्द्धमे मात्र पचीस वर्षक अभ्यन्तर दूटू गोट विश्वयुद्धक संग प्राकृतिक विपर्यय सेहो अद्भुत भेल। ओना तँ भारतेक इतिहासमे, मुदा खास कै मिथिलाक इतिहासमे १९३४ क भूकम्प अविस्मरणीय रहत। एहिठामक जन-जीवनपर जहिना विश्वयुद्धक प्रभाव पड़ल, तहिना १९३४ क भूकम्पोक। अन्तर एतबे जे युद्धक प्रभाव अप्रत्यक्ष रूपें बढ़ैत-बढ़ैत तखन परिलक्षित भेल आ भूकम्पक प्रभाव प्रत्यक्ष रूपें पड़ल। तेसर प्रभाव स्वातन्त्र्य आन्दोलनक आ चारिम प्रभाव डाक तार एवं यातायातक पर्याप्त सुविधा[1] भेटलासँ गरीब बोनिहारक प्रवास गमनक प्रचुरताक पड़लैक। आर्थिक क्षेत्रमे एक क्रान्ति भेलैक।

प्रथम विश्वयुद्धक काल धरि राष्ट्रिय चेतना जनसाधारण पर्यन्त नहि पहुँचल छल, किन्तु तकर बादे महात्मा गांधीक भारतीय राजनीतिक रंगमंच पर उदय भेलनि। हुनक जादूक असरि छल, जाहिसँ राष्ट्रिय चेतनाक हिलकोर सुदूर देहात धरि पहुँचि गेल।

१९३४ क भूकम्प भौगोलिक स्थितिमे अनेक प्रकारक परिवर्त्तन आनि देलक। जे चऽर छलैक से भीठ बनि गेलैक, कतेक नदी मड़ने भेल, कतेक इनार पोखरि भथन भेल। एतेक धरि जे पृथ्वीक उर्वरतामे क्रमिक ह्रास आरम्भ भै गेलैक। आम, जामु, लताम, कटहर प्रभृति जे सामयिक फल छल, जे सर्वजन सुलभ छल, से कम फड़ी देबै लागल अछि। एमहर कमला अपन पेट बदलैत रहली, ओमहर कोशी पच्छिम मुँह दौड़लीह, मलेरिया आदि प्रान्तव्यापी संक्रामक रोगक प्रसार होइत गेलैक। एक दिस मिथिलाक ग्राम्यजीवन एहि सबसँ अस्तव्यस्त होमै लागल, दोसर दिस विलासिताक सामग्री विदेशसँ प्रचुर मात्रामे पहुँचै लागल। तेँ नागरिक जीवन सेहन्ताक विषय बनि गेल। आर्थिक क्षेत्रमे एहि सबसँ अद्भुत क्रान्ति भेलैक।[2] अङ्गरेजी शासनक प्रभावें

---

१ ओहिसँ पूर्व घोड़ा, हाथी, खड़खड़िया आदि सवारी छल जे पैघे लोकक हेतु साध्य छल। साधारण स्थितिक लोक सवारीपर चलबाक कल्पनो नहि करैत छल।

१ एहि प्रसङ्ग मैथिली साहित्यक इतिहासमे श्रीबालगोविन्दझा 'व्यथित'क विचार द्रष्टव्य थीक।

संसारक संग सम्पर्क बढ़ैत गेलैक आ दैनिक जीवनमे आबैवला नितान्त आवश्यक वस्तु पर्यन्तक हेतु क्रमहि लोक नगरक मुखापेची होइत गेल। बहुतो वस्तु विदेशसँ आबै लागल छल। एहि सब कारणेँ गृह उद्योगपर अतिशय अधलाह प्रभाव पड़लैक। गृह उद्योग नष्ट-भ्रष्ट होमै लागल[1]। गाममे बसनिहार तेली, चमार, कोइर, लोहार, जोलहा, कमार, धोबि, नौआ सभक वंश परम्परागत जीविकापर बड़ पैघ धक्का लगलैक। परिणाम स्वरूप ईहो वर्ग भूमिपर अवलम्बित होमै लागल। पर्याप्त भूमि उपलब्ध नहि रहलाक कारणेँ ग्राम्य जीवन व्यतीत करब दुरूह होइत गेलैक। लोक शहरक आश्रय लेबै लागल। कलकत्ता, कानपुर, जलपाइगुड़ी, मोरङ, रंगपुर, दिनाजपुर, लालमुनी, पुड़ैनिया दिस एहिठामक लोकक धरोहि लागि गेल। एहि सबसँ अनेक वेष, अनेक भूषा, अनेक भाषा, अनेक बोलीक सम्पर्क बढ़ै लागल। एही माध्यमसँ राष्ट्रप्रेम, स्वदेश प्रेम आदि भावना जोर पकड़लक। स्वदेशी प्रचारक आन्दोलनक सूत्रपात सेहो एही अवधिमे भेल। विदेशी वस्तुक वहिष्कारक आन्दोलन एहि संगहि भेल, किन्तु मिथिला क्षेत्रपर एकर बेसी प्रभाव नहि पड़ल। चर्खा आन्दोलन अवश्य जोर पकड़लक[2]।

---

१ देखू—श्रीविद्यापतिसिंह लिखित 'उद्योग ओ व्यापार' पृ० २६।

२— देखि जेठ प्रचण्ड ज्वाला परम क्लेशक आगरी
त्यागि मेला तीर्थ घूमब घरहि बैसू नागरी
बैसि न व्यर्थ बिताबिय। चरखा चारु चलाबिय
देखि देश-दरिद्रता नभ घुमरि घुमि घन मालिका।
कानि अश्रु अषाढ़ ढारथि बसन बिनु लखि बालिका
सूत सुभग तनु काढ़िय। बिरचि वसन तन धारिय।
मास सावन करथु हर हर विकल बेङ्ग विदेशिया।
अहाँ मन दय पीर बाँटू सूत काढू देशिया।
देशक सब धन बाँचत। अरि उर थरथर काँपत।
दूरि चिन्ता करू भादव बैसि भवन विभावरी।
बारि बाती धरू चरखा करू बरखा आखरी।
'मधुप' विपत सब बीतत। देश कठिन रन जीतत।

(चरखा चौमासा) मिथिला—४५२ प० छेदीझा 'मधुप'

चर्खा पहिनो मिथिलामे चलिते छल, किन्तु ई जीविका नहि छल। चर्खा आन्दोलन अनाथ विधवा सबकेँ जीविकाक समाधानमे आंशिक सहायता अवश्य पहुँचौलक। बादेमे तँ अखिल भारतीय चर्खा प्रतियोगितामे मिथिला अनेक बेरि प्रथम, द्वितीय दुनू स्थान प्राप्त करैत रहल[1]।

एही आर्थिक पृष्ठभूमिसँ रस ग्रहण कै आधुनिक मैथिली साहित्य नवीन स्वरमे बाजै लागल। स्वदेश ओ स्वभाषाक प्रति प्रेम उत्पन्न करबाक हेतु ओहि समयक साहित्यकार संलग्न भै गेलाह। एक दिस सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक ओ धार्मिक क्षेत्रमे परिवर्त्तन भै रहल छल आ दोसर दिस साधक लोकनि अपन भाषा साहित्यक अभ्युत्थानक हेतु धैर्य पूवक साधना-निरत छलाह[2]।

मैथिली साहित्यमे नवीन युगक सूत्रपात होइत अछि पत्रकारितासँ, जकर भूमिकामे कवीश्वर चन्दाझा, डा० जौर्ज ग्रिअर्सन आदि अद्भुत प्रतिभाशाली विद्वान देखि पड़ैत छथि। मैथिलीमे शोध कार्य आरम्भ भेल, से मिथिलामे मैथिल द्वारा नहि, अपितु प्रथम अङ्गरेज ओ बंगाली

---

१ श्रीमती फूलदेवी नवादा दू बेरि पुरस्कार पौने छथि।
हरिपुरा कांग्रेसमे जयगोविन्दमिश्रक माताकेँ १२५ नं० सूतपर प्रथम पुरस्कार १९३७ ई०।

२ 'मिथिला वन्दना', मिथिलाक लक्षण वैचित्र्य', मिथिलाक पूर्व गौरव ओ वर्त्तमान दुरवस्था', 'देशोद्धारक हेतु भगवानसँ प्रार्थना', 'मिथिलावासीसँ उपालम्भ', 'धिक्कार', 'मिथिलाक क्रन्दन', 'उद्बोधन', 'चेतावनी', 'उपदेश', 'उपालम्भ', 'धन्यवाद', 'अनुताप', 'सान्त्वना' एहि शीर्षक सभसँ वर्त्तमान शताब्दीक आरम्भिक कविगणक हृदय ओ भावनाक अनुमान कयल जा सकैछ। 'मैथिली साहित्यक इतिहास' पृ० २९९, प्रो०श्रीकृष्णकान्तमिश्र।

विद्वान द्वारा। एहिठाम मात्र सूचनार्थ शोधकार्यकर्त्ताक नामावलीक उल्लेख कै देब उपयोगी बूझि रहल छी। जखन शोधकार्यक श्रीगणेश भेल तखने पत्रक प्रकाशनक आवश्यकता अनुभव कैल गेल। मैथिलीक प्रगतिमे एहि शोधकार्य सभक बड़ बेसी महत्त्व छैक। शोधकार्यकेँ अग्रसारित करबाक श्रेय जनिका लोकनिकेँ छनि से सब विद्वान थिकाह—म० म० हरप्रसाद शास्त्री,[१] पी. सी. बागची, बाबू राम सक्सेना,[२] डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या,[३] डा० शहीदुल्ला, डा० श्री सुधाकर झा, डा० श्री जयकान्त मिश्र,[४] महापण्डित राहुल सांकृत्यायन,[५] श्रीसुकुमारसेन, डा० शिवप्रसादसिंह,[६] डा० श्री सुभद्र झा,[७] श्यामनारायण सिंह,[८] प्रो० श्रीपूर्णानन्द दास,[९] डा०

१—वर्णरत्नाकरक Introduction मे डा० श्री सुनीतिकुमार चटर्जी लिखैत छथिः—

Pandit Haraprasāda's note roughly indicates the subject matter of the work

२—कीर्ति लता,

३—वर्ण रत्नाकर,

४ A History of Maithili literaturer तथा Folk literature of Maithili

५—दोहा कोष

६—कुमार श्रीगंगानन्दसिंह 'मैथिली साहित्यक प्रगति'मे सूचना दैत छथि—'पटना विश्व विद्यालय तँ मैथिली बिषयक निबन्धक हेतु डो० लिट्क उपाधि प्रदान कैलक। प्रयागोक विश्व विद्यालयमे 'डाक्टर'क उपाधिक हेतु मैथिलो विषयक निबन्ध परीक्षार्थ स्वीकृत कैल गेल छैक।'

७ Formation of Maithili language of Vidyapati

८—A History of Tirhut,

९—मैथिली लोक गीत

श्रीललितेश्वर झा, डा० श्री उपेन्द्र ठाकुर[1], श्रीरमानाथ झा[2], प०· श्री जीवानन्द ठाकुर,[3] प्रो० श्रीकृष्णकान्तमिश्र,[4] प्रो०श्रीराधाकृष्ण चौधरी, प्रो० श्रीशैलेन्द्रमोहन झा,[6] श्री रमानाथ,[7] आदि। किछ संस्था सेहो एहिमे अपूर्व सहयोग देलक-जेना राज लाइब्रेरी दरभंगा, बंगाल एशियाटिक सोसाइटी कलकत्ता,[8] उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी, बिहार राष्ट्र भाषा परिषद्[9] पटना, आसाममे विरंचिकुमार बरुआ, एमहर विद्यापति पर बाबू श्री नगेन्द्रनाथ गुप्त,[10] श्रीखगेन्द्रनाथ मित्र, श्रीविमानविहारी मजुमदार[11] स्व० प० शिवनन्दन ठाकुर,[12] श्रीनरेन्द्रनाथ दास 'विद्यालंकार'[13] आदि विलक्षण कार्य करैत गेलाह। एहि परम्परामे प० खुद्दीझा ओ प० बबुआजी मिश्र[14]क नाम बिसरल नहि जा सकैछ, जनिक अथक प्रयासेँ वर्णरत्नाकरक प्रकाशन भेल तथा राज पण्डित श्री बलदेवमिश्र रागतरंगिणी, चन्दा झाक रामायण तथा चन्द्रपद्यावलीक सम्पादनकै बहुत पैघ योगदान कैलनि।

आधुनिक प्रगतिक मूलमे शोधकार्य, पत्रकारिता, पाठ्य विषयमे मैथिलीक स्वीकृति, शिक्षित समुदाय द्वारा नाटकक अभिनय, विद्यापति

१—A History of Mithila

२—अलयी कुल प्रकाश

३—अरिपन प्रकाश

४—मैथिली साहित्यक इतिहास।

६—आधुनिक मैथिली साहित्य

७—मैथिली साहित्यके श्रीमधुपजीक अवदान

८—वर्णरत्नाकर

९—बिहार का साहित्यिक इतिहास,

१०—वर्णरत्नाकरक Introduction में डा० श्री सुनीतिकुमार चटर्जी लिखैत छथि :—According to a tradition current in Mithila, which has been given by Mr. Nagendranāth-gupta in the Introduction to his edition of the poems of Vidyāpati...

११—विद्यापति पदावली

१२—महाकवि विद्यापति

१३—विद्यापति काव्यालोक

१४—वर्ण रत्नाकर

स्मृति पर्व एवं कवि सम्मेलनक बहुत पैघ हाथ अछि। एहि ठाम एही विषय पर प्रकाश दै आन्दोलनक इतिहासकेँ समाप्त करब। शोधकार्यक प्रसङ्ग विशेष विवेचन करबाक अवकाश एहि ठाम नहि तेँ पत्र कारिताक विकासक क्रम देखू।

डा० श्री जयकान्त मिश्र अपना इतिहासमे गद्यक विकाश पर प्रकाश दैत लिखैत छथि—'The chief instruments which helped its growth were the rise of Journalism...the history of modern Maithili literature is closely allied to the history of Maithili Journalism.

प्रो० श्रीकृष्णकान्त मिश्र अपन मैथिली साहित्यक इतिहासमे लिखैत छथि:—'मैथिली पत्र कलाक विशेष अध्ययन कएलासँ वर्तमान मैथिली-साहित्यक निर्माणक आधार ओ तथ्य प्राप्त होइछ। ज्ञानक प्रसार, जन साधारणक हेतु मनोरंजन, पाठकक संख्यामे वृद्धि एवं नवीन कलाकारक उदयमे मैथिली पत्र पत्रिका पर्याप्त सहायता प्रदान कएलक।'

प्रो० श्री बालगोबिन्द झा 'व्यथित' अपन इतिहासमे लिखैत छथिः— 'प्रकाशनक सुविधा, तथा पत्रकारिताक उन्नयन, भाषाक एक रूप निर्धारण करबाक प्रयत्न तथा शब्द कोषक वृद्धिसँ आधुनिक गद्यक निर्माणमे अप्रत्याशित सहायता भेटलैक अछि।' एहि सभक सारांश ई जे मैथिलीक आन्दोलनक क्रममे ई अनुभव कैल गेल जे गद्य साहित्यक भण्डारकेँ पुष्ट कैल जाय। एकर पुष्टिमे मैथिली साहित्य परिषद् द्वारा प्रकाशित मैथिली गद्य कुसुमाञ्जलिक भूमिकामे उल्लिखित श्रीभोलालाल दासक निम्नलिखित बिचार उपस्थित कैल जा सकैछ— 'मैथिलीमे पद्यक जतेक प्रचुरता अछि, ततबा गद्यक नहि ओ कलकत्ता वा काशी जाहि ठाम मैथिली एक स्वीकृत भाषा अछि (विश्वविद्यालयक पाठ्य विषयमे) ततय गद्य ग्रन्थक अभावमे अनेक वर्षसँ पाठ्य पुस्तकक कोनो उपयोगी परिवर्तन नहि भए सकैछ, तेँ ई छोट संग्रह उपस्थित कएल गेल।'

साधारणतः ई देखल जाइछ जे प्रकाशनक सुविधा नहि भेटला पर गद्य लिखबाक प्रवृत्ति, लिखबाक हेतु बाध्य नहि करैत छैक। पद्यमे ने अधिक

काल अपेक्षित होइत छैक ने विशेष अध्ययन ओ श्रम। कोनो भावना मर्मकेँ स्पर्श करैत छैक, पद्य लिखबाक उपयुक्त वातावरण मानस जगत्‌मे स्वयं बनि जाइत छैक, किन्तु गद्यमे कथाकेँ छाड़ि आन कोनो प्रकार गद्य लेखन अध्ययन, समय ओ श्रमक विशेष अपेक्षा रखैत अछि। पत्र-पत्रिकाकेँ विविध विचारसँ विभूषित करबाक उद्देश्यसँ सम्पादक लोकनि गद्य लिखबाक हेतु बाध्य करैत छथिन अथवा स्वयं कोनो विचार प्रकट करबाक उत्सुकता होइत छैक तँ प्रकाशनक सुविधा देखि लेखक स्वयं प्रवृत्त होइत छथि। तेँ गद्य साहित्यक विकासमे पत्रक प्रयोजनीयता बहुत बढ़ि जाइत छैक।

एहि दिशामे सर्व प्रथम प्रयास १९०५ ई० मे भेल जकर श्रेय प्रवासमे निवास कैनिहार विद्यावाचस्पति स्व० मधुसूदन झा (जयपुर) तथा रामभद्र ओझा (मुख्य न्यायाधीश, अलवर स्टेट)केँ छनि। एहि पत्र द्वारा मैथिली साहित्यकेँ आधुनिकतम बनैबाक प्रयासक क्रममे दर्शन, गणित, स्वास्थ्य, भूगोल, व्याकरण आदि सम्बन्धी साहित्यक निर्माणक संग सामाजिक दोष गुणक विवेचन सेहो होइत छल। एहि पत्रक फाइल देखबाक सौभाग्य हमरा नहि प्राप्त अछि (यद्यपि अजमेर मैथिल महासभाक अधिवेशनसँ घुरैत काल (१९५९) जयपुर पहुँचैत प्रथम काज हम यैह कैल जे विद्यावाचस्पतिक पुत्र प० श्री प्रद्युम्न झाक डेरा ताकि, हुनकासँ हितसाधनक किछुओ बचल खुचल अंक देखै देबाक उत्कण्ठा जनौलिअनि, मुदा दुर्भाग्य सँ एको अंक उपलब्ध नहि भेल। डा० श्री जयकान्त मिश्रक इतिहासमे उद्धृत कैल निम्न लिखित गद्यांशसँ एहि पत्रक नीति पर पूर्ण प्रकाश पड़ैत अछि—'जनिका सबहिकेँ हाहा-हीही, लल्ला-चप्पो, गीत-कवित्तक अतिरिक्त गम्भीर लेख सबहिक रसास्वादक योग्यता नहि छैन्ह, तादृश व्यक्तिक ग्राहक नहि रहलासँ हित-साधनक कोनो त्रुटि नहि।'[१] १९०६ मे काशीसँ मिथिला मोदक[२] प्रकाशन आरम्भ भेल। ओकर प्रकाशनमे कतेको व्यक्तिक सहयोग

१—मैथिल हितसाधन अंक २ पृष्ठ ३ नूतनवत्सरारम्भ।

२—मैथिली साहित्यक प्रगतिमे कुमार श्री गंगानन्द सिंहजी लिखैत छथि:—'म० म० मुरलीधरझाक समयमे ओतय (काशीमे) मैथिलीक एक

छलनि। स्व० अच्युतानन्ददत्त, म० म० मुरलीधरझाक जीवन वृत्तमे लिखैत छथि—'महामहोपाध्याय जी अपन परममित्र महिनाथ पुरक (निवासी) ख्यातनामा ज्योतिषी, संस्कृत कालेजक द्वितीयाध्यापक प० दीनानाथ मिश्रक आग्रह, काशीस्थ मैथिल विद्वानक सम्मति एवं अपन सुयोग्य शिष्य प० कुशेश्वरकुमर (भू० पू० सम्पादक 'मिथिला')क सोत्साह आयोजनसँ 'मैथिल विद्वज्जन समिति'क स्थापनाकै 'मिथिला मोद' नामक मासिक पत्रक संचालन आरम्भ कैलन्हि[1]।' एहि पत्र द्वारा भाषाक एक स्वरूप निर्द्धारण भेल। ई हिन्दीक प्रबल आक्रमणक प्रतिरोध[2]क संग भाषाकेँ संस्कृत बहुलताक प्रवृत्तिक दिससँ मोड़ि, जन जीवनमे व्यवहृत भाषाक दिस उन्मुख कैलक। मैथिलीक मासिक पत्रमे ई सबसँ दीर्घजीवी भेल। निर्भीकता एहि पत्रक प्रथम गुण छलैक, एकर मुख्य कारण ई छल जे महामहोपाध्याय जी (सम्पादक) स्वयं विचार स्वातन्त्र्यक पक्षपाती छलाह।[3]

१९२७ ई० धरि प्रकाशित एहि पत्रक कोनो प्रति देखबाक सौभाग्य सेहो हमरा नहि प्राप्त अछि। हँ १९३६ सँ ४१ धरि जे प्रकाशित होइत रहल, ताहिमे सँ छिटफुट कतिपय अंक देखबाक अवसर भेल अछि अवश्य, किन्तु अपन किछु विचार एहि प्रसंग देबाक साहसकेँ दम्भ मानैत हम 'भारती'क सम्पादकक मतक उल्लेख कै देब उचित बुझैत छी। जखन

प्रधान केन्द्र बनि गेल। १९०६ मे ओ 'मिथिला मोद' नामक एक मासिक पत्र चलौलैन्ह। निर्भीकता, व्यंग्य, मैथिलत्वक समर्थन, मैथिली भाषाक ओजस्विता ओहि पत्रक प्रधान गुण छलैक।'

१—गद्य कुसुमाञ्जलिमे संकलित अच्युतानन्द दत्तजीक लिखल म० म० मुरलीधरझाक जीवनी पृ० ९७

२—मन्दार मैथिल महासभामे म० म० जी मैथिल महासभाक कोनो कार्यवाही हिन्दीमे नहि हो तदर्थ एक प्रस्ताव पास करौने छलाह। देखू दत्तजी लिखित जीवनी पृ० ९९

३—हिनक सामयिकता, विचार स्वातन्त्र्य तथा हास्यप्रियताक निदर्शन तँ प्रसिद्धे अछि। पृ० १०० (गद्य कुसुमाञ्जलि)

उपेन्द्रनाथझा एम्० ए० एल्०-एल्० बी० एकर पुनः प्रकाशन आरम्भ कैलनि तँ अपन विचार व्यक्त करैत बाबू श्रीभोलालदास लिखैत छथि :—

'जे मोद मैथिली साहित्यक आलोक निविड़ अन्धकारहुमे अक्षुण्ण रखलक जे मैथिलीक सेवहिमे स्वधर्मे निधनं श्रेयः मानैत आयल तकर पुनः प्रकाशन पर ककरा हर्ष नहि होएतैक। एतदर्थ श्रीयुत प० उपेन्द्रनाथझाजी एम्० ए० एल्०-एल्० बी० महोदयकेँ जतेक धन्यवाद देल जाय से थोड़ थीक।......मैथिली साहित्यमे मोदक एक निर्दिष्ट स्थान छैक, निश्चित व्यक्तित्व छैक तकर रक्षहिमे मोदक विशेष उपयोगिता, विश्वास अछि समयानुकूल परिवर्त्तन करितहुँ ओ ताहि आत्मीयताक रक्षा करत।''[1]

मैथिलीक आन्दोलनमे मिथिलामिहिरक विशिष्ट स्थान छैक जे मोदक प्रकाशनक दुइ वर्ष बाद मिथिलेशक संरक्षकतामे दरभङ्गासँ प्रकाशित होमै लागल तथा १९५५ धरि प्रकाशित होइत रहल। आरम्भमे 'मैथिलीक आन्दोलन' एकर नीति नहि छलैक, कोनो भाषाक सीमामे ई अपनाकेँ आबद्ध नहि करै चाहलक। स्मरण राखक थीक जे स्व० महाराजाधिराज रमेश्वरसिंह एकर संरक्षक छलथिन आ ओ स्वयं धर्मक पक्षपाती, हिन्दुत्वक समर्थक, देवता ओ देववाणीक हृदयसँ भक्त, जकर प्रमाण स्वरूप हुनक प्रतिष्ठापित देवमन्दिर, संस्कृत विद्यालय आदिक चर्चा पहिनहु कैने छी, अपनहुँ कर्मकाण्डमे निष्णात, माला-सिद्ध पुरुष छलाह। अतः मैथिलीक प्रति भक्ति-भाव सेहो छलनि, हुनक लिखल कतेक पद भक्ति भावनामे गायककेँ विभोर कै दैत छनि, किन्तु से सब होइतो मैथिलीक भविष्य निर्माण एतेक आवश्यक हेतैक, जतेक आइ प्रतीत भै रहल अछि, ओहि दिनमे नहि छलनि। फलस्वरूप मिहिरसँ जतेक भै सकैत छलैक आदिमे, नहि भै सकलैक।

४—मोदक सम्बन्धमे डा० श्रीजयकान्तमिश्र लिखै छथि :

The Moda was one of the greatest Champions of Maithili and succeeded some extent in creating a reading public.

हमरा जनैत पत्र पर ओहि पत्रक सम्पादकक व्यक्तित्व अपन छाप अवश्य मारैत छैक। व्यक्ति विशेष द्वारा, जे स्वयं संचालक ओ सम्पादक छलाह, पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित हुनका लोकनिक अपन-अपन व्यक्तित्व निखरि सकलनि, से प्रायः मिहिरक सम्पादक लोकनिके नहि कैल भेलनि, ओ नीति निर्द्धारक नहि, नीतिक अनुगमन कैनिहारि छलाह। किन्तु जखन मैथिलीक आन्दोलन जोर पकलड़क, वर्त्तमान युग मातृभाषाक महत्त्वसँ परिचित भेल, तखन प० श्रीसुरेन्द्रझा 'सुमन' सन सुयोग्य व्यक्ति मिहिरकेँ सम्पादक भेटलथिन्ह आ वर्त्तमान स्व० मिथिलेश सन उत्साही संरक्षक छलथिने, मिहिरक एक मिथिलाङ्क नामक विशेषांक प्रकाशित भेल जकरा प्रसङ्ग डा० श्रीजयकान्तमिश्र लिखैत छथि[1]—

In recent years, it has published important Special Numbers on several occasions. Among them the Mithilanka is indeed a storehouse of information on Mithila and hur culture.

अर्थात् एहि किछु वर्षमे अनेक विशेष अवसर पर मिहिरक अनेक विशेषांक प्रकाशित भेल अछि। ओहि सबमे मिथिलांक (१९३५) वस्तुतः मिथिला ओ मैथिल संस्कृति सम्बन्धी सूचनाक भण्डार थीक। एहिठामसँ मिहिरक इतिहासमे क्रान्तिकारी परिवर्तन भेल। यद्यपि भाषाक सीमा अथवा समयक सीमा आबहु पूर्ववते छल, मुदा मैथिलीक क्षेत्रमे स्रष्टाक सृष्टि करब पत्रकारक विशेष दायित्व रहलनि, ताहि दिशामे अवश्य मिहिरक सर्वश्रेष्ठ अवदान मानल जा सकैत अछि। आन्दोलनक गतिमे वृद्धि आनबाक हेतु मिहिर मैथिली क्षेत्रमे चिन्तकक एक विशिष्ट पंक्ति ठाढ़ कै देलक, एकर मूलमे छल श्री'सुमन'जीक शील ओ सौहार्द। ई निश्चित जे श्री'सुमन'जी सन पत्रकार यदि मिहिरक कार्यभार ग्रहण नहि करितथि तँ जाहि संख्यामे मैथिलीक लेखक आइ देखि पड़ैत छथि, कदाचित ईहो सम्भव छल जे बहुतो गोटे आने आने दिशामे बौआइत रहि जैतथि।

1—देखू 'A History of Maithili literature' पृ० १७

१९२५ ई० मे उदितनारायणदास तथा नन्दकिशोरदासक संयुक्त सम्पादकत्वमे लहेरियासरायसँ श्री मैथिली नामक पत्र प्रकाशित होमै लागल जकर प्रथमे अंकमे प्रकाशनक आवश्यकता पर प्रकाश दैत सम्पादक लिखैत छथि—

'मैथिली प्रकाशनक प्रथम उद्देश्य थीक मिथिलाभाषाक प्रौढ़ताक सम्पादन।......जाहि भाषाक मध्य सर्वप्रथम हृदय मध्य हर्ष, शोक, गौरव, घृणा आदि नाना भावक उत्थान होइत अछि, ताहि भाषाक रक्षा ओ वृद्धि करब हमरा लोकनिक प्रथम कर्त्तव्य।'[1]

एहि पत्र द्वारा साहित्यक अंग पुष्ट नहि भेल से नहि कहल जा सकैछ, किन्तु सम्पादक उदितनारायण दासक शारीरिक अस्वस्थता एहि पत्रक अवसानक कारण भेल[2] अल्पायु हैवाक कारणेँ ई पत्र कोनो प्रभाव स्थिर नहि कै सकल[3]। एहि प्रसङ्ग डा० श्रीजयकान्तमिश्रक मत छनि:—
Its influence on the language so as to include non-literary subjects.

१—देखू पृष्ठ १८

२—देखू मिथिलाक प्रथम अङ्क पृष्ठ ५

३—समाचार पत्रक ऐतिहासिक विवेचन शीर्षक निबन्धमे श्रीपुलकितलाल दास 'मधुर' मैथिलीक सम्बन्धमे लिखैत छथि :—

"श्री मैथिली सर्वांग पूर्ण मैथिलीमे प्रकाशित भेल छल ओ ई पत्रिका यथार्थतः मैथिली भाषाभाषी समस्त जनताक सामयिक एवं साहित्यिक पत्रिका छल। एकर नीति परम उदार, भाषा विशुद्ध ओ प्राञ्जल, तेज गम्भीर ओ विषय सुपाठ्य रहैत छल। सम्पादन काज एकर योग्यतासँ कैल जाइत छल। एकर सम्पादकीय अग्रलेख विशेष विचार पूर्वक ओ योग्यतासँ लिखल जाइ छल आर ओ एक विशेष मनोयोग पूर्वक पढ़वाक तथा मनन करबाक वस्तु होइ छल। एकर प्रभाव जनता पर खूब पड़ै छल। हमरा पूर्ण अनुभव अछि जे एहि पत्रिकाक प्रभावसँ प्रभावित भै मैथिली भाषाक विरोधी, अनेक जातिक विद्वज्जन मैथिली भाषा प्रेमी भै गेल छलाह।"

बाबू भोलालाल दास मैथिलीक प्रकाशन बन्द भेला पर लिखलनि—'मैथिलीक बन्द भेलासँ मैथिली साहित्य एक प्रकारेँ नितान्त अन्धकारमे निमग्न भै गेल। मिहिरक आंशिक प्रकाश कहाँ धरि किछु साधन कै सकत ?'[1] हिनक एहि उक्तिसँ एहि कथनक पुष्टि होइछ जे मिहिर ओहि समय मैथिलीक उन्नतिकेँ अपन नीतिक अन्तर्गत कोनो विशेष महत्त्व नहि देने छल।

१६२५ ई० सँ' ५५ पर्यन्त पत्र पत्रिकाक एक रंग स्थिति रहल अछि। ओहिमे प्रकाशित साहित्यक विविधता जे होइक आर्थिक स्थिति सभक एक रङ्गाहे रहलैक, किन्तु आन्दोलनक ई विशेषता अवश्य छैक जे मैदान वेसी दिन खाली नहि रहि सकैक, कयौ ने कयौ उत्साही युवक आन्दोलनक पताकाकेँ आगाँ आगाँ उठौने चलिते रहलाह। एहि पंक्तिमे बाबू श्रीभोलालाल दास, बाबू श्रीभुवनेश्वर सिंह 'भुवन' प० श्रीसुरेन्द्रझा 'सुमन' प्रो० श्री रमानाथझा, प्रो० श्रीकृष्णकान्त मिश्र, श्रीलक्ष्मीपति सिंह, प्रो० श्री प्रबोध-नारायण सिंह, डा० श्रीलक्ष्मण झा, प० श्रीभोलानाथ मिश्र, श्रीअमरनाथ चौधरी 'दीपक' श्रीरमाकान्त मिश्र एम्० ए०, श्री सुधाकान्त मिश्र, एम्० ए० प्रो० श्री धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र'क संग एहू पंक्तिक लेखक (श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर')क नाम गनाओल जा सकैछ। प्रवासमे निवास कैनिहार लोकक नामावली एहिसँ भिन्न बूझक चाही।

बाबू श्रीभोलालाल दास एहि आन्दोलनकेर जाहि रूपेँ जडि स्थिर कैने छथि, से वस्तुतः कोनो साहित्यक हेतु गौरवक प्रतीक कहल जा सकैछ। १६२६ मे विद्यापति प्रेस लहेरियासरायसँ 'मिथिला' नामक मासिक पत्रक प्रकाशन आरम्भ भेल। एकर सम्पादक भेलाह स्व० कुशेश्वर कुमर तथा बाबू भोलालाल दास। प० कुशेश्वर कुमर काशीमे पढ़ैत छलाह आ म०म० प० मुरलीधरझासँ मातृभाषा प्रेमक प्रभाव ग्रहण कैने छलाह तथा दासजी स्व० साहित्य रत्नाकर मुंशी रघुनन्दन दासक सम्पर्कमे रहि प्रभाव ग्रहण

१—मिथिला पृष्ठ—५

कैने छलाह[१]। एहि सम्पादक-द्वयक हृदयमे मातृभाषाक प्रति अगाध प्रेम छलनिहें, सुयोग्य छलाहे आ एहि समय धरि लोक ईहो बूझै लागि गेल छल जे पाठ्य विषयहुमे मैथिली स्थान पैबाक अधिकारिणी अछि, जे कलकत्ता विश्व विद्यालयमे मैथिलीक स्वीकृतिसँ प्रमाणित भै चुकल छल। अतः उच्चस्तरक साहित्यसँ भण्डारकेँ भरि देबाक यत्नमे ई पत्र पूर्ण शक्तिक संग लागि गेल। एकर प्रथमे अंकमे सम्पादकीय विचारक अन्तर्गत जे प्रकाशनक उद्देश्य पर प्रकाश देल गेल अछि, ताहिसँ एकर नीति स्पष्ट होइछ सम्पादक लिखैत छथि:—

'...निर्भीक[२]भावेँ हमरालोकनि समाजकेँ समयानुकूल मार्ग परतै चली तखने हमर कल्याण अछि, अन्यथा हमरा जखन भावे नहि रहत त भाषा लैक की करब ? अतः भावोत्कृष्टताक हेतु—निर्जीव समाजमे किछु जीवन शक्तिक संचार करबाक हेतु—बहुत किछु तीव्र आलोचनाक आवश्यकता अछि।......हम अपना समाजकेँ प्रत्येक कुरीति एवं दुर्वृत्तिसँ पूर्ण रूपेण मुक्त देखै चाहै छी। कोनहु विषय पर मिथिला भाषाक साहित्यक निर्माण होऔ हमर यैह ध्येय अछि। हमर दृढ़ विश्वास अछि जे यदि विश्व विद्यालय हमरा लोकनिक मातृभाषाकेँ स्थान नहियों देत तँ हमरा लोकनिक सत्य परिश्रम कदापि निष्फल नहि भै सकैछ, कारण—साहित्यिक वस्तु कतहु रहै, ओकर महत्त्व कम नहि भै सकैछ। हम देखै एवं देखाबै चाहै छी जे मिथिला भाषामे कोन कोन साहित्यिक सामग्री प्रस्तुत भै सकैछ। हमरालोकनि उत्तमोत्तम सामग्री उपस्थित करबाक अभिलाषा रखै छी ?

एही ठाम एकरो उल्लेख कै देब आवश्यक प्रतीत होइछ जे एक दिस मैथिली भाषो लोक-भाषाक कोनो विशेष महत्त्व नहि दैत छलथिन, जाहि

१.—डा०श्रीजयकान्तमिश्र लिखैत छथि—'Kusheshvara Kumara had received inspiration from Mm.Murlidhara jha, and Bholalaladasa from Munshi Raghunandanadasa, and therefore they were able to maintain throughout a high standard.

२—मिथिला पृ० ७

कारणेँ कोनो पत्र पत्रिका ग्राहकक अभावमे अधिक दिन धरि नहि रहि पबैत छल। श्रीमानो लोकनिमे ततेक पूर्ण उत्साह नहि छलनि, जाहिसँ अपेक्षित प्रगतिक संग युगक अनुकूल आन्दोलन चलि सकैत, दोसर दिस मैथिलीक विरोधी लोकनि पूर्ण सतर्क भेलाह आ हिन्दीक बोलीक अन्तर्गत मैथिलीक परिगणन कै एकर स्वतन्त्र सत्ताकेँ खत्तामे गाड़ि देबाक प्रयासमे सक्रिय भै गेल छलाह, तेसर दिस कलकत्ता विश्वविद्यालय तथा हिन्दू विश्वविद्यालयमे उचित स्थान पाबिओ कै अपना प्रान्तक पाठ्य विषयमे स्थान देबाक प्रतिकूल नीति विश्वविद्यालय द्वारा अपनाओल गेल छल, जकरा विरोधमे पत्र पत्रिका बहुत पैघ भूमिका पूर्ण करैत रहल।

श्री मैथिलीमे प्रकाशित हमर ध्येय शीर्षक सम्पादकीय विचारधारामे एहि भारत सन विशाल राष्ट्रमे मिथिलाक की योगदान छैक, भारतीय सभ्यताक अन्तर्गत मैथिल सभ्यताक की विशेषता छैक आदि विषय पर पूर्ण रूपेँ विचारकैल गेल अछि। एहि विषयक चर्चा करैत मिथिलाक सम्पादकक जे अग्रिम निवेदन छनि, ताहिमे तत्कालीन समाजक उपेक्षा भावक प्रतिबिम्ब स्पष्ट देखि पड़ैछ। एक उद्धरण एहि हेतु आवश्यक अछि। ओ लिखैत छथि:—

कोनो समाजक जातीय जीवन पर ओहि समाजक भाषाक प्रभाव की पड़ैछ—से ककरहु अज्ञात नहि।...दुर्भाग्यवशात् मिथिला आइ सबसँ पश्चात्पद भै रहल अछि। जाहि निद्रालस्यप्रमादक तामसी बिनोदमे भारत-वर्षक स्वतन्त्रता नष्ट भेल, जाहि अज्ञानक अन्धकारमे हमरा लोकनि अपन सब किछु बोहा देल, जाहि गृह कलहमे गमार पर्यन्त हमरा सर्वस्वकेँ लूटि लेलक—ताही प्रमाद, आलस्य, अज्ञान एवं ईर्ष्यादिक कारणें मैथिल गण अपना मातृभाषाक उपेक्षा कैलन्हि, अन्यथा मैथिली आइ अधिक नहि तँ बिहार प्रान्तक मातृभाषा अवश्ये भेलि रहैत। की बिहारमे ओहि दिन मैथिलीक अतिरिक्त कोनो दोसरो भाषाकेँ भाषाक किछु योग्यता प्राप्त छलैक, जाहि दिन ईष्ट इण्डिया कम्पनी अंगरेजी भारतक शिक्षा-भार अपना ऊपर लेने छल?......यथार्थ पूछी तँ सामाजिक दुरवस्थहिसँ हमरा लोकनिक भाषा, भाव एवं भेष आदिक ई दुर्दशा सम्प्राप्त भेल अछि। एहि विषयमे...प्रबल क्रान्तिक आवश्यकता अछि।'

पुनः स्मरण करक थीक जे मैथिल महासभाक प्रभावे ब्राह्मण ओ कर्ण कायस्थसँ भिन्न लोक एक भ्रान्तिमे पड़ि, मैथिलीक समर्थनसँ तटस्थे नहि रहल, अपितु अन्यभाषाक समर्थनमे अपन शक्तिक उपयोग करै लागल आ ब्राह्मण एवं कर्ण कायस्थ समाजमे जतेक हरिसिंह देवीय व्यवस्थाक नाम पर ठाँव पीढ़ीक निन्दाक स्वाद लेल जाय लागल ततेक स्वत्वक रक्षामे नहि।

ओही वर्ष महाराजाधिराज स्व० रमेश्वर सिंहक रजत जयन्ती उत्सव कैल गेल छलनि। अभिनन्दनक उत्तरमे ओ बाजल छलाह:—

'To members of my own Community—I would suggest the motto of self help and on inclination to march with the times without secrificing their glorious tradltions in the line of religion and learning.'[1] आत्म निर्भरतासँ काज लेबाक एवं परम्परा ओ धार्मिक भावनाक बिनु त्याग कैनहि युगक प्रवाहानुकूल चलबाक अभिमत प्रकट करबाक अन्तर्निहित अर्थ यैह कहल जा सकैत छल जे आलस्य ओ प्रमादकेँ हटाय पारस्परिक मतभेदक निवारण दिस लोक बढथु। एहि ठाम To members of my own Community सम्बोधन विशेष रूपेँ द्रष्टव्य थीक।

आश्चर्य ई जे १९२५ मे हमर जन्म थीक आ ताहि दिन जे समस्या मैथिलीक सोझाँ छलैक, आइओ, जखन विगत बीस वर्षसँ हमहुँ एहि आन्दोलनमे सक्रिय रहलहुँ अछि, ओहि समस्या सभक आंशिके समाधान भै सकल अछि।

'भूमिकम्प छी प्रबल विश्व विप्लवकारी हम' सदृश पंक्तिक लेखक जाहि पत्रक सम्पादक होथि ओ पत्र वीर रसक नहि हो से संभव नहि। मिथिला वस्तुतः उत्साह भावकेँ जगैबाक हेतु उद्बोधन, उपालम्भ सब ढंग अपनौलक। भाषाक सर्वांगीण बिकासक हेतु संस्थाक आवश्यकता पर सेहो ई

१—मिथिला पृष्ठ ६

जोर देलक, युवक सम्मेलनक समर्थन तथा ओकरा प्रोत्साहित कैलक, जकर फल स्वरूप मैथिली साहित्य परिषदक स्थापना भेल।

सार्वजनिक संस्थाक अभावक अनुभव करैत श्री चतुर्भुज राय अपन विचार निम्नलिखित रूपेँ व्यक्त कैलनिः—

'ई सर्वमान्य एवं निर्विवाद सिद्ध अछि जे आइ कालिह विना संघ-शक्तिएँ कोनो कार्य करब नितान्त असम्भव। एहना अवस्थामे प्रत्येक देशोन्नत्यभिलाषी स्त्री पुरुषके संघ-शक्तिक शरणमे आएब अनिवार्य अछि। संघशक्ति ओ शक्ति थिक जकर हुंकार सुनि बड़-बड़ पैघ साम्राज्यकेँ चलएबामे समर्थो अन्यायी नरपति नत-मस्तक भै एकर अनुगामी होइत छथि। संघ-शक्ति ओ थिक जकर गम्भीर गर्जना सुनि बदमाश, आततायी, नारकीय, नराधम-गण भय-भीत भै प्राण लै लै पड़ाइत अछि। संघ शक्ति ओ शक्ति थिक जकर नाम लैत मात्र हृदयमे अपूर्व उत्साह, मनमे क्रान्तिकारी उमंग, वाणीमे प्रभावोत्पादिका शक्ति और शरीरमे एक प्रकारक बिजली दौड़ि जाइत अछि।...अतएव सम्प्रति मिथिलहुमे संघ शक्तिक आह्वान करब परम कर्त्तव्य बुझना जाइछ।...हमरालोकनिकेँ उचित थिक जे प्रत्येक ग्राम मध्य ग्राम-सुधारिणी सभा स्थापित करी'[1]।

एहि प्रसंग श्री राय जी विद्यालय, पुस्तकालय, वाचनालय, अनाथालय, औषधालय, व्यायामालय, सेवाश्रम आदि विभिन्न शाखाक स्थापना पर जोर देने छथि।

प० श्री श्यामनारायण कुमर एहि प्रकारक सामाजिक संस्थाक स्थापना पर जोर दैत लिखने छथि 'बेत्रेक समयानुरोधेँ काज कैने कोनो देश जाति वा समाजके सफलता सम्प्राप्त हैब असम्भव।......देशक वातावरणसँ मिथिला प्रान्त तिमिराच्छन्न भै रहल अछि जकर अनुभव देश-दशा-दर्शक बुद्धिमान व्यक्तिकेँ प्रत्यक्ष भै रहल छैन्ह।......अतः 'आगतं तु भयं वीक्ष्य नरः कुर्याद्यथोचितम्' एहि नीतिक अनुसरण कय शीघ्रातिशीघ्र सामाजिक सभा समितिक स्थापन, पत्र पत्रिकाक प्रचार, समाजमे प्रविष्ट कुरीतिक संशोधन...

१—मिथिला पृष्ठ ४५

मैथिल मात्रक कर्त्तव्य अछि[1] शिक्षित समुदाय एहि विचारक प्रचारसँ प्रभावित भेल। १९३६ सालक वैशाखमे जकर चर्चा कैल गेल, ओहि भावनामे तीव्रता अयलैक। १९३७ क फाल्गुनमे ई सूचना भेटैत अछि जे—

'बिना साहित्यिक परिषदक कोनो साहित्यक उन्नति हैब अधुना असम्भव अछि। बङ्गला, हिन्दी, मराठी आदि भारतीय भाषाक साहित्यिक परिषद कतेक काज कै रहल अछि—सेहो ककरहुसँ अविदित नहि अछि, तेहना स्थितिमे मैथिली साहित्यिक परिषद हैब कतेक आवश्यक, से लिखब व्यर्थ। यद्यपि मिथिलाभाषा साहित्यक प्रवाह कोनो ने कोनो रूपेँ अद्यापि प्रवाहित अछि, तथापि एकर यथोचित उन्नति नहि होइछ, कारण जे एकरामे जीवनी शक्तिक संचार केनिहार कोनो संस्था नहि।......हमरा लोकनि बहुत दिनसँ मिथिलाभाषा साहित्य परिषदक आवश्यकता अनुभव करैत ऐलहुँ अछि। सौभाग्यक विषय थीक जे एहि बेर मैथिल महासभाक संग-संग एकरो आयोजन कैल जा रहल अछि।'[2]

एहि उत्साह भावकेँ तीव्र हैबाक दू गोट कारण छल। मुंगेर मैथिल महासभामे मुंगेर प्रान्त निवासी प्रो० श्रीजनार्दनमिश्र[3] एम्० ए० द्वारा मैथिलीक विरोध भेल छल, जकर प्रतिक्रिया मौन पर छलैक, दोसर एक पैघ घटना भेल महाराजाधिराज रमेश्वरसिंह[4] एवं म० म० मुरलीधरझाक देहावसान[5]। ई शोक-पूर्ण घटना मैथिलीक प्रति ममत्व बढ़ैबामे सहायक भेल। किछुए दिनक बाद नवीन राज्याभिषेकक हर्षोत्फुल्ल वातावरणक जखन सृष्टि भेल तँ मैथिली चेयरक[6] स्थापना द्वारा विश्वविद्यालयक हेतु एकर द्वार उद्घाटित भेल। एहि सबमे मिथिला मासिकक भूमिका बहुत बेसी महत्त्वक

१—मिथिला-पृष्ठ १०६, १०७

२—मिथिला पृ० १६८

३—मिथिला पृ० ४०

४—मिथिला पृ० १२१

५—मिथिला पृ० ३६१

६—मिथिला पृ० १६५

रहैतैक। भने एकर आयु छोट रहल होउक, किन्तु एहि छोटे अवधिमे एकरा द्वारा जे कार्य सम्पादित भै सकल से कतेक दीर्घ - जीविओ पत्रसँ कठिन छल।

एहि पत्रमे एक दिस शास्त्रीय,[1] दोसर दिश धार्मिक,[2] तेसर दिश ऐतिहासिक[3] विवेचन होइत छल तथा सामाजिक कुरीतिक निवारणार्थ व्यंग्य चित्रक[4] संग कविता आदि छपैत छल, संगहि प्राचीन मैथिली साहित्यक साहित्यिक विवेचन[5] सेहो कैल जाइत छल।

भाषाक प्रति उदासीनता जन सामान्यमे तावत धरि छले। एहिठाम म० म० प० मुरलीधरझाक देहावसान भेला पर हुनक जीवनी हुनक चित्र सहित मिथिलामे छपल छल आ चित्रक नीचा म० म० जीक जे मातृभाषाक उद्गार छलनि तकरो उल्लेख कैल गेल अछि, जकर उल्लेख उचित प्रतीत होइछ। म० म० जीक उक्ति छनि :—

"विशेषतः प्रार्थनीय हमर मैथिल बन्धुगण थिकाह जे संस्कृत अङ्गरेजी वा हिन्दी प्रभृति कोनो भाषामे पाटव पाबि मैथिली दिशि कन-डेरियो नहि दैत छथि, एहि उपेक्षासँ मैथिलीक बड़ पैघ हानि होइछ तेँ उचित थिक जे एहन उदासीन गणकेँ ताकि ताहि रूपेँ हुनका लोकनिक आराधन करो जाहिसँ ओ लोकनि प्रसन्न चित्त भै मथिला दिशि आद्र दृष्टि देथि।"

एहि उक्तिमे आराधन शब्द बड़ मार्मिक अछि। उग्रतासँ समाजक कुरीति पर प्रहार कैलो जा सकैछ, किन्तु उदासोन व्यक्तिकेँ मातृभाषा

१—वर्णव्यवस्थाक आधार प्राचीन भारतमे लोकायतमत

२—हिन्दूधर्म—म० म० डा० गङ्गानाथझा

३—बिहारमे मिथिलाभाषाक स्थान—श्रीभुवनेश्वरझा ओ श्रीरमानाथझा, समाचार पत्रक ऐतिहासिक विवेचन—श्रीमधुर

४—कन्याक नीलामी डाक—सनातनी बाबा आदि

५—विद्यापति ओ चण्डीदास—श्रीनरेन्द्रनाथ दास

दिस अभिमुख करबाक हेतु अनुनय-विनय तकरे आश्रय लेब अपेक्षित नं वस्तुतः एखनहुँ समाजमे शिक्षितक संख्या थोड़ नहि जे मोहान्धकारमे पड़ल अपना सन्तानकेँ मातृभाषाक पठन-पाठनसँ विमुखे रखबामे अपन कल्याण बुझैत छथि ।

स्त्री-शिक्षा ओ पर्दाप्रथा

एही प्रकरणमे एहू पर विचार आवश्यक जे नवीन युगक प्रभावकेँ ग्रहण करबाक हेतु समाज प्रस्तुत नहि छल, जाहिमे प्रमुख छल, स्त्री शिक्षाक प्रचार ओ पर्दा प्रथाक बहिष्कार ।

मैथिलीक सर्वाधिक लोक-प्रिय उपन्यास 'कन्यादान'क प्रणयन ओही समयमे आरम्भ भेल[1] । 'स्त्री शिक्षाक वर्त्तमान दशा'[2] पर श्रीहरिमोहनझा जी ओही समयसँ लिखैत आयल छथि । एखनहुँ पूर्णरूपेँ एहि दिशामे प्रगति नहि भेल अछि, किन्तु आब ओहि प्रवृत्तिमे वेग अवश्य आयल अछि ।

पर्दा प्रथा उठा देबाक विचारमे मतभेद ओही दिनसँ आबि रहल अछि । संस्कृतक विद्वान पर्दा प्रथाक घोर समर्थक छलाह, किन्तु स्त्री शिक्षाक विरोधी सब नहि । प० जीवनाथ राय शास्त्रीय प्रमाणक उद्धरण दैत लिखैत छथि जे—

'यदि अवरोध प्रथाक अछैतहुँ कतिपय स्थलमे चरित्र दोष उपलब्ध होइत अछि तँ एहि प्रथाकेँ सर्वथा भङ्ग कय देने ओ दोष सब आओर अधिक व्यापक रूपेँ उपलब्ध होएत एहिमे सन्देह नहि । हमरा लोकनि देखैत छी एहि प्रथाक अपरिपालन-प्रयुक्त अन्यान्य देश आपातत सुखी रहलहुँ पर वस्तुतः सुखी नहि अछि । तस्मात् ओहि सबक एहि स्थितिसँ एहि देशकेँ शिक्षा ग्रहण करब उचित ।'[3]

किन्तु एही निबन्धक उपसंहारमे पण्डितजी लिखैत छथि—

'स्वजनक कर्त्तव्य एहि विषयमे एतबय छैन्हि जे हुनका लोकनिकेँ हुनका लोकनिक उपयोगी अन्यान्य शिक्षाक सङ्ग सतीधर्मक प्रधान शिक्षा देथिन्ह ।'[4]

१—मिथिला पृष्ठ ७१ । २—पृष्ठ ३३ । ३—पृष्ठ ३१ । ४-पृष्ठ ३३ ।

एहि पदकें पढ़ि व्यक्तिगत रूप हमरा आश्चर्य भेल, एहि हेतु जे बीस वर्षक बाद हमरा युग-चक्र लिखबाक प्रेरणा भेल, जाहिमे भाव-साम्य देखि पड़ल। युग-चक्रक एक पद अछि—

'सुन्दरता लै पुरुष फटै छथि
नारी वर्गक नाक वटै छथि'

तें तं महिला सब उठि चलली काटै पुरुषक कान कहौ के? काल प्रभाव एवं युगचक्र शीर्षको भाव-साम्य रखैत अछि। एकर आशय ई जे बीसमं शताब्दीक दोसर चरणक आरंभेमे मैथिली भाषा ओ मिथिलाक समाजमे जे समस्या सब दृष्टिगत होमै लागल से बनले रहल आ आंशिक रूपमे तेसरो चरणमे देखना जाइछ।

एहि आन्दोलनक क्रममे एक व्यक्तिक व्यक्तित्व आरो स्मरणीय देखि पड़ैछ। ठाकुर श्री सूर्यनारायण सिंह एम० ए० डिप० एड०क, जे पछाति मुजफ्फरपुर ट्रेनिंग स्कूलक प्रधानाध्यापक भेलाह। ओ ब्राह्मण ओ कर्णकायस्थ; जे मैथिलीकें दँतिआ कै रखने छलाह, मात्र मैथिलीक सेवक नहि, अपितु आनो वर्गक लोककें एहि पर समाने अधिकार छैक, ई प्रमाणित करबाक हेतु साहित्य-सेवा एवं सामाजिक उत्थानक कार्यमे लागल अपन अद्भुत प्रगतिशील विचार व्यक्त करैत समय समय पर मैथिलीमे लिखैत छलाह।

म० म० बख्शी मुकुन्दझाक मृत्युक उपरान्त अपन एक संस्मरण विभूतिमे प्रकाशित करौने छलाह। स्त्री-शिक्षाक प्रसंग उक्त म० म० जीक विचारक उल्लेख करैत लिखैत छथि:—

'महामहोपाध्यायजीकें पुछलियैन्हि—पूज्यपाद, भोला बाबू एवं भुवनजी पर अपने आक्षेप किएक करैत छिऐन्हि? हमरा तँ कोनो विभ्रम नहि देखि पड़ैत अछि। ओ उत्तर देलन्हि—स्त्री शिक्षासँ भुवनजी ओ दासजीकें समाजक कल्याण बुझि पड़ैत छन्हि, प्राचीन मनोवृत्तिक उपासक क्यौ नहि छथि, पण्डितक खिद्दहांस करैत छथि, नवीन साहित्यक निर्माणक हेतु छटपटाइत छथि, जाहिमे कलियुगी वार्त्ताक समावेश हो। ई सुझितहि नहि छैन्हि जे आर्य ललना साक्षरा भै नवीन साहित्य पढ़ि पढ़ि, कुलकें डुबा देतीह। हुनका सभ रामायण, महाभारत, मनुस्मृति प्रभृति धर्म

ग्रन्थ पढ़तीह-सुनतीह, तकर आशो टा जुनि करी। हँ, नवका चटक-मटक उपन्यासादि—पढ़तीह, जाहिसँ व्यभिचार बुद्धिहिक प्रगति हैत, कामुकता बढ़त, सब धर्म-भ्रष्टा भै जैतीह। तेँ हम स्त्रीकेँ साक्षर करबाक विरोधी छी। कन्याक शिक्षा एहने हैबाक चाही जे ओ कुलधर्म सीखथि, पति सेवा करथि, सनातन धर्मक आदेश पर चलथि; साक्षर महिला सबकाज छाड़ि किताब, नवका पत्रादि—घास भूसा पढ़ैत रहतीह जाहिसँ घरक सत्यानाशे टा हैत।'[१]

प्राचीन विचारधाराक पोषक संस्कृतक विद्वान् स्त्री-शिक्षाक पक्षपाती नहिएँ जकाँ छलाह। पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित कथा, उपन्यास आदिकेँ घास-भूसा कहि अवहेलनाक दृष्टि रखैत छलाह, तथापि स्त्री शिक्षाक आन्दोलन चलिते रहल, जे मैथिलीक प्रगतिक इतिहासमे विशिष्ट स्थान रखैत अछि। प्राचीन विचारक लोक स्त्री-शिक्षासँ घरक सत्यानाश हैबाक आशंका प्रकट करथि आ नवीन विचारक लोक कहथि—'हमरा लोकनिक स्त्रीसमाजमे सम्प्रति भीरुता, आलस्य, राग, द्वेष, कलह आदि अनेक नैतिक दुर्गुणक अखण्ड साम्राज्य व्याप्त अछि, जकरा हटला बेत्रेक घरमे सुख, शान्ति एवं लक्ष्मीक निवास होएब कथमपि संभव नहि'।[२]

स्त्री-शिक्षाक विरोधी हम नहि छी, किन्तु वर्त्तमान कालमे स्त्रीशिक्षाक जे पद्धति अछि, से भारतीय पारिवारिक जीवनक अनुकूल कथमपि नहि कहल जा सकैछ। ताहूमे मिथिलाक हेतु तँ आरो सत्यानाशी पद्धति हम एकरा मानैत छी। हम ईहो जनैत छी जे हमर एहि उक्तिक कटुसँ कटु आलोचना प्रगतिशील विचारक लोक करताह, दू चारि टा गारि सेहो पढ़ि सकैत छथि, किन्तु जाहि द्रुत गतिएँ समाजक नैतिक पतन भै रहल छैक; चल-चित्रक माध्यमसँ, साहित्यक माध्यमसँ यौन आकर्षण वीभत्स रूप धारण कैने चल जा रहल छैक, आध्यात्मिक विचारधारा क्रमशः समाधिस्थ कैल जा रहल अछि, आधिभौतिके सुख जीवनक परम उद्देश्य ओ परम पुरुषार्थ मानल जाय लागल अछि, एहि विषम कालमे सिद्धान्त रूपमे नारी वर्गक उत्थान ओ समान अधिकार प्रदान करबाक नाम पर ओकर पशुत्व

१—विभूति अंक ११ पृ० ३१। २—मिथिला पृ० ३६।

भावकेँ जगाय वासना पूर्त्तिक प्रकृति प्रदत्त एक साधन मात्र ओकरा बना-ओल जा रहल अछि, से एक दिन मातृत्व पदक मर्यादा ओ प्रतिष्ठाकेँ लऽ दऽ कऽ चप दऽ डूबि जैत।

हमरा ओहि ठाम नारीक हेतु गृह-विज्ञान, पाक-विज्ञान, बच्चाक हेतु स्वास्थ्य-विज्ञानक संग आध्यात्मिक शिक्षा उपयुक्त छल, जे अनायास घरेमे कन्या प्राप्त कै लैत छलि। एक पत्नीक रूपमे पर - गृह जाय जाहि आदर्श ओ मर्यादाक संग दाम्पत्यजीवनक रथकेँ सुचारु रूपेँ चलबैत छलि, से एहि नूतन शिक्षा प्रणालीमे नष्टप्राय भेल जा रहल अछि। एहि ठाम एखन धरि शिक्षा-प्राप्तिक एकमात्र उद्देश्य, पराधीन जीवनक वरण करब आ ताहीरूपेँ जीविकोपार्जन कै जीवन-यात्राक परिसमाप्ति धरि पहुँचब, रहल अछि, ताहि ठाम एहि स्कूली शिक्षासँ अस्पतालमे जन्म, धाइक द्वारा पालन, कोनो नगरक छात्रावासमे रहि विद्योपार्जन आदि क्रम माता पिताक प्रति सन्तानक कर्त्तव्यकेँ आरो धूमिल बनौने जायत आ एक नवीन शब्द 'फैमली' मातापिताकेँ अपना परिधिक अभ्यन्तर कथमपि नहि टपै देतनि।

एहि ठाम माइक हाथक रान्हल, स्नेह पूर्वक आगोमे परसल रुखो सुखो अन्न आजुक 'विटामिन' पौष्टिक खाद्यसँ वेशी बल-बुद्धि-वर्द्धक होइत छल, कोनो बाबाजीक हाथक रान्हल आ माय अथवा पत्नीक हाथक रान्हल अन्नक गुणमे कत पैघ अन्तर होइत छैक से अभागल लोक की जानै गेल ? आइ देखि रहल छी यैह, आजुक तथाकथित शिक्षिता कन्या ग्राम्य जीवनक प्रति घृणा करैत अछि, ओकरा नागरिक जीवन चाहिऐक। जौर्जेट, जम्पर, चप्पल, लिपस्टिक, घड़ी ओ चश्मा चाहिऐक, ओ चूल्हिक उपासिका बनि नहि, सहचरी बनि पतिक जीवनमे प्रवेश कैलक अछि, ओ फरमाइस करत, पुरुष ओकर पूर्त्तिक हेतु, जाहि कोनो कर्मसँ होइक, प्रयत्नशील रहल करौक, यैह दाम्पत्य जीवनक पद्धति बनल जा रहल अछि।

एहि दृष्टिएँ स्त्री-शिक्षाक प्रसार वा प्रचारमे प्राचीन अर्थात् एहि आन्दोलन युगक आरम्भमे जाहि रूपक साहित्यक सृष्टि होइत छल, से नहि भै रहल अछि। साहित्यकारक दृष्टि एहि गंभीर समस्या दिस जैबाक चाहिऐनि।

मैथिली साहित्य परिषद्क स्थापनाक बाद साहित्यिक मंचक विकास आरम्भ भेल आ कवि सम्मेलन आदिक माध्यमसँ जनसाधारणकेँ एकर माधुरीक रसास्वादन कराय. एहि दिस अभिमुख करबाक प्रयास बड़ जोर सोरसँ आरम्भ भेल। दोसर दिस प्रान्तीय विश्वविद्यालयमे एकर स्वीकृतिक हेतु तत्परता पूर्वक आन्दोलन सेहो चलै लागल। ई सब सूचना हमरा 'भारती'क माध्यमसँ भेटैत अछि।

भारतीक योगदान

भारती परिषद् संरक्षित मासिक पत्रिका छल। एकर प्रथम अंकक सम्पादकीयसँ, जे आत्म निवेदन शीर्षकेँ प्रकाशित अछि, ज्ञात होइत अछि जे मैथिली चेयरक स्थापना भेलाक बादो पटना विश्वविद्यालय द्वारा मैथिलीक उपेक्षामे कोनो व्यतिक्रम नहि आनल गेल। एहन एहन समस्याक समाधानक हेतु पत्रिकाक आवश्यकता पर जोर देल गेल अछि। ओहिसँ ईहो पता चलैत अछि जे बेगूसरायमे जे विहार प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन भेल छलैक[1] ताहिमे हिन्दी एवं मैथिलीक बीच सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध रहय, तन्मूलक एक प्रस्ताव स्वीकृत भेल छल, जाहिसँ मैथिलीक बढ़ैत शक्तिक आभास तथा मैथिली-विरोधी लोकनिक आत्मविश्वास पर होइत आघातक सूचना सेहो भेटैत अछि। मैथिली विरोधीक ई आत्मविश्वास छलनि जे अन्तमे मैथिलीकेँ उदरसात् कइए कऽ छोड़बनि, जकर प्रमाण हिनका लोकनि द्वारा भेल कार्य सबसँ अद्यापि प्रत्यक्ष होइत अछि।

ई ज्ञातव्य जे एहि पत्रक प्रसङ्ग पूर्वक इतिहासकार लोकनि विशेष चर्चा नहि कैलनि अछि। मैथिली पत्रकारिताक तेसर उत्थान कालक चर्चा करैत प्रो०श्रीकृष्णकान्त मिश्र अपना इतिहासमे लिखैत छथि—एहि समयक मिथिला मोद (१९३६ सँ १९४१) भारती (१९३७) विभूति (१९३७-१९३८) आदि पत्र मैथिली-पत्रकारिताक ऐतिहासिक महत्त्वसँ परिपूर्ण छल।" ओ ऐतिहासिक महत्त्व की? ताहि पर प्रकाश नहि देलनि अछि। ओ आगाँ

१—भारती अंक १ पृ० ३।

लिखत छथि–'एहिकालक सबस मुख्य-पत्र प० श्रीरमानाथझाक सम्पादकत्वमे प्रकाशित 'मैथिली साहित्य पत्र' (१९३७-३९) छल।'[1] वस्तुतः मैथिली साहित्य-पत्र प्रकाशनक दृष्टिएँ महत्त्व - पूर्ण छल, जाहि माध्यमसँ एकावली परिणय, उदयन कथा, अभिज्ञान शाकुन्तलम् केर अनुवाद, वेकफील्डक पादरी, शृङ्गार भजनावली आदि आदि ग्रन्थक प्रकाशन संभव भै सकल, किन्तु पत्रकारिताक दृष्टिएँ एकरा मुख्य-पत्र कहब कथमपि समीचीन नहि। मैथिलीक प्रगतिमे, सामाजिक वातावरणकेँ आम्रेड़ित करबामे भारती ओ विभूति अथवा मोदक समकक्ष ई पत्रक पाँतीमे रखले नहि जा सकैछ।

यद्यपि विभूति ओ भारतीक बीच परस्पर स्पर्द्धाक भावना छलैक, जकर आभास विभूतिसँ भेटैत अछि। तथापि भारतीक प्रसङ्ग अनेक दोष ओ त्रुटिक चर्चा करैत ओहि प्रसंग लिखने छल—'जे रहौ, भारतीमे नव युगक प्रेरणा, युवक हृदयक तीव्र स्पन्दन छैक ताहिमे सन्देह नहि। के एहन पामर जे भारतीक बहुत प्रचार, ओकर सर्व प्रकारेण उन्नति नहि चाहत? हमहुँ सम्पादक, प्रकाशककेँ धन्यवाद दैत हुनक सफलताक शुभ कामना करैत छी।'[2]

भारती अपना ओजसँ वातावरणकेँ आन्दोलित कैलक। मातृभाषाक प्रति हमर कर्त्तव्य शीर्षक निबन्धमे लेखक श्री मुनीन्द्रमोहन मिश्र एम० ए० बी० एल० अन्य अन्य भाषाक विकासक चर्चा करैत बंगलामे विद्यासागर, बंकिमचन्द्र आदि, महाराष्ट्रमे राणा डे, तिलक आदि, गुजरातमे नर्मदाशंकर, नवल राम आदि, हिन्दीमे भारतेन्दु–हरिश्चन्द्र आदिक उल्लेख करत लिखैत छथि—चन्दाझा, हर्षनाथझा इत्यादि प्राचीन पथक क्षीण आलोककेँ टिमटिमौलनि, किन्तु नवयुगक गैस लाइट वा विद्युत्प्रभामे ओकर अस्तित्व कतेक दिन रहौ? ने मैथिलीकेँ सरकारी शिक्षामे स्थान भेटल, ने मिथिलाक राज दरबारमे एकर कोनो मान रहल, तेँ एकर क्षीण अवस्था भेलैक। एहना स्थितिमे मैथिलीभाषी जनता यदि अपन आत्मशक्ति विस्मृतकै देलक तँ कोनो आश्चर्य नहि[3]।'

१—मैथिली साहित्यक इतिहास पृ० २६४।
२—वर्ष १ अंक १।
३—भारती पृष्ठ—२२।

'सरकारी शिक्षामे स्थान नहि भेटब एकर विकासमे बाधक थीक' एहि भावनाक प्रचार करब ततेक दुस्साहस नहि, किन्तु मिथिला राजदरबारोमे मैथिलीक उपेक्षाक चर्चा करब अवश्य दुस्साहसक बात छल आ तकर उल्लेख दृढ़ता पूर्वक करब पत्रक ओज सिद्ध करैत अछि।

एही अंकमे ठाकुर सूर्यनारायण सिंह एम०ए० डिप्० एड्०, हेडमास्टर ट्रेनिंगस्कूल मुजफ्फरपुरक लिखल 'मैथिलीक मांग' शीर्षक लेखसँ ज्ञात होइत अछि जे मैथिलीक उत्थान सम्बन्धी चिन्तन कैनिहार लोकक वर्गमे वृद्धि भै रहल छल। एहि ठाम ई पुनः स्मरणीय थीक जे किछु दिनधरि बिहारक शिक्षा पदाधिकारी एहि मैथिलीकेँ 'चन्दलाल दासों की भाषा' कहि सम्बोधित करैत छलथिन आ ऊपर ई चर्चा कैल जा चुकल अछि जे हरिसिंह देवीय व्यवस्थाक अन्तर्गत परिगृहीत जाति मात्रक भाषा मैथिलीकेँ बूझल जाइत छल, किन्तु उक्त मिश्रजी वा सिंहजी एहिसँ बाहरक लोक छलाह, तेँ वर्ग-वृद्धिक द्योतक बूझक चाही। सिंह जी 'वर्तमान विक्षोभ', 'विरोधक आशंका व्यर्थ', 'हिन्दी ओ मैथिली', 'वर्त्तमान शिक्षा प्रणाली ओ मैथिलीक अनिवार्यता', 'मगही-भोजपुरी-मैथिली', 'मैथिलीक संरक्षण ओ प्रचार', 'आयोजन' आदि उपशीर्षकमे बाँटि मैथिलीक मांग शीर्षक[1] निबन्धमे राष्ट्रसभाक स्थापना, मैथिलीक माध्यमसँ निःशुल्क प्रारम्भिक शिक्षा, प्रचारक हेतु उपदेशकक नियुक्ति, मिथिलेशक दफ्तरक भाषा मैथिली हो एवं राज्यक प्रत्येक कर्मचारीक हेतु मैथिलीक ज्ञान अनिवार्य राखल जाय, रजिष्टर्ड मैथिल विद्वत्परिषद्क स्थापना द्वारा विभिन्न भाषासँ अनुवाद कार्य करबाक आग्रह तथा एकलाख टाकाक कोषक स्थापना आदि सुझाव देने छथि, जाहि विचारक पृष्ठभूमिमे विशेष चिन्तनक आभास भेटैत अछि।

भारतीक सम्पादन, मिथिलाक सम्पादक ओ मैथिली साहित्य परिषद्क तत्कालीन मन्त्री, श्रीभोलालाल दास करैत छलाह। अतः एहू पत्रकेँ ओजस्वी रहब युक्तिसंगते छल। परिषद् संरक्षित रहलाक कारणेँ परिषद् द्वारा होइत मैथिली आन्दोलनक गतिविधिक पता सेहो एहिपत्रसँ लगैत अछि।

१—भारती पृष्ठ—५।

एहिमे 'परिषद् समाचार' शीर्षक एक स्तम्भे छल। निम्नलिखित समाचार सबसँ आन्दोलनक प्रगति पर प्रकाश पड़ैत अछि।

'मुजफ्फरपुर अधिवेशनमे जे डेपुटेशान स्वीकृतिक प्रसङ्ग वाइस चान्सलरक ओतय जैबाक हेतु नियुक्त भेल छल तदर्थ एहि मासक तृतीय सप्ताहक समय निर्द्धारित भेल अछि। कुमार गंगानन्द सिंह आदि प्रमुख व्यक्तिसँ पत्राचार भै रहल अछि। संभवतः शीघ्र ई डेपुटेशन वाइस चान्सलरक सेवामे उपस्थित हो।'[1]

बिहार संस्कृत एशोसियेशन द्वारा मैथिलीकेँ मान्यता भेटै, तदर्थ परिषदक दिशसँ आन्दोलन चलैत छल, जकर सूचना निम्नलिखित समाचारसँ भेटैत अछि।

'जहिना पटना विश्वविद्यालयमे मैथिलीक स्वीकृतिक प्रश्न आइ २० वर्षसँ उपस्थित अछि तहिना संस्कृतो एशोसियेशनमे आइ ३ वर्षसँ ई विषय विचाराधीन अछि। गत कनवोकेशनक मिटिंगमे (१२-२-१९३७ ई०) एहि बातक निर्णयक हेतु एक सबकमीटीक पुनर्वार निर्माण भेल अछि। हम सब कमीटीक मेम्बर लोकनिसँ एतबे कहय चाहैत छिऐन्हि जे प्रायः दस हजार विद्यार्थी बिहारमे तीनू संस्कृत परीक्षा (प्रथमा, मध्यमा, आचार्य)मे सम्मिलित होइ छथि, जाहिमे ६ हजार केवल मैथिले रहै छथि। यदि हिन्दी स्कूलमे हिन्दीक वातावरण असम्भव और हुनक नम्बर ओहिमे कम को जे किछु नहि अबै छन्हि तँ संस्कृत टोलमे तकर कोन आशा? तखन यदि एतेक विद्यार्थीक प्रति ई अन्याय प्रतिवर्ष होइत रहय तँ ई घर कोना चलै? की आबहु हम सब जागब? की आबहु एहि सब कमीटीक दृष्टि एहि महान अन्याय पर आकृष्ट हैत? --(मंत्री, मैथिली साहित्य परिषद)'[2]

पुनः परिषद द्वारा सप्तम अधिवेशनमे स्वीकृत प्रस्ताव सबसँ ई ज्ञात होइछ जे संस्कृत एशोसियेशन मैथिलीकेँ स्वीकृति देलक, जाहि हेतु परिषद धन्यवाद ज्ञापन कैलक[3]। किन्तु विश्वविद्यालय द्वारा तावत धरि स्वीकृति नहि भेटल छल। एतन्मूलक एक प्रस्ताव सेहो एही अधिवेशनमे स्वीकृत भेल।

१—भारती—पृष्ठ ३४। २—भारती पृष्ठ ३५। ३—भारती पृष्ठ ४४८।

प्रस्तावक स्वरूप छल—'ई परिषद् [illegible]थ विश्व विद्यालयक अधिकारी वर्गसँ अनुरोध करैछ जे मैथिलीके मेट्रिकसँ एम०ए० पर्यन्त साहित्यिक रूपेँ वैह स्थान प्रदान करथि जे बंगला उड़िया प्रभृति अन्यप्रान्तीय भाषाकेँ प्राप्त छैक।'[1]

विहार सरकार द्वारा एक शिक्षा समितिक नियुक्ति भेल छल, जकर सभापति छलाह डा० श्री राजेन्द्र प्रसाद। परिषद् एहि अधिवेशनमे एक प्रस्ताव द्वारा एक डेपुटेशन पठैबाक निश्चय कैलक, जाहिमे कुमार श्रीगंगानन्द सिंह, रायबहादुर जयानन्द कुमर, सूर्यनन्दन ठाकुर एम्० एल्० ए०, चतुरानन दास एम्० एल्० ए०, श्रीसुधाकर झा एम्० ए० तथा श्रीभोलालाल दास प्रतिनिधि मण्डलमे लेल गेलाह। एहि प्रतिनिधि मण्डलकेँ भार देल गेलैक जे भावी शिक्षा पद्धतिमे मैथिलीकेँ उचित स्थान देऐबाक सम्बन्धमे अनुरोध करय।

शिक्षा प्रणालीमे सुधार अनबाक दृष्टिएँ सरकार द्वारा एक शिक्षा पुनर्निर्माण समिति संगठित भेल छल। ओ सम्पूर्ण भारतक शिक्षा प्रणालीक संस्कार करबाक हेतुएँ भेल छल, जे वर्धा स्कीमक नामेँ अभिहित भेल। एहि समिति द्वारा १०६ गोट प्रश्नक प्रश्नावली प्रकाशित कराय, प्रान्तक प्रमुख लोक ओ संस्था सबहिक विचार जनबाक हेतु प्रचारित कैने छल। परिषद्केँ सेहो सम्मति पूछल गेल छलैक। विशेषतः भाषा सम्बन्धी प्रश्नक उत्तर माङल गेल छलैक। परिषद्क दिशसँ उत्तर देलो गेल छलैक।

वर्धा स्कीमक विशेषता छलैक जे शिक्षा अनिवार्य बनाओल जाय, शिक्षा केवल किताबी नहि हो, अपितु एहन हो जे बेकारीक जटिल समस्याक समाधान भै सकैक। तेसर विशेषता ई छलैक जे शिक्षाक माध्यम विद्यार्थीक मातृभाषाकेँ बनाओल जाय, ताहि पर ई जोर देने छल। राष्ट्रभाषाक शिक्षा किछु दूर ऊपर गेलाक बाद देबाक योजना छलैक, जाहिसँ देशमे राष्ट्रिय भावनाक समुचित विकास भै सकय आ ताहि हेतु ओ हिन्दुस्तानीकेँ स्थान देने छलैक। एहि प्रसङ्ग भारती अपन सम्पादकीय टिप्पणीमे विस्तृत रूपेँ

१—भारती पृष्ठ ४४८।

विचार कैने छल। भारतीक सम्पादक लिखैत छथि—'ई अवसर मैथिलीक हेतु जेहने स्वर्ण संयोगक अछि तेहने नाजुको अछि। स्वर्ण संयोग एहि कारणें जे हमरा सबहुँके आब मातृभाषाक महत्त्व बुझैबाक प्रयोजन नहि रहल, कमीटी स्वयं एहि सिद्धान्तकें स्वीकृत कैलक अछि। केवल हमरा सबहुँके एतवे कहब आवश्यक जे हमर मातृभाषा मैथिली थीक-हिन्दी बंगला आदि नहि थीक।......यदि एहि अवसर पर हम चुकलहुँ तँ मैथिलीकें निकट भविष्यमे अपना ध्येय पर पहुँचबाक कोनो आशा नहि और मैथिलीक प्रतिएँ जे किछु निराधार आपत्ति विरोधी गण करैत आयल छथि—से सर्वथा असत्य रहनहुँ वज्रलेख भै जायत।[1] ओ चूकल, अद्यापि चुकले छी।

एहि सब प्रकारें भारती मैथिलीक आन्दोलनमे बड़ महत्त्वपूर्ण योगदान कैने अछि। एहिमे झाजीक चिट्ठी एक स्तम्भ छल। ताहिसँ तत्कालीन जनताक उदासीनता एवं मैथिली-सेवी लोकनिमे पारस्परिक अन्तर्विरोधक सूचना भेटैत अछि। ओहि समयमे मोद, मिहिर, भारती एवं विभूति ई चारि टा पत्र एक संग चलि रहल छल। जाहि मैथिलीमे एक गोट पत्र चलब दुर्घट, तते एक संग चारि पत्रक प्रकाशन ई सूचित करैत अछि जे मैथिलीक उद्धारक हेतु एहि कालमे चेतना तीव्र भै गेल छल, भने ओहिमे प्रतिस्पर्द्धाक भाव रहल हो। झाजीक चिट्ठीमे चारू पत्रक स्थिति एवं नीति पर व्यंग्य कैल गेल अछि। 'मिहिरकें विशुद्ध मैथिलीक पत्र कोना बनाओल जाय? एक बात और छैक केवल मैथिली रहने लोकके हिन्दी सिखबाक अवसरे कोना भेटतैक? हमर विचार पूछल जाय त मिहिरमे अंगरेजी, उर्दू, बंगला सबके जोड़ि देबाक चाही अन्यथा ओकरा सब समाज पर एक रंग कृपा रखनिहार राज दरभंगाक पत्र कहैबाक योग्यते की रहतैक? अन्यान्य तीनू पत्र यदि केवल मैथिलीकें अपनौने अछि, त ओकर कारणो प्रत्यक्षे छैक जे विभूति सोतिक पत्र थीक, मोद ब्राह्मणक और भारती कायस्थक। और मिहिरक बात भिन्न छैक।[2] एहि प्रकारक पारस्परिक अन्तर्विरोध मैथिलीक उत्थानमे कम बाधक नहि भेल अछि। एहि प्रसङ्ग आगाँ विचार कैल जायत।

१—भारती पृ० ४३५। २—भारती पृ० १३८।

भारतीमे एक विज्ञापन भेटैत अछि जे हिन्दीक माध्यमसँ प्रकाशित अछि। "मित्र मण्डल को संगठित और सार्वजनिक संस्था बनाने की योजना" साहित्य सेवाक अपूर्व अवसर, देशोत्थानका ठोसकार्य, यश और ख्यातिके संग पूर्ण लाभका आयोजन, पढ़िये ! विचारिये !! सम्मिलित होइये !!![1] ......कहने को आवश्यता नही कि इस संस्थाको सहजमे ही साहित्य परिषद् को अनुवर्त्तिनी बनायी जा सकती है सुतरां मैथिलीके क्षेत्रमे तो यह संस्था अनायास एकाधिकार प्राप्त कर सकती है ? एहि संस्थाक ६०००क योजना बनल छलैक, जकर व्ययक निम्न लिखित रूपें बजट बनाओल गेल छल—प्रकाशन पत्रमे १८००) पुस्तकमे १२००), प्रचार-विज्ञापन—२००) एजेण्ट—३००), विक्रयमे १५००) तथा स्थायी कोषमे १०००), एहि सब प्रकारक योजना बनैबामे निश्चित रूपें उत्साह ओ चिन्तनक प्रधानता छल हैत।

एही कालमे विद्यापति पर एक फिल्म न्यू थियेटर्स द्वारा प्रदर्शित भेल, जाहिमे विद्यापतिक चरित्र पर आक्षेप कैल गेल छल। तकर विरोधमे एक उपसमिति १६-११-३७ कै संघटित भेल, जाहिमे कुमार श्री गंगानन्द सिंह, श्री प्रियनाथ मित्र, श्रीनागेश्वर मिश्र, प० जीवनाथ राय, राज पण्डित श्रीबलदेव मिश्र, श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन', श्री सुखदेव दास तथा श्री भोला-लाल दास छलाह आ २३-११-३७ कै श्री प्रियनाथ मित्रक अध्यक्षतामे उप-समितिक बैसक भेल तथा न्यू थियेटर्स, सेंसर बोर्ड बंगाल तथा बिहारकें विरोध पत्र पठाओल गेल। जे सबकार्य जाग्रत चेतनाक प्रतीक थीक।

विभूतिक सेवा

भारतीक समानान्तरमे कमलालय मुजफ्फरपुरसँ 'विभूति' मासिक पत्रक प्रकाशन होमै लागल छल, जकर सम्पादक छलाह श्रीभवनाथ शर्मा। ई छद्मनाम छलनि स्व० भुवनेश्वर सिंह 'भुवन'क, जनिको नाम मैथिली पत्रकारिताक इतिहासमे गौरवक संग लेल जाइत छनि। एहि पत्रक प्रसङ्ग

१—भारती अंक ५-६।

डा० श्री जयकान्त मिश्र लिखैत छथि:—"The Vibhuti began well. It was priced very low considering that it promised to give very interesting though at times provocative matter and that an established writer like Bhuvaneshwarasingha 'Bhuvan' was associated with it. Its articles were revolutionary in spirit and envisaged a new line of work—that of ready-wit and humor".[1] परन्तु विभूतिक प्रसङ्ग मात्र हास्य ओ प्रत्युत्पन्नमतितत्वक उल्लेख हमरा जनैत ओहि पत्रक प्रसङ्ग पूर्णतः न्याय करब नहि थीक। ओकर प्रथमे सम्पादकीयमे जे ओज तथा त्यागक भावना अछि, ओ मैथिलीक आन्दोलनक गतिमे तीव्रता सूचित करैत अछि। पूर्वे उल्लेख भै चुकल अछि जे स्वतन्त्र पत्रकारक व्यक्तित्व ओहि पत्रक नीतिक संग स्वतः निखरि उठैत छैक। प्रथम सम्पादकीयमे सम्पादक महोदय लिखैत छथि—आइ मातृभाषा मैथिलीक अर्चनार्थ विभूतिक संग सादर, सस्नेह, सोल्लास, किन्तु शंकित चित्तहिसँ साहित्य प्रांगणमे उपस्थित भेल छी। हमरा हेतु घर फूकि तमाशा देखबाक सदृश भेनहुँ जँ ई प्रयास सर्वसाधारणक मनस्तुष्टि साधित कै सकै एवं एहिसँ अपन जातीय-साहित्यक आंशिको पूर्त्ति भै जाय तँ हम सब परिस्थितिमे एहिसँ परमानन्दे लाभ करब। मातृभाषाक महिमा वृद्धिक हेतु विभूतिक रूपमे आइ हम अपन हृदयक रक्त-विन्दु अर्पितकै रहल छी'।[2] एही अंकमे प्रकाशित एक दोसर विचार सम्पादकक दृढ़ता सूचित करैत अछि। उक्ति अछि—

'पत्र प्रकाशित तँ भेल, मुदा कतवा दिन चलत ? जनिकर ई विचार-धारा छन्हि से सहायताक स्थानमे गालैसीकेँ अपन ध्येय बनबैत छथि, निस्सन्देह स्वभाषाक पत्रकेँ नहि पनगै देबाक मुख्य पाप हुनके लोकनिक थीक।......हँ हम मुक्तकण्ठेँ ई घोषणा करैत छी जे उपेक्षासँ, साधनाभावसँ वा कोनो कारणेँ पत्र, नहियेँ चलौ, कोनो पत्रकेँ प्रकाशित करबाक चेष्टो संचालक समुदायक विवेक और धैर्यक दुन्दुभि थीक। ओ निन्दा

१—A History of Maithili literature पृ० २२ Vol. II

२—विभूति पृ० २७।

और आक्षेप सहैत छथि, परिस्थितिसँ लड़ैत छथि, गाँठक द्रव्य गमबैत छथि और समाजक सम्मुख पद-चिह्न छोड़ि जाइत छथि। हिनक विफलतो सफलते थीक। हिनक उद्योग भावी पीढ़ीकेँ प्रेरणा देत आलोक देत।'[1] वस्तुतः स्व० भुवनजी हृदयक रक्तबिन्दुएसँ मातृभाषाक उद्यानमे नव वसन्त अनबाक हेतु अपन मनोरथक सिंचन कैने छलाह। ई अवश्य जे ओ बड़ उग्र विचार धाराक लोक छलाह। युगक अनुकूल ओहू उग्रताक निर्वाह करबाक प्रवृत्ति हिनकामे नहि छलनि। युवक शीर्षक कवितामे हिनक उद्घोष अछि—

'देखि सुनीतिक हत्या छोड़ै रोम रोम अंगार
जरै कुनीति, सजग हो साहस सुनितहि दृढ़ हुंकार'

विभूतिमे हास्य व्यंग्य माढ़व्य नामेँ क्यौ लिखैत छलाह। भारतीक प्रसङ्ग माढ़व्यक उक्ति अछि—'मैथिली साहित्य परिषद् एँड़ीसँ चोटी पर्यन्त कायस्थ संस्था थीक आर ओकर संरक्षित भारती मासिक सर्वथा कैथिन पत्रिका।' एहि आक्षेपक रहितो भारती जे विभूतिक रिव्यू भेल छल से देखि भारतीक सहन शीलता द्योतित होइछ। भारती लिखने छल— 'ई पत्रिका गत होलीक अवसरपर वैशाली प्रेस मुजफ्फरपुरसँ प्रकाशित भेल अछि। छोट-छीन मासिक बड़ सुन्दर ओ प्रिय लागल। छपाइ ओ सफाइ प्रशंसनीय। पृष्ठ संख्या फुलिस्केप चौपेजी २८ ओ वार्षिक मूल्य सवा टाका मात्र राखल गेल अछि जे सभक हेतु सुलभ ओ सस्त अछि। सम्पादक छथि श्रीयुतभवनाथ शर्मा साहित्यालंकार। भणिता भने भवनाथक रहैन्ह किन्तु भाव-भाषा भुवनक थिकैन्ह ताहिमे किञ्चितो सन्देह नहि। ई आर आनन्दक बात। हमरा त ऐह भान होइछ जे भुवनजी ई उपनाम धारण कै कार्यक्षेत्रमे अवतीर्ण भेल छथि। लेखको वर्गमे हमरा कृत्रिमे नामक आभास भेटैछ, यथा—राजहंस, विश्वकर्मा, वीणापाणि, सुदूरदर्शी, वाणी विनायक, माढ़व्य इत्यादि। अस्तु, प्रथमांकेमे कतोक उत्तम कविता ओ लेखक समावेश अछि, किन्तु ओतवहिसँ एकर समालोचना

१—विभूति पृ० २९

करब हम एकरा प्रति अन्याय बुझै छी। पत्र-पत्रिका निरन्तर उन्नति करबाक वस्तु थिकैक। जनमतकेँ अपना पक्षमे करबाक साधन थिकैक तथा समाजक वास्तविक सेवक थीक। दुर्भाग्यवश विभूति आरम्भहिमे समालोचनात्मक पत्र भए गेल जाहिमे ओ स्वयं नहि ठहरि सकत। यदि ओकर नीतिएँ सैह होइक तँ हमरा आपत्ति नहि, किन्तु यदि ओ मैथिली साहित्यक वास्तविक किछु सेवा करै चाहैछ तँ ओकरा मैथिलीक प्रत्येक पत्रक सङ्ग कन्धामे कन्धा मिलाय पत्र-पत्रिकाक हेतु सुन्दर परिस्थिति उत्पन्न करै पड़तैक अन्यथा प्राचीन मैथिल स्वभाव दोषेँ एको पत्रक चलब असम्भवे अछि। कमसँ कम मैथिलीभाषी जनताक रुचिक हमरा एखन एहने धारणा अछि। अस्तु, भारतीक दोष, परिश्रम देखाय विभूति जे मित्रताक परिचय देने अछि तदर्थ ओकरा हम विश्वास दैत छियैक जे भारतीमे जे कोनो दोष मान्य एवं परिहार्य छैक तकरा मार्जनक हेतु ई सतत सचेष्ट रहत, किन्तु कमलालयक ऐश्वर्यसँ परिपालित विभूतिक समानता एकान्त तपस्विनी भारती कोना कए सकत? लक्ष्मी और सरस्वतीक तुलने की? प्रत्येक व्यक्ति विभूतिकेँ अपनाय उपकृत होथु, यैह हमर हार्दिक शुभकामना।[1]

स्व० भुवनजी जाहि अप्रतिम प्रतिभाक लोक छलाह, जे उत्साह ओ दृढ़ता हुनकामे छलनि तदनरूप काज रहितनि तँ वस्तुतः भारती ओ विभूतिक युग मैथिलीक हेतु स्वर्ण-युग होइत। ई सत्य जे जे क्रान्ति ओ चाहि रहल छलाह से सर्वथा अपेक्षित छलैक, किन्तु समय नहि आयल छलैक अथवा सहनशीलताक माध्यमसँ जनमतकेँ अपना पक्षमे करबाक धैर्य नहि राखि सकलाह। ओमहर मैथिल महासभाक सङ्ग आ एमहर मैथिली साहित्य परिषदक सङ्ग एके बेर संघर्ष आरम्भ कै देलनि। महासभाक सङ्ग संघर्षक अर्थ छल मिथिलेशक सङ्ग संघर्ष, युग ओ सामन्तवादी छलैक, ताहि कारणेँ बेसी लोक विरोधीए वर्गमे भै गेलथिन। साहित्यकार लोकनि महासभाक नीति अथवा नाममे परिवर्तनक पक्षपाती छलाह। एहिठाम एहि उक्तिक पुष्टिमे ठाकुर सूर्यनारायण सिंहक निम्नलिखित उक्ति उद्धृत करै चाहैत छी।

१—भारती अंक २ पृष्ठ ७३।

ओ लिखैत छथि[1]......'यदि आइ मिथिलायांभवः मैथिलः ई मैथिल शब्दक वाच्यार्थ घोषित हो तँ हमरा दृढ़ विश्वास अछि जे मैथिल राष्ट्र सभाक श्रीगणेश अविलम्ब मैथिल महासभाक संरक्षणतामे भै सकैत अछि। लक्षणोसँ प्रतीत होइत अछि जे मैथिल शब्दक वाच्यार्थ ब्राह्मण कायस्थे तक सीमित रखने आब मिथिलेशक अखण्ड सत्ता मिथिलामे स्थापित नहि रहि सकैत छन्हि।'

ओहि कालमे राजपूत सभा,[2] कुशवाहा सभा, दुसाध सभा, तमोली सभा, कलवार सभा, हिन्दू सभा, सनातनधर्म सभा, कुरमी सभा प्रभृति स्थानीय सभा अखिल भारतीय महासभा सबसँ सम्बद्ध भै रहल छल, जकरा सभक अधिवेशनो समय-समय पर होइत छलैक आ अखिल भारतीय सम्बन्धक कारणे एहि सभा सभमे हिन्दी व्यवहृत होइत छल तेँ मैथिलीक रक्षार्थ एक राजनीतिक संगठन, जकर भाषा मैथिली होइतो मैथिलीसँ इतर भाषामे बजनिहार पर प्रतिबन्ध नहि राखल जाइत, आवश्यक छल, एहि प्रकारक मंचक स्थापनामे यदि ओ अपन प्रतिभाक उपयोग करितथि तँ एहिसँ कत बड़ काज आगाँ ससरल रहैत, किन्तु ई तँ वैयक्तिक रुचि ओ प्रवृत्तिक बिषय थिकैक। तथापि महासभाक विरोधमे जाहि शक्तिक अपव्यय ओ कैलनि से शक्ति यदि मैथिलीक उत्थानमे लगा सकितथि तँ आइ मैथिलीक दोसर सृष्टि रहैत।

हुनक उग्रता सीतामढ़ी महासभाधिवेशनमे प्रगट भेल आ प्रतिक्रिया सेहो भेबे कैल। हिनका पर तीन गोट व्यंग्य चित्र ओहि समय मिथिला-मिहिर तथा भारतीमे प्रकाशित भेल। एकटाक शीर्षक छल महासभा विजयाभिधान वाचिक कान्ति टुटपुजिया नेता तकरा नीचाँ एक पद्य छल—

'महासभा सागरमे उमरल पागक लहरि अपार
नोनक पुतली आबि रहल अछि जैबालए ओहिपार'

1—भारती पृ० ८७ (मैथिल राष्ट्र सभा)। 2—भारती पृ० ८६।

दोसर छल—साहित्य सरोज घर जाहि तपै छथि तकर नीचाँ एक पद्य अछि—

'रंग विरंगक परचा बँटलनि पिटलनि फूटल ढोल,
गारि आनकें जत पढ़लनि तत फूजल अपने पोल
एक न सुनलक लोक भुवनके अनुचित कथा अंधेर
जाहि अपन घर तखन तपै छथि हैत विभूतिक ढेर,

तेसर छलः—खिसिऐल-बिलाड़ि धुड़खुर नोचै, तकर नीचाँक पद्य छल—

'सिंहक कुलमे जन्म बिलाड़िक भेल भुवनमे हास
विवस भेल खिसियैल नोचै छथि धुरखुर व्यर्थ हताश'[1]

एहि प्रकारक आलोचना प्रत्यालोचनासँ आन प्रकारक जे बाधा होइत छैक से नगण्य नहि, तथापि एक टा लाभो अवश्य होइत छैक—पत्रपत्रिकाक पाठकमे रुचि जगैत छैक। यद्यपि भुवनजीक चिन्तन कुमार्ग गामिता दिस नहि छलनि, अपितु ओहि समय मैथिलत्वक मानदण्ड जे स्थिर कैल गेल, तकर कुफल मैथिलीभाषी एखनहुँ भोगि रहल छी।

एहि मानदण्डक आलोचना करैत भिक्षु नागार्जुन[2] लिखने छथि—मैथिल महासभाक सिद्धान्तानुसार मैथिल ब्रह्मण तथा कर्ण कायस्थ (?) मात्र सुच्चा मैथिल थिकाह। मिथिलाक सोमाक भीतर बसैत, मिथिलाक अन्न जलसँ निर्वाह करैत, विशुद्ध मैथिली बजैत भूमिहार, क्षत्रिय आदि अन्य जातीय क्यौ अपनाकें मैथिल कहताह त जातीय महासभा नाङ्गरि ठाढ़ कैक हुनका दीशि बधुअैत मुँह बिजुकौत! परिणामस्वरूप हुनका लोकनि अपना घर-आङन व्यवहृत भाषा-ठेठ मैथिली-कें मैथिल कहबामे अपन हेठी बुझै लागल छथि 'हम मैथिल नहि बिहारी थिकहुँ'—ई भावना हमरा लोकनिमे जाहि तेजोसँ पसरि रहल अछि, से देखि कोन मैथिल हृदय हैत जे आहत नहि भै रहल हो?......आब अनठैबाक युग नहि। अन्तमे 'महासभा'क विधाता वृन्दक सेवामे सविनय निवेदन जे हुनका

---

[1]—भारती-वसन्ताङ्क [illegible] [2]—श्री यात्री

लोकनि उदारतापूर्वक एहि अनुपेक्षणीय समस्या पर विचार करथु जाहिस राष्ट्रीय वातावरणमे श्वास-प्रश्वास लेनिहार कतिपय कर्मठ मैथिलक—हमरा विहारिये बनै दिय' एहि प्रकारक मर्मन्तुद वाक्य - वाण जननी मिथिलाक फाटल कोंढ़केँ औरो छिन्न - भिन्न नहि करै पबैन्हि[1] ! एहि पर विभूति सम्पादक-टिप्पणी अछि—जं तरुणक भावना किछु करैत करै अन्यथा—हनोज देहली दूरस्त ।[2]

कहबाक आशय ई जे एहि प्रकारक क्रान्तिक स्वर, जागरणक शंख ध्वनि चारू भागस आब रहल छल तकर मूल कारण यैह छल जे महासभाक नीति मैथिलीक हित विरोध दिस छैक से तीव्रतासँ अनुभव कैल जाइत छल। एक अज्ञात लेखकक आलोचना अछि—'बाल-वृद्ध-अनमेल विवाह तिलक-दहेज, राजभक्ति, पारस्परिक सहकारिता, संस्कार निर्माण, विद्या प्रचार, पंचैती सद्व्यय पर मौखिक व्याख्यान दै, सदाचारक प्रति सुखल सहानुभूति प्रकट करबे टा जातीय सभा सभक सनातन धर्म भै रहल अछि ।'[3]

एहि प्रकारक भावनाक अभिव्यक्तिक माध्यम बनि विभूति मैथिलीक आन्दोलनकेँ कम बल नहि देलक। एहू रीतिएँ यदि एतेक बल देलक त एहिसँ आन प्रकारेँ आरो बेसी बल दै सकैत आ समस्याक समाधान करा सकैत से भिन्न बात थीक।

यद्यपि एक तरुण संघक स्थापनाक सूचना सेहो भेटैत अछि जकर एक आवश्यक निवेदन हिन्दीक माध्यममे छपल। एकर अध्यक्ष छलाह बाबू भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' आ एही संघक तत्वावधानमे सीतामढ़ी महासभाधिवेशनमे विरोध प्रदर्शन कैल गेल छल। आवश्यक निवेदनमे एक ठाम अध्यक्ष लिखैत छथि—

१—विभूति अंक १२ पृ० १८। २—विभूति अंक १२ पृ० १९। ३—विभूति, अंक १२ पृ० २१।

'संघने फिलहाल संगठन, प्रचार, बाल विवाह निषेध तथा देवोत्तर बिलोंकी कार्य रूपमे परिणति एवं अगली महासभामे अपनी शक्ति का अधिकाधिक प्रदर्शन जैसे कुछ कामों को चुन लिया है।......प्रचारके लिए हमारे पास अपनी पत्रिका विभूति—का साधन मौजूद है जिसे एक तरह से संघ की मुख पत्रिका ही समझनी चाहिए।...संभव है कि हमे भविष्यमे विभूति को साप्ताहिक रुप भी देना पड़े, हमे इस स्थितिके लिए तैयारी करनी है।'[1]

एहि अंकमे भवनाथ शर्मा नामे एक संकल्प शीर्षक पद प्रकाशित अछि—'सत्य-समर रत रहि सतत, हम निश्चय जय, पैब, सुरदुर्लभ यश लूटिवा अमरपुरी हम जैब तुच्छ शृगालक क्रन्दने भै न सकब हम म्लान, जँ 'घन-धुनि' सुनि पड़त त गरजब सिंह समान छी पाथेय विहीन हम, एकाकी असहाय, स्वप्नहुँमे 'मृगपति'क मन ई चिन्ता न समाय ढाहि गुमानीक मान-गढ़, दुर्जन शेखी झारि, थापव नीतिक राज हम सिंह समान दहारि'[2] एहि सब पंक्तिमे यदि लेखकक दृढ़ता, निर्भीकता ओ अन्तरक ज्वालामुखी दर्शन होइत अछि तँ संगहि जिद्द सेहो देखि पड़ैछ जाहि कारणेँ एक तेजपुंज उज्ज्वल प्रतिभा अकालमे मुरझा गेल आ जकर क्षति मैथिलीकेँ उठाबै पड़लैक। यदि एहि प्रकारक शक्तिक सदुपयोग भै सकैत तँ निश्चित रुपेँ मैथिलीक सोझाँ आइ जे समस्या सब ठाढ़ अछि से तिरोहित भै गेल रहैत।

प० श्रीसुरेन्द्रझा 'सुमन'क सम्पादकत्व तथा संरक्षणमे 'स्वदेश' मासिक पत्र प्रकाशित होमै लागल जकर मासिकक रूपमे ६ गोट मात्र अंक प्रकाशित भेल किन्तु ई कोनो पारस्परिक संघर्षमे नहि फसल। ई जाहि प्रकारक स्वस्थ साहित्यक सर्जनमे समर्थ भेल तकर प्रमाण ई थिक जे १९४९ मे आबि जखन मातृभाषाक रूपमे मैथिलीकेँ स्वीकृति भेटलैक आ मैट्रिक परीक्षाक हेतु जे गद्य-संग्रह संकलित कैल गेल ताहिमे अधिकांश गद्य एही पत्रसं लेल गेल।

१—विभूति वर्ष २ अंक १,२। २—विभूति अंक १,२ पृ० १।

बादमे चलि १९५५मे एकर दैनिक संस्करण प्रकाशित करबाक योजना बनल, तीनमास धरि प्रकाशितो भेल, जे शुद्ध जनबलक आधार पर चलि रहल छल, जे एक प्रकारक अद्‌भुत क्रान्ति अनलक, मैथिलीक प्रगतिक इतिहासमे ई अपूर्व योग-दान कैलक। मैथिलीभाषी जनताक शक्तिक ओ जागरणक प्रतीक ई पत्र बूझै जाय लागल। महामहोपाध्यायडाक्टरश्रीउमेशमिश्रजी एकर साक्षी छथि जे एहि पत्रक प्रकाशनसँ दिल्ली पर्यन्त चिन्तित भै उठल छल। स्वयं राष्ट्रपति एकर गति-विधिपर सतर्क दृष्टि रखैत छलाह[1]। एहि पत्रक पाठक एक पानवला, जुत्ताक मरम्मति कैनिहारसँ लै देहाती क्षेत्रक अत्यल्प शिक्षित गृहस्थ पर्यन्त छलाह आ दू हजार धरि एकर प्रति प्रतिदिन विका जाइत छल! एकर सम्पादक मंडलमे छलाह—प्रो० श्रीधर्मप्रियलाल, प्रो० श्रीश्रीकृष्ण मिश्र, डा० श्रीसूर्यकान्तठाकुर, प० श्रीकांचीनाथझा 'किरण', श्रीचन्द्रनाथमिश्र'अमर' एवं प्र० सम्पादक श्रीसुरेन्द्रझा'सुमन'।

मासिक रूपमे एकर प्रकाशन १९४८ मे आरम्भ भेल। प्रायः विभूति ओ भारतीक प्रकाशन बन्द भेलाक बाद एहि क्षेत्रमे शिथिलता आबि गेल। प्रथम अंकक सम्पादकीयमे 'स्वदेश'क उद्देश्य पर प्रकाश दैत सम्पादक लिखैत छथि—

'आब जखन स्वाधीनताक सुप्रभात भेल अछि, मिथिला उपेक्षित नहि रहौ, अपन अधिकृत-स्थानमे पुनः प्रतिष्ठित होऔ—देश स्वदेशकेँ नहि मेटाबौ संगहि 'स्वदेश' देशक परिधिमे सहयुक्त भै दिन-प्रकाशक तुल्य समन्वित रहौ। स्वदेश एही पवित्र उद्देश्यकेँ आगाँ राखि कार्य-क्षेत्रमे प्रवृत्त भेल अछि।' पुनः ओ आगाँ लिखैत छथि—

'गत आठ दश वर्षक दीर्घ अवधिमे मैथिलीक स्वतन्त्र पत्रक प्रकाशन नहि होयब, अत्यन्त विस्मयकर घटना थीक। जाहि मिथिलाक समस्त

१—महामहोपाध्यायजी दरभंगा मेडिकल कालेज मैथिली साहित्य परिषदक १९६१ क वार्षिक अधिवेशनक अध्यक्ष पदसँ भाषण करैत एहि प्रसंगक चर्चा कैने छलाह।

व्यापक प्रश्न सभ उपस्थित छैक—साहित्य-संस्कृतिक ओ भाषा लिपिक संरक्षण-संवर्द्धन, प्रान्तक प्रश्न, मिथिला विश्वविद्यालयक निर्माण कोशी-समस्या आदि विशाल कार्य-क्रम छैक तकरा हेतु मैथिलीमे दैनिक ओ अनेक साप्ताहिकक कोन कथा, मासिक पत्रौक अभाव की असह्य यन्त्रणा नहि थीक? मर्मक व्यथा नहि थीक?' एहीमे जे दैनिकक स्वप्न श्रद्धेय श्रीसुमनजी देखने छलाह तकरा साकार रूप देबाक हेतु ओ पुनः अक्टूबर १९५५ मे उद्यत भेलाह आ दैनिक स्वदेशक दोसर अंकमे एहि उक्तिकेँ दोहरौलनि।

प्रत्येक पत्रकार ओहि दिन धरि अपन समस्त शक्ति लगाय मातृभाषाक अभिवृद्धिमे साधनारत रहलाह अछि। हिनक दू शब्द आरो देखू तँ एहि उक्तिक सार्थकता प्रतीत हैत। ओ आगाँ लिखैत छथि—'स्वदेश अमरताक दावा तँ नहि करैछ, क्यौ कैओ ने सकैछ किन्तु रक्तक अन्तिम विन्दु पर्यन्त संघर्षक भावना लें ई कार्य-क्षेत्रमे प्रवृत्त भेल अछि।'[1]

दैनिक 'स्वदेश'क प्रथम अंकमे सम्पादकक ई उक्ति—'स्वदेश' यदि उत्तर नहियों द सकल प्रश्नो मात्र ठाढ़ कै सकल तँ एकर लक्ष्य सिद्ध रहतैक' से एक प्रश्न धरि अवश्य ठाढ़ भेल। दैनिकक कुल ६५ गोट अंक अढ़ाय मासक अवधिमे प्रकाशित भै सकल परन्तु एही अढ़ाय मासमे समस्त वातावरणमे ओ जाहि प्रकारक उत्साह तथा आम्रेड़न आनि सकल से विरोधी वर्गक हेतु चिन्ताक विषय अवश्य बनि गेल आ से उचितो छल, कारण बिहारमे मैथिलीकेँ माथ उठौला सन्ताँ परीक्षा समिति, विश्वविद्यालय आदि क्षेत्रमे हिन्दोक जे एकच्छत्र राज्य, जाहि माध्यमसँ पाठ्य पुस्तक, परीक्षकता आदि आदि मार्गे आयक श्रोत बनल रहै, तकर ह्रासक संभावनोसँ हुनका सभक आत्मा कोना नहि डोलि जाइनि?

दैनिक 'स्वदेश'क प्रकाशन एक भावनाक प्रवाहमे भेल छल आ एहि पाछाँ ई विश्वासो काज करैत छल जे क्यौ ने क्यो एहन वीर पुरुष 'स्वदेश'क

१—दैनिक स्वदेश अंक २ पृष्ठ २।

व मंठतासँ प्रभावित भै आगाँ औताह आ एकर आर्थिक समस्याक समाधान कै एकर दीर्घ जोवी बनैबामे सहायक बनताह. मुदा से विश्वास आकाश-कुसुमे रहल। एकर प्रकाशनसँ प्रकाशक मंडलकेँ एतवा अनुभव अवश्य भेलनि जे सुदृढ़ आर्थिक भित्ति यदि हो तँ मैथिली पत्रक पाठक तैयार हैबामे विलम्ब नहि लागत आ एको वर्ष जँ नियमित रूपेँ दैनिक पत्र चलैत रहै त जतेक भ्रान्ति ओ विरोध मैथिलीक सम्बन्धमे अछि स्वतः तिरोहित भै जैत। संगहि ईहो अनुभव प्राप्त भेल जे दैनिक पत्र केवल जनबल (Man-power) नहि चला सकैछ ओहि हेतु अर्थबल (Money-power) चाही। ने जानि ओ दिन कहिया आबि सकत जहिया मैथिलीक दैनिकक प्रकाशन दिस व्यवसायी लोकनिक ध्यान जेतनि। कलम भजनिहार अपन समस्त रक्त अर्पणो कै दैनिककेँ दीर्घजीवी नहि बना सकैत छथि।

वैदेही ओ दर्शन

स्वदेश प्रकाशनक बाद एक प्रवाह पत्रक क्षेत्रमे फेर आयल आ सीतामढ़ीसँ पाक्षिक रूपे 'वैदेही'क प्रकाशन आरम्भ भेल, पटनासँ 'मिथिला ज्योति' आ प्रयागसँ 'बटुक' बाल-मासिक से चलै लागल। स्वतन्त्रता प्राप्तिक बाद सम्पूर्ण देशमे जे उत्साहक लहरि आयल छल तकर परिणाम स्वरूप मैथिली क्षेत्रक लोक निश्चित भै फोंफ कटैत छल जे आब तँ स्वराज्य भेलैक सब किछु भइए जेतैक किन्तु संविधान बनल तकर अष्टम अनुसूचीमे मैथिलीक कतहु चर्चो नहि भेल ने अद्यावधि भै सकल अछि। पछिला दशाब्दमे अनेक पत्र चलल, मिथिला दर्शन, मिथिला सेवक, चौपाड़ि, पल्लव, घीया-पूता, मिथिला-दूत, इजोत, किरण, अभिव्यंजना किन्तु एहि सबमे 'वैदेही' सबसँ वेसी काज कैलक अछि। वैदेहीक माध्यमसँ स्वस्थ साहित्यक सृष्टि सेहो भेल आ नव-नव साहित्यकारक सृष्टि सेहो वैदेही समिति एक प्रकाशन संस्थाक रूपमे सेहो बहुत साहित्यकेँ प्रकाशमे अनलक। जखन एकर संस्थापक प्रो० श्रीकृष्णकान्त मिश्र सीतामढ़ीसँ दरभङ्गा चन्द्रधारी मिथिला कालेजमे चल अयलाह तँ 'वैदेही' सेहो दरभङ्गे चल आयल आ पाक्षिकसँ ई मासिक पत्रिकाक रूप धारण कैलक तँ एक वर्ष धरि एकर सम्पादन करबाक

सुअवसर हमरो प्राप्त भेल। कहि सकैत छी जे आलोचना-साहित्यक विकास व्यापक रूपेँ एही ठामसँ आरम्भ होइत अछि। ओहि बिहाड़िमे जतेक पत्र आरम्भ भेल ताहिमे सबसँ दीर्घजीवी सेहो ई पत्र अछि, जेना-तेना ई आइधरि प्रकाशित होइत आयल अछि जाहि माध्यमसँ मैथिलीक प्रगतिमे सहयोग भेटैत रहलैक अछि, किन्तु जखनसँ एकर सम्पादन सम्पादक-मण्डलक अधीनस्थ कैल गेल तहियासँ एहिमे सम्पादकीय विचार नहि रहैछ जाहिसँ एकर नीतिक सम्बन्ध किछु कहल जा सकै।

एकर बाद दोसर पत्र 'मिथिला-दर्शन' अछि जे अद्यावधि चलि रहल अछि। ई दूनू पत्र पाठकेँ बरावरि यथेष्ट पाठ्य सामग्री दैत रहल अछि। एहि दूनू पत्रक प्रति वर्ष एक उपादेय विशेषांक प्रकाशित होइत रहल अछि। एवं प्रकारेँ मैथिलीक आन्दोलनकेँ पत्र-पत्रिकासँ बेजाय बल नहि प्राप्त होइक रहलैक अछि।

अभिनय ओ मैथिली

जन-साधारणक ध्यान आकृष्ट करबामे अथवा जन सामान्यक हृदयमे मातृभाषाक प्रति प्रेम उत्पन्न करबामे अभिनय एवं कवि-सम्मेलनक योगदान सेहो महत्त्वपूर्ण रहल अछि। यद्यपि वर्त्तमान कालमे सबसँ दरिद्र मैथिलीक नाटके साहित्य अछि तथापि एहि दशाब्दमे एकांकीक रचना अवश्य भेल अछि आ हिन्दीओ नाटकमे मैथिलीक एक एकांकी स्थान पबैत रहल अछि। मैथिली रंगमंचक विकास मैथिलीक आन्दोलनकेँ गति प्रदान करैत रहल। एहि प्रसङ्ग विस्तारक भयसँ एहि ठाम विशेष चर्चा नहि कै एतबे लिखि लोभ संवरण करब जे एहि प्रसङ्ग विशेष परिचय प्राप्त करबाक इच्छा रखनिहार वैदेहीक एकांकी-विशेषांक अंक १३५-१३६ देखथि जाहिमे रंगमंचक विकास पर प्रकाश देल गेल अछि। एखनहुँ मैथिलीक सब समस्या जकथक पड़ले अछि। ने संविधानमे स्थान, ने लोक-सेवा-आयोगक परीक्षामे स्थान, ने स्वतन्त्र विकासक हेतु मैथिलीक स्वतन्त्र आकाशवाणी केन्द्र, ने मिथिला विश्वविद्यालयक स्थापना, ने सब विश्वविद्यालयमे स्नातकोत्तर पठन-पाठनक

व्यवस्थे भै सकल अछि। नाटकक माध्यमसँ एहि समस्या सबस जनसाधारणकेँ परिचित कराओल जा सकैछ।

कवि-सम्मेलन ओ मैथिली

यद्यपि कवि-सम्मेलनक परम्परा आब पुरान पड़ल जाइछ, किन्तु विगत दू दशाब्दमे ई बड़ व्यापक भेल आ जनजीवनमे मातृभाषाक प्रति जागरूकता उत्पन्न करबामे एकरो बड़ महत्वपूर्ण स्थान छैक। विशुद्ध मैथिली कवि-सम्मेलन तँ मैथिलीभाषियो क्षेत्रमे सीमिते रहल अछि, किन्तु एहि युगक कतिपय कवि हिन्दीओ कवि-सम्मेलनक मंचसँ मैथिली-कविता प्रसारित कै एकर प्रचारमे सहायक होइत रहलाह अछि। यद्यपि हिन्दी कवि-सम्मेलनमे मैथिली कविता पाठक विरोध कैनिहार मैथिली प्रेमीक कमी सेहो नहि रहल अछि। ओ लोकनि विरोधमे तर्क दैत रहलाह अछि जे हिन्दी-बला हिन्दीक अन्तर्गत एक बोलीक रूपमे मैथिलीकेँ मानैत एकर स्वतन्त्र सत्ते समाप्त करै चाहैत छथि आ ताहि परसँ जँ हिन्दी कवि-सम्मेलनमे मैथिली कविता पढ़ल जाय लागल तँ हुनका लोकनिकेँ आरो बल भेटतनि। तथापि एहि तर्कक पाछाँ कोनो बल नहि देखि मैथिली क्षेत्रक विस्तारक दृष्टिएँ उदारचेता कवि लोकनि अपन काज करैत रहलाह आ एहिसँ ओहू क्षेत्रमे मैथिली पढ़बाक, सुनबाक रुचि उत्पन्न भेल जे क्षेत्र अपनाकेँ (भ्रम-वश) अमैथिली भाषी क्षेत्र बुझैत छल जेना मुंगेर, मुजफ्फरपुरक किछु भाग, संताल परगना आदि। व्यक्तिक अनुभवक आधार पर कहबाक साहस कै सकैत छी जे बहुतो हिन्दी कवि-सम्मेलनक मंचपर मैथिली कविता अपन रंग जमा कै रहल अछि आ बारंबार ओहि क्षेत्रमे मैथिली कविक आह्वान होइत रहलनि अछि।

कवि सम्मेलनक अवसर होइत रहल अछि कोनो संस्थाक वार्षिक अधिवेशन ओ राजनीतिक हो वा सामाजिक, शैक्षणिक वा सांस्कृतिक। मैथिलीक कवि लोकनि एकमात्र मैथिलीक प्रचारक दृष्टिएँ जाहि-जाहि कठिनता, असुविधा ओ श्रमसँ संघर्ष करैत रहलाह अछि से कोनो भाषा साहित्यक इतिहासमे कमे भेटि सकत। कम्यूनिष्ट पार्टीक सभा हो की

सोशलिष्ट पार्टीक, सहकारी कवि सम्मेलन हो वा विकास सम्मेलन, सर्वोदय-वादी सभा हो अथवा घोर प्रतिक्रियावादी मैथिलीक कविबन्धु 'सुख-दुःखौ समौ कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ' एहि गीता वाक्यक अनुसरण करैत मैथिलीक नामपर अपन सर्वस्व अर्पण करैत रहलाह अछि। निश्चितरूपें कहल जा सकैछ जे आइ यदि राजनीतिक संगठन सभक ध्यान मैथिलीक दिसि आकृष्ट भेलैक अछि तँ एकर मुख्य श्रेय एही कवि-सम्मेलनकें छैक।

जनसाधारण ओ मैथिली

१९५१ मे जे जन-गणना भेल ताहिमे मैथिली भाषी जनता स्वतन्त्र देशक कर्णधार लोकनिक विश्वासपर निश्चिन्त रहल आ प्रतीक्षामे रहल जे जँ १९११ मे एक कोटिसँ अधिक मैथिली भाषीक संख्या छल तँ जाहि अनुपातें देशक जनसंख्यामे वृद्धि भेल अछि ताही अनुपातमे एहू क्षेत्रक भेल हैत। किन्तु एहि जन-गणना कालमे मैथिलीकें उदरसात् करबाक षड्यन्त्रमे पूर्णरूपें सतर्क छलाह। परिणामस्वरूप ओहि बेर मैथिली भाषीक संख्या लाखो नहि पूरि सकल। १९६१ मे जे जनगणना भेल ताहिमे मैथिली-भाषी क्षेत्र पूर्ण सजग रहल, मैथिलीसँ सम्बन्ध रखनिहार प्रत्येक संस्था एकदम जागरूक रहल. मैथिल महासभा, मैथिली साहित्य परिषद, मैथिली संघ आदि अखिल भारतीय संस्थासँ अपील बहार कै, पोष्टकाड अभियान चलाय, पोस्टर ओ पर्चा साटि ओ बाँटि बच्चा-बच्चाक ध्यान मातृभाषाक रक्षाक दिश आकृष्ट कैलक। एक अद्भुत जागरण एहि कालमे आयल। तथापि मैथिली विरोधी तक एतेक दूर धरि सक्रिय छल जे पहिने गणक लोकनिके भयभीत करैत रहल, बेचारे प्राथमिक पाठशालाक शिक्षक जीविकाक भयसँ बहुतो ठाम तँ मैथिलीक उल्लेखे नहि कैलनि किन्तु तखबा आन्दोलन चलि रहल छल जे बहुतो शिक्षक साहस कै लिखबो कैलनि तँ रिपोर्ट देलाक बाद जनगणना कार्यालयने मैथिलीक बदलामे हिन्दी लिखबाक कुचक्र चलै लागल, किन्तु एकर पता लगैत देरी परिषद्क दिशसँ एक प्रतिनिधि मंडल, जाहिमे प० श्रीहरिनाथमिश्र एम० एल् एड (सम्प्रति चिकित्सा मन्त्री), श्रीसुधांशुशेखरचौधरी, सम्पादक मिथिलामिहिर तथा

•एहि पंक्तिक लेखक छलाह, मुख्य मन्त्री प० श्रीविनोदानन्दझासँ भेट कलक•

१—ओहि अवसरपर परिषद् द्वारा जे स्मृति-पत्र अर्पित कैल गेल छल तकर रूप छल—

माननीय मुख्य मन्त्री महोदय, विहार सरकार, पटना।

मान्यवर,

१९६१क जन-गणनामे मैथिली भाषाक प्रति पूर्णतः न्याय हो, मातृ-भाषाक स्थानमे समुचित अंकन हो तथा 'जनगणनाक मूल उद्देश्य पर कोनो प्रकारक आघात नहि हो तदर्थ अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद्, दरभङ्गा सजग रहि जन भावना जाग्रत करैत रहल। किन्तु जनगणना कालेस एमहर किछु मैथिली विरोधी पत्र-पत्रिका तथा कतिपय विश्वसनीय समाचार आदिसँ परिषद्कें आशंका भै रहल छैक जे मैथिलीक विरोधमे षडयन्त्र एखन धरि चलिये रहल अछि। सुनबामे आबि रहल अछि जे जनगणनामे गणक द्वारा संकलित कार्डमे अंकित मैथिलीक स्थानापन्न हिन्दीक नामोल्लेख करबाओल जा रहल अछि। एहि जनरवस मैथिली-भाषा-भाषीमे क्षोभ ओ आतङ्क व्याप्त भै रहल अछि संगहि परिषद्कें अतीतक तीन अनुभव छैक जाहि आधार पर एहि जनरबकें निर्मूल मानबाक हेतु उद्यत नहि अछि। कोनो कारणेँ यदि विहारमे हिन्दी एवं मैथिलीमे संघर्ष होइत रहल तँ विहारक हेतु वस्तुतः ई दुर्भाग्यक विषय हैत। अतएव श्रीमान्‌स निवेदन जे

(क) भारतीय संघक संविधानानुसार मैथिलीभाषाभाषीक नागरिक अधिकारक रक्षा कैल जाय।

(ख) गणक द्वारा जाहि अंकित कार्ड पर स्पष्ट निर्देश अछि ताहिपर भाषान्तरक उल्लेख नहि कैल जाय एहि हेतु वरिष्ठ राजकीय कर्मचारी नियुक्त कैल जाथि।

(ग) मैथिली एवं हिन्दीक सम्बन्धमे राजनीतिक चालि चलनिहार लोकनिक प्रति सरकारकें सतर्क रहब आवश्यक जाहिसँ बिहार राज्यक भविष्य संघर्षमय नहि हो, मैथिलीक विरोधमे अनेक रूपेँ षड्यन्त्र होइत रहल अछि जाहिसँ परिषद् पूर्ण अवगत अछि एवं ओही समस्याकें ध्यानमे रखैत ई सांकेतिक निवेदन कै रहल अछि जे ओहि रूपक विद्वेषवर्द्धक प्रवृत्तिपर रोक लगाओल जाय।

ओ हुनक आश्वासन पाबि आश्वस्त भेल, यद्यपि एखन धरि ओहि जनगणनाक रिपोर्ट प्रकाशित नहि भेल अछि जे वस्तुस्थितिक पता नीक जकाँ लागि सकै। एखनहुँ मैथिली भाषी क्षेत्र आशंकित अछिए जे निष्पक्षतापूर्वक मैथिली भाषी लोकक संख्या हैत वा नहि। एहि आन्दोलनमे आर्यावर्त्त स्तुत्य सहायता कैलक।

हिन्दी ओ मैथिली

मैथिली साहित्य अथवा मैथिली साहित्यकारक इतिहासपर दृष्टिपात कैला सन्ताँ ई कतहु दृष्टिगोचर नहि होइछ जे एहिठाम हिन्दी विरोधी भावना कहिओ रहल अछि। वीसम शताब्दीक आरम्भ काल धरि तँ

(घ) समय कम अछि। नित्य नवीन मैथिली विरोधी कार्यक समाचार परिषद्कें यत्र तत्रसँ विविध सूत्रसँ प्राप्त भै रहल छैक। अतएव श्रीमान्सँ मैथिली भाषाभाषी क्षेत्रक हेतु एक जाँच समितिक नियुक्ति कैल जाय जे तत्तत् क्षेत्रक जनगणना कार्यालयमे जाय वस्तुस्थितिक प्रत्यक्ष परीक्षण करथि तथा जनगणनाक अन्तिम प्रतिवेदन प्रस्तुत हैबासँ पूर्व अपन विज्ञप्तिक एक प्रति सरकारी कार्यालयमे एवं एक प्रति मैथिली साहित्य परिषद् दरभंगाकें पठैबाक कृपा करथि।

(च) मैथिली हिन्दीसँ सर्वथा स्वतन्त्र एवं पूर्ववर्त्ती सर्वांगपूर्ण साहित्यिक भाषा थीक एहि बातक पुष्टि उत्तरीय भाषा विज्ञान सम्बन्धीमे अनेक ग्रन्थमे भै चुकल अछि। भाषा विज्ञान विशारद लोकनि यथा डा० जॉर्ज ग्रियर्सन, डा० सुनीतिकुमार चटर्जी, डा० कालिदास नाग, कालब्रुक, प० किशोरीदास बाजपेयी, डा० श्री सुभद्र झा आदि मैथिलीक स्वतन्त्र सत्ता प्रमाणित कै चुकल छथि अतएव एहि सम्बन्धमे व्यर्थ घमर्थनि करब उचित नहि।

(छ) जाँच समितिमे प० श्री हरिनाथ मिश्र एम्० एल्० ए०, श्री कर्पूरी ठाकुर एम्० एल० ए तथा श्री बालेश्वर राम संसदीय सचिव, यदि राखल जाथि तँ परिषद्क सन्तोष एवं जनताकें आश्वासन हेतैक।

हस्ताक्षर—श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर', सदस्य

श्रीसुधांशुशेखरचौधरी, सं० मन्त्री

ककरो ई आशंको नहि छलैक जे हिन्दीसँ मैथिलीक हित विरोध कहिओ हेतैक। आधुनिक युगक आरम्भ जाहि कवीश्वर चन्दाझासँ होइत अछि ओहू युगक साहित्य मनीषी लोकनि सामान्य रूपेँ एहि दूनू भाषामे रचना करैत छलाह, किछु हिन्दीक स्वार्थी साहित्यकार, जे हिन्दीक साम्राज्यवादक अनुचित स्वप्न देखि रहल छथि, जाहि रूपेँ आइ मैथिलीक विरोधमे हिन्दीक श्रेय देखि रहल छथि, ओहि युगमे रहितथि तँ निश्चय मिथिलामे हिन्दीक वैह दुर्गति भेल रहैत जे एखनहुँ बंगालमे अछि। ओहिठाम ककरो कह्ला नहि अलगैत छनि आ 'ग्रास दी बाम नहि दी' एहि कहबीक अनुसरण मैथिलीभाषी क्षेत्र नहि कैलक, तकर परिणामस्वरूप आइओ मैथिलीक दुर्गति भइए रहल अछि। मैथिलीभाषी क्षेत्रमे हिन्दीक विरोधक भावना अवश्य अंकुर रूपेँ अछि, जकर दायित्व तथाकथित हिन्दीक कट्टर-समर्थक लोकनिपर छनि, जे लोभक संवरण नहि कै सकलाह अछि। यद्यपि ई स्थिति राष्ट्रभाषाक रूपमे हिन्दीकेँ प्रतिष्ठापित करबामे बाधके होइत अछि, साधक नहि। तथापि ई क्रम एखनहुँ चलिए रहल अछि, जे खेदक बात थीक।

एहि प्रकारक विरोध भावनाक अन्त हो, तदर्थ दरभंगामे विद्यापति गोष्ठी नामक एक संस्था १९४८ मे स्थापित भेल, जे 'विद्यापतिके देशमे' नामक एक कविता संग्रह सहकारिताक आधारपर प्रकाशित कैलक, जाहिमे हिन्दी ओ मैथिलीक रचना संकलित कैल गेल अछि। ओकर भूमिकामे दूनू भाषा एक दोसरक कोन रूपेँ पूरक थीक, ताहिपर एहि पंक्तिक लेखक प्रकाश देने छथि। एहि पुस्तकक सम्पादक-मण्डलमे आचार्य श्रीजगन्नाथ प्रसाद मिश्र, आचार्य श्रीसुरेन्द्रझा 'सुमन' ओ हमर नाम अछि। एहि प्रयाससँ दरभङ्गाक वातावरणमे अवश्य नरमी आयल, किन्तु डा० राम-विलास शर्मा 'हिन्दी बनाम मैथिली' शीर्षक निबन्धमे, जे 'पाटल' नामक पटनासँ प्रकाशित हिन्दी मासिक पत्रमे प्रकाशित भेल छल, मैथिलीके अपना जनैत गीड़ि लेलनि, किन्तु हुनक उत्तर आर्यावर्त्तक माध्यमसँ श्री नागार्जुनजी बड़े विलक्षण रूपेँ देने छलथिन। 'भ्रम इसी को कहते हैं'

शीर्षक एक लेख हमरो प्रकाशित भेल छल, जकर मैथिली रूपान्तर सेहो प्रकाशित भेले छल।[1]

ओही प्रकरणमे गान्धीवादी दर्शनक सर्वश्रेष्ठ ज्ञाता आचार्य काका कालेलकर 'मंगल प्रभात' नामक मासिक पत्रक सम्पादन करैत छलाह। कालेलकर साहेब विशिष्ट भाषा-शास्त्री गनल जाइत छथि आ वर्धा स्कीमक आधारपर जे 'बुनियादी तालीम' (Basic Education) देल जाइत अछि, तकर ओ आचार्य मानल जाइत छथि। तेँ दरभंगासँ एक मातृभाषाप्रेमी पत्र लिखने छलथिन, जाहिमे बुनियादी पाठशालामे मातृभाषा मैथिलीक माध्यमसँ शिक्षा नहि देबाक कारणे छात्र लोकनिकेँ जे कठिनता होइत छनि, तकरा दूर करबाक अनुरोध कैने छलथिन। कालेलकर साहेब उत्तरमे लिखने छलथिन। तकर मुख्यांश अवन्तिका नामक मासिक पत्रक सम्पादक श्रीलक्ष्मीनारायण 'सुधांशु' (सम्प्रति अध्यक्ष बिहार विधान सभा) सम्पादकीयमे उल्लिखित कै कालेलकर साहेबक जिज्ञासाक पूर्ति कैने छलथिन, जकर सारांश एतबे छल जे 'मैथिली वस्तुतः अवधी, ब्रजभाषा, राजस्थानी आदि जकाँ एक हिन्दी परिवारक बोली मात्र थीक, जे क्रमशः हिन्दीक पेटमे समायल जा रहल अछि, तथापि किछु राजनीतिक प्रधान विचार रखनिहार एहि माध्यमसँ स्वार्थ-सिद्धिक फेरमे लागल छथि।' किन्तु ई बात सर्वथा उनटा कहल गेल। ई सत्य जे मैथिली क्षेत्रकेँ बलजोरी हिन्दीक क्षेत्र बनैबाक कुचक्र राजनीतिक साहित्यकार लोकनि कम नहि करैत रहलाह अछि। कालेलकर साहेबक मैथिलीक प्रति की धारणा छनि से हुनका उत्तरेसँ स्पष्ट अछि। ओ लिखने छलथिन—

'मैं जानता हूँ कि मैथिली भाषामे मध्यकालमे उच्च कोटि का साहित्य लिखा गया। मैं जानता हूँ कि कलकत्ता आदि युनिवर्सिटियों में मैथिली भाषा का उच्चतम कक्षा की परीक्षाओं के लिये अध्ययन होता है। मैं यह भी जानता हूँ कि पूर्व भारत में मैथिली भाषा काफी लोगों की जनभाषा

१—वैदेही वर्ष ४ अंक ७

थानी मातृभाषा है। लेकिन मैं यह नहीं जानता कि मैथिली भाषा के बोलने वाले लोगों ने उस भाषा में कोई मान्य दैनिक, साप्ताहिक या मासिक चलाये हैं या नहीं। आजकल मैथिली भाषा में उपन्यास, लघुकथा, निबन्ध, प्रवास वर्णन, पाठ्य पुस्तक आदि लिखी जाती है या नहीं।...

...मैथिली भाषा का महत्त्व मुझे मान्य है। करोड़ लोगों की मातृभाषा की अपेक्षा नहीं होनी चाहिये। भारत की मान्य भाषा की संख्या घटाने की नीति जो चलाते हैं उनके साथ मैं सहमत नहीं हूँ।"[1]

महात्मा गान्धीक सिद्धान्तक कट्टर अनुयायी एक विशिष्ट भाषाविद् कहैत छथि ततबे नहि, निष्पक्ष रूपें विचार कैनिहार सब एकर अस्तित्व स्वीकार करैत छथि। एहि प्रसङ्ग राष्ट्रभाषाक प्रथम व्याकरण प्रणेता पं० श्रीकिशोरीदास वाजपेयी सन चिन्तनशील भाषाशास्त्रीकें हम पत्र द्वारा पुछने छलिऐनि तँ ओ उत्तरमे एतबे लिखलनि—'मैथिली एक स्वतन्त्र भाषा है भले ही इसके बोलने वाले थोड़े ही हों।' मिथिला सांस्कृतिक परिषद् कलकत्ता द्वारा प्रकाशित 'मैथिली भाषा आ साहित्य' शीर्षक ग्रन्थमे श्रीवाजपेयीजी मैथिलीक सम्बन्धमे अपन विस्तृत विचार व्यक्त कैलनि अछि।

श्रीशिवदान सिंह चौहान अपन 'हिन्दी-साहित्य के अस्सी वर्ष' नामक इतिहासमे हिन्दीवला लोकनिक हाहूतीपनाक भण्डाफोड़ करैत, क्षेत्रीय भाषा सभक स्वातन्त्र्य रक्षापर जे दृढ़तापूर्वक विचार व्यक्त कैने छथि, सैह सब मैथिलीक पक्षक समर्थन करैत अछि। तथापि मैथिलीक अस्तित्वके समाप्त करबाक हेतु ई तथाकथित हिन्दी-समर्थक लोकनि आकाश पाताल एक करबासँ एखनहुँ पैर पाछु नहि करै चाहैत छथि। किन्तु जतबाक विरोध उग्र भेल गेल, मैथिलीभाषी अधिक शक्ति संचय करैत गेलहुँ अछि, आन्दोलनमे तीव्रता अबैत गेल अछि।[2] आब ई विश्वास करबाक पर्याप्त

१—अवन्तिका अप्रैल १९५६ सम्पादकीय।

२—अवन्तिका जुलाई १९५६ मैथिली भाषा है।

कारण देखि पड़ैछ जे मैथिलीक स्वतन्त्र सत्ताक अपहरण नहि भै सकैत अछि। जेना चेतना समिति बिहारक राजधानी पटनामे रक्षार्थ कटिवद्ध अछि आ ओकरा प्रयासेँ राजधानीओमे जाहि प्रकारक चेतना जागि रहल अछि, प्रत्येक शिक्षण संख्यामे मैथिली साहित्य परिषद् स्थापित भै चुकल अछि, मातृभाषामे परस्पर वार्त्तालाप करबामे जे गौरवक बोध लोक करै लागल अछि--जखन एहिसँ हीनताक बोध पहिने होइत छलैक– छोट-छोट बच्चा पर्यन्त सजग होमै लागल अछि तथा विद्यालय ओ विश्वविद्यालयमे छात्रक संख्या बढ़ि रहल अछि तँ निश्चय एक दशाब्दसँ बेसी आब कोनो शक्ति मैथिलीकेँ अधिकारसँ वंचित नहि राखि सकैत छैक।

विद्यापति स्मृति-पर्वक योगदान

जहिना आन तत्त्व मैथिलीक आन्दोलनकेँ गति प्रदान करैत रहल अछि, तहिना विद्यापति नामक जादू अपन असरि देखौलक अछि। ई स्मृति-पर्व मनैबाक परम्परा बहुत प्राचीन नहि थीक। १९२७ मे एहि सम्बन्धमे जे विचार व्यक्त कैल गेल छल से देखू[1] आ आइ जे एकर व्यापकता अछि, ताहि दूनूक तुलना करू तँ अनुमान हैत जे मैथिलीभाषी क्षेत्र कतेक पश्चात् पद बनल छल। ओही वर्ष विद्यापति स्मृति पर्व मनैबाक आयोजन भेल आ १९३५ मे विद्यापति सम्बन्धी प्रतियोगिता लेखक हेतु म० म० डा० श्री उमेशमिश्रजीक लेख सर्वप्रथम घोषित भेलनि, जाहिपर १००) टाका पुरस्कार देबाक घोषणाक सूचना सेहो भेटैत अछि।[2] तदुत्तर कतहु तँ विद्यापति जयन्ती नामेँ आ कतहु विद्यापति स्मृति पर्व नामें ई आयोजन होमै लागल। एहि कार्यमे एक दिस राज-पण्डित श्रीबलदेव मिश्र, श्री नरेन्द्रनाथ दासे आदि बड़ बेसी प्रयत्न करैत रहलाह, दोसर दिश जखन दरभंगामे 'विद्यापति गोष्ठी' नामक संस्था स्थापित भेल तँ ओ एक योजनाबद्ध कार्यक्रम अपनौलक।

१--मिथिला पृष्ठ ३१० सम्पादकीय टिप्पणी।
२--भारती पृष्ठ ३४।

विद्यापति स्मृति पर्वकेँ व्यापक बनैबाक हेतु साप्ताहिक कार्यक्रम आरम्भ कैलक। सर्व प्रथम महाकबिक जन्म - भूमि बिसपी, दोसर वर्ष सिद्धि-भूमि भवानीपुर आ तेसर वर्ष समाधि - भूमि विद्यापति नगरमे—जे पहिने बाजीदपुर नामेँ प्रसिद्ध छल, स्मृति - पर्वक आयोजन कैलक। ओमहर पं० श्री काञ्चीनाथझा किरणक प्रयासेँ सोतिपुरामे गामे गाम विद्यापति गोष्ठी संगठित भेल जे घूमि घूमि प्रतिमासक धवल त्रयोदशी तिथि कऽ सभा करै लागल। वैद्यनाथधाम, कलकत्ता, क्रमहि भारतक कोनो भाग पहन नहि रहल जाहि ठाम विद्यापति स्मृति पर्व व्यापक नहि भेल। सप्ताह, पक्ष पर, पक्ष, मास पर, मास ऋतु पर पहुँचि गेल अछि, किन्तु ओ तीनमास धरि चलैत रहैत अछि, विद्यापतिक स्मरण मैथिलीक स्मरण थीक, मैथिलीक स्मरण मातृभाषाक प्रति कर्त्तव्यक स्मरण करबैत अछि विद्यापति ओ मैथिलीक जे तादात्म्य से जन भावनाकेँ जाग्रत करबामे सहायक भेल अछि। तथापि सम्पूर्ण उचित अधिकारसँ वंचित रहलाक कारणेँ स्वतन्त्र भारतमे जेना अन्यान्य भाषा समृद्धि बढ़ा रहल अछि, ताहिमे ई अवश्य पछुआयल अछि।

विद्यापति नगरक प्रथमे आयोजनमे गोष्ठी द्वारा स्टेशनक नाम बदलबाक प्रस्ताव स्वीकृत भेल, तकर बाद मैथिल महासभाक अधिवेशनमे सेहो एहि प्रस्तावकेँ दोहराओल गेल। देशक कोन-कोनसँ एहि प्रस्तावक समर्थन भेल। बादमे रेलवे विभाग बाजीदपुर नाम बदलि विद्यापति नगर रखलक।

श्री नरेन्द्रनाथ दासक सत्प्रयासेँ १९५४ मे तत्कालीन राजस्व मन्त्री श्री कृष्णवल्लभ सहाय बिसफीक यात्रा कैलनि। ओहि ठाम ओ दू बातक आश्वासन देलनि। एक तँ विद्यापति स्मारकक निर्माण कराओल जैत, दोसर कमतौलसँ बिसफी धरिक मार्ग, जे एखन दुर्गम अछि से, पक्की सड़क बनवाय सुगम बना देल जैत जाहिसँ तीर्थ यात्री अथवा अन्य भागक पर्यटककेँ महाकविक जन्मभूमिधरि पहुँचबामे कोनो कठिनता नहि रहि जाइनि। समाचार पत्रमे घोषणा प्रकाशित भेल। मैथिली भाषी क्षेत्रमे उल्लासक एक झोंक बहि गेल, किन्तु आइ धरि लोक मुँह तकिते अछि। विद्यापतिक जन्म स्थान दुर्गम बनले रहल।

एकबेर विद्यापति जयन्तीक अवसर पर विहारक तत्कालीन राज्य पाल श्री रंगनाथ रामचन्द्र दिवाकर बाजल छलाह जे विधान वञ्चित भाषामे मैथिली-सबसँ विशेष महत्त्वक अछि। साहित्य, सौष्ठव ओ लोक संख्या सभ दृष्टिएँ मैथिली उचित आदरक अधिकारिणी अछि। आ ओही वर्ष भारत सरकार द्वारा जे भाषा कमीशन नियुक्त भेल छल, तकर अध्यक्ष श्री खेर जे अपन विचार व्यक्त कैने छलाह ओ मैथिली भाषाक नामोल्लेख तँ नहि कैलनि, मुदा विधान - वंचित भाषाक उपेक्षा नहि हो तदर्थ सरकारसँ अनुरोध कैने छलथिन। ताहिसँ मैथिलीक पक्षक समर्थन भेल। ओहि प्रसङ्ग दैनिक स्वदेशक प्र० सम्पादक पं० श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' जे विचार व्यक्त कैने छलाह ओहिसँ स्पष्ट होइछ जे एक मात्र राजनीतिक नेता लोकनिक उदासीनताक कारणेँ मैथिली एखन धरि उपेक्षित स्थितिमे अछि। हुनक विचार देखूः—

'एकता नाम-माला जपने देशमे एकता संभव नहि। भारतक अखण्ड रूप, अखण्ड विचार ओ अखण्ड संस्कृतिक रक्षालेल खण्ड खण्डक समस्याक समाधान करै पड़त। हर्ष अछि जे एखनहु देशमे निष्पक्ष रूपेँ एहि दिस दृष्टि रखनिहारक सर्वथा अभाव नहि भेल अछि, ओ तेँ निराशाक अन्धकारहुमे आशाक रश्मि रेखा चमकि उठैछ।'

एहि उक्तिमे अभावक संग सर्वथा विशेषण इंगित करैत अछि जे स्वतन्त्रता प्राप्तिक बाद देशक वातावरण एहि रूपेँ तीव्रतासँ बदलि रहल छल जे विद्या ओ धनसँ बेसी प्रतिष्ठा सत्ताक बढ़ि रहल अछि। आइ कोनो विद्वानक अथवा श्रीमानक से महत्त्व नहि रहि गेलनि अछि जे महत्त्व सत्ताक लस्सासँ कुर्सीमे सटल व्यक्तिक छनि। समस्त वायुमण्डल अपवित्र राजनीतिक दुर्गन्धसँ एहि रूपे गन्हा रहल अछि जे उचित अनुचित, न्याय अन्याय, सच्चरित्रता दुश्चरित्रताक कोनो मापदण्ड रहिए ने गेल अछि। 'गोआरेक कहने गाइक घिउ आ गोआरेक कहने महिसिक घिउ' जे कहबी अछि, तदनुसार आइ कोनो राजनीतिक कर्णधार नेता जकरा जे कहि देथिन से सैह भैं जाइत ताहिमे क्षोद-क्षेम करबाक अधिकार ककरो नहि, कारण हुनका लोकनिक मतेँ से संकीर्णता थीक, प्रान्तीयता तथा जातीयता थीक। श्रीसुमनजी आगाँ लिखैत छथिः—

'भारत सन विशाल राष्ट्रमे अनेक भाषा प्रचलित अछि। शताब्दी सहस्राब्दीक अन्तरालमे समाजविशेषक चिन्तन ओहिमे सुरक्षित छैक। कोनो एक भाषा यदि सभके उपटाय अपन प्रभुत्व जमबै चाहै तँ से कदाचितो संभव नहि। राष्ट्रभाषाकेँ एही दृष्टिकोणेँ देखै पड़त जे ओ सुमेरु जकाँ भाषाक मणि मालामे अवस्थित रहय। मालाक एक-एक दाना टूटय-झरय नहि। दक्षिणमे हिन्दीक विरोधक कारण एतबे भेलै जे द्रविड़ भाषीके सन्देह रहैत ऐतनि जे राष्ट्रभाषाक नाम पर हमर भाषाकेँ ने कदाचित स्थान-च्युत कैल जाय।'

द्रविड़ भाषीक ई आशंका निर्मूल नहि छनि, कारण हमरा लोकनि तँ प्रत्यक्ष फल भोगिए रहल छी। समय-समय पर राज नेता लोकनि जे घोषणा करैत रहलाह तकर आंशिको पूर्त्ति अद्यापि नहि भै सकल अछि। माध्यमिक कक्षाधरि मातृभाषाक माध्यम स्वीकार करितो पाठ्य ग्रन्थक प्रकाशनक सुविधा सरकार दिससँ नहिएँ भेटैल अछि। अधिकारीक रूपेँ नहि, किन्तु अनौपचारिक रूपेँ विहारक तत्कालीन शिक्षा मन्त्री कुमार गङ्गानन्द सिंहजीसँ—जखन हम अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद्क प्रधान मन्त्री छलहुँ—व्यक्तिगत रूपेँ पाठ्य ग्रन्थक जिज्ञासा कैने छलिऐनि तँ ओ उत्तर देने छलाह जे सरकार टेक्स्टवुक कमीटीकेँ चारिलाख टाका मैथिली पाठ्य पुस्तकक प्रकाशनक हेतु स्वीकृत करबाक विचार कै रहल अछि। ओ विचार एखनधरि सरकारक गर्भसँ वहिर्भूत हैबाक योग्य नहि भै सकल अछि। स्मरण राखक थोक जे पाठ्य विषयमे मैथिलीकेँ स्वीकृति भेटैक तदर्थ भेल आन्दोलनमे जे स्वयं अग्रसर छलाह से स्वयं जखन एक उत्तरदायी पद पर गेलाह तँ पार्टीक अनुशासनक कारणेँ ओहि नग्न सत्यकेँ स्वीकार नहि करा सकलाह। एहि क्षेत्रक प्रतिनिधिकेँ बजबाक साहस कोना भै सकैत छनि ? ई पार्टी अनुशासन केवल सत्तारूढ़े पार्टीकेँ रहलैक वा छैक से नहि। आनो राजनीतिक पार्टी मैथिलीक नाम पर खौंझाय लागल। विहार विधान सभामे प्रो०श्रीरमाकान्त झा, श्रीकर्पूरी ठाकुर, लोक-सभामे श्रीनारायण दास आदि एक आधवेर सुगबुगेबो कैलाह तँ वैह अनुशासन मुँह पर ताला भरि देलकनि।

साधारणतः देखल जाइछ जे एम्हरुको लोक जँ पुलिसमे भर्ती भेल त टुटलो फूटल भोजपुरीमे बजनाइ शुरू कै दैत अछि। जँ बाबाजी भै गेल त

'बच्चा कुछो बाबाको भेटैगा' येह विशुद्ध हिन्दी शुरू करत आ जँ कलकतिया बाबाजी बनल तँ ओ बंगलाक टाङ तोड़नाइ आरम्भ कै देत। तहिना जहाँ कोनो राजनीतिक पार्टीक सदस्यता स्वीकार कैलक की हिन्दीक हड्डी हिलबै लागत। किन्तु एहि मनोवृत्ति पर विद्यापति स्मृति पर्व हथौड़ीक काज कैलक अछि। एही माध्यमसँ मैथिलीभाषीक चेतनापर प्रकाश पड़ि सकल अछि आ १९५७ क॰ निर्वाचन कालसँ कतिपय नेता मत - प्राप्तिक हेतु मैथिलीक माध्यमे राजनीतिक सभामे भाषण आरम्भ कैलनि। एहि दिशामे सबसँ पहिने साम्यवादी पार्टी, तखन समाज वादी नेता डेग उठौलनि तकर बाद तँ कांग्रेसी नेता एहि सुयोगकेँ हाथसँ नहिएँ जाय दितथि। सरकारक जन-सम्पर्क विभाग सेहो परिवार नियोजन वला पुस्तिका मैथिलीक माध्यमसँ छपबौलक।

१९५७ क महानिर्वाचनसँ पूर्व जनसेवा - आयोगक परीक्षामे स्वीकृतिक घोषणा कैल गेल, एहि उपलक्षमे प्रस्तावक सिनेटर श्रीराधानन्दनझा, भूतपूर्व विधायकक स्वागत - संवर्द्धनाक आयोजन चन्द्रधारी मिथिला महा विद्यालयमे अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद्क प्रधान मन्त्रीक रूपमे प्रो० श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' केने छलथिन आ लहेरियासराय महारानी लक्ष्मी वती एकेडमीमे मैथिली छात्र परिषद्क दिस सेहो आयोजन कैल गेल छल, जकर अध्यक्षता पं० श्री नागेश्वर लिश्र एडबोकेट कैने छलाह आ डा० श्री लक्ष्मण झा उद्घाटन। किन्तु एखन धरि आयोगक परीक्षाक हेतु पाठ्य पुस्तिका प्रस्तुत होइते अछि। आब सहजहि ओहि प्रस्तावकेँ आपस लै लेल गेल।

तेसर उदाहरण भेटैत अछि जखन १९५६ मे अखिल भारतीय मैथिली लेखक सम्मेलन आयोजित भेल छल। वैदेही समितिक तत्त्वावधानमे ई प्रथम सम्मेलन मैथिलीक प्रगतिक इतिहासमे महत्त्वपूर्ण स्थान रखैत अछि। एहि आयोजनक प्रेरणा प्राच्य विद्यामहासम्मेलनसँ लेल गेल। एहि ठाम ई हो उद्धृत करब अप्रासङ्गिक नहि हैत जे म० म० डा० श्रीउमेश मिश्रक सत्प्रयासेँ मैथिलीकेँ पी० ई० एन० तथा प्राच्य विद्या महासम्मेलनमे गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त भेलैक, जे दिल्लीक सरकारक आँखि फुजबाक हेतु

पर्याप्त थीक किन्तु सूतल ने जागै, जगलाहा तँ आरो मरकछ लाधि दैत अछि।

तँ ओहीसँ प्रेरणा लै जे मैथिली लेखक सम्मेलन भेल तकर अध्यक्षता विहार विश्वविद्यालयक तत्कालीन उपकुलपति स्व० श्यामनन्दनजी सहाय कैने छलाह आ ओही पदसँ विश्वविद्यालयमे 'विद्यापति चेयर' स्थापित करबाक घोषणा कैने छलाह।' ओ पुण्यात्मा स्वर्गवासी भेलाह आ ई प्रस्ताव पाताल पुरी चल गेल।

विहारमे सबसँ पहिने दोसर विश्व विद्यालयक स्थापना हो, तदर्थ मिथिला विश्वविद्यालयक आन्दोलन प० श्री हरिनाथ मिश्र एम्० ए०, जे एखनहुँ विहार सरकारक चिकित्सा मन्त्री छथि, आरम्भ कैलनि। आइ विहारमे विहार विश्व विद्यालय, मगध विश्व विद्यालय आदि पाँच-पाँच गोट विश्व विद्यालयक स्थापना भै गेल, किन्तु मिथिला विश्व विद्यालयक नाम पर परभाच्छय उठै लगैत छनि। से किएक? एहि पाछू द्रविड़ भाषीक आशंका मैथिलीक हेतु प्रत्यक्ष प्रमाण नहि सिद्ध होइत अछि? तथापि आब मथिलीओक नाम पर महत्दान प्राप्त होमै लागल अछि, ई भावना दिनानुदिन पुष्ट हैत, जनजनमे पसरत, तकर लक्षण सब दृष्टि गोचर भै रहल अछि। तखन राजनेता लोकनि एकर महत्त्व बूझै लगताह। मैथिलीभाषी दाता बनले रहताह।

श्री 'सुमन' जी आगाँ लिखैत छथि—'विधान निर्माता लोकनि विधाता नहि थिकाह जे कपारपर जे एक बेर टेढ़-टूढ़ रेखा लिखा गेल से मेटल नहि जैत। यदि विधानक संशोधन डेग-डेगपर होइत अछि तँ एकरो मार्जन हैबे करतैक। चेतना अबितहि एहि त्रुटिक परिहार करैक पड़तैक।'[1]

एहि उक्तिमे जे विश्वास छैक से बढ़ैत चेतनाक द्योतक थिकैक। मैथिली लेखक सम्मेलनक आयोजनमे सेहो ई विश्वास बल देलक। एहि

१—दैनिक स्वदेश २२ अक्टूबर १९५५ ई०।

अवसरपर जे स्वस्थ ओ पुष्ट साहित्य मुद्रित भेल से मैथिली साहित्यक संग्रहणीय निधि अछि। ओ सम्मेलन जेना पानिमे पैघ चेप फेकलासँ हिलकोर उठैत छैक, तहिना मैथिली साहित्य जगतमे हिलकोर अनलक। जकर प्रभाव कलकत्ता धरि पहुँचल आ अखिल भारतीय लेखक सम्मेलनमे मैथिली लेखक आमन्त्रित होथि, तदर्थ मैथिल संघ कलकत्ताक कार्यकर्त्ता लोकनि अपन कर्मठता देखौलनि। दुर्भाग्यवश वन्दनीया माताक स्वर्गवास हैबाक कारणेँ ओहि सम्मेलनमे उपस्थित हैबासँ वंचित रहि गेलहुँ। दोसर आन्दोलनात्मक मंच कलकत्तामे विद्यापतिए स्मृति पर्वक अवसरपर भेल, जाहिमे मिथिलाक प्रमुख कवि, साहित्यकार, गायक, अभिनेता, वादक, नर्त्तक आमन्त्रित छलाह आ कलकत्ताक बंगाली समाज मैथिलीक ई वैशिष्ट्य देखि मन्त्रमुग्ध रहि गेलाह।

कलकत्ता विश्वविद्यालय १९१४ ई०मे मैथिलीक एम० ए० धरि पठन-पाठनक व्यवस्था कैलक, जकर श्रेय तत्कालीन उपकुलपति सर आशुतोष मुखोपाध्यायकेँ छनि। मैथिलीभाषी जे क्यौ तदर्थ अर्थदान कै सहयोग कैलनि, ओहो कम धन्यवादार्ह नहि थिकाह। तथापि ओ अपन कर्त्तव्यांशक पालन कैलनि। काशी विश्वविद्यालय सेहो पहिने मान्यता दै चुकल छल। तथापि बिहारमे एकरा हेतु स्थान देब एहिठामक राजनीतिज्ञ लोकनिकेँ नहि सोहाइत रहलनि। पूर्वे उल्लेख कैल जा चुकल अछि जे मिथिलेशक दानशीलता ओ मैथिली-साहित्य-साधक लोकनिक अदम्य उत्साहक फल-स्वरूप पटना विश्वविद्यालय ऐच्छिक रूपमे मैथिलीकेँ जी दाबि कै स्वीकृति देलक, किन्तु १९४८ ई०मे आबि कै मातृभाषाक रूपमे एकरा स्वीकृति भेटलैक, तखन नव जागरण आयल। यद्यपि आरम्भमे ई प्रचार कैल जाय लागल जे मैथिलीक क्षेत्र अति संकुचित अछि, हिन्दी छाड़ि मैथिली पढ़-निहार छात्रक भविष्य अन्धकार-पूर्ण रहतनि। मिथिलाक ग्राम्य-क्षेत्र पर्यन्तमे एहि प्रकारक कुप्रचार कैनिहार अद्यापि विद्यमान छथि। एहि प्रसंग 'वैदेही' विशेषांकमे एक व्यंग्य चित्र छपल छल! एकटा निबन्ध मातृभाषाक महत्त्व ओ एकर पठन-पाठनक औचित्यपर प्रकाश दैत प० श्रीआद्याचरण झा दैनिक आर्यावर्त्तमे छपबौलनि तँ हुनकापर अनुशासनक

कारबाइ कैल गेलनि। ओहि वेचारेकें कोन-कोन संकटक संग संघर्ष करै पड़लनि से वैह जनैत छथि की हमहि जनैत छी। एहि सभक फलस्वरूप जतै कतहु मैथिली पढ़ैबाक व्यवस्था छलो, ततहु प्रतिभा-सम्पन्न छात्र लोकनि मैथिली पढ़बाक दिस अग्रसर नहि होइत छलाह। बहुतो ठाम प्रधानाध्यापके लोकनि एकरा प्रोत्साहन देबाक हेतु उद्यत नहि होइत छलाह। साधारणतः ई कहल जाइत छलैक जे जे भुसकौल हो से ने मैथिली पढ़ै आ वस्तुतः तेहने विद्यार्थी एमहर अबितो छलाह।

विगत १५ वर्षसँ मैथिली अध्यापकक रूपमे काज करैत रहलाक कारणेँ एहि प्रसंग जे कटु अनुभव सब भेल'अछि आ जाहि रूपे समय-समयपर अपमानित हैबाक सौभाग्य (?) प्राप्त होइत रहल अछि से अनिर्वचनीय अछि। यद्यपि बहुतो शिक्षक ओ छात्र वर्गमे बहुतो दिन धरि हीनभावनाक बोध छलनिहों, तथापि मैथिलीभाषी क्षेत्रक विभिन्न भागमे साधक-शिक्षक लोकनि छथि जे ओहि हीनभावनासँ ने स्वयं अभिभूत भेलाह ने छात्रमे ई भावना पल्लवित होमै देलथिन। ओ छात्र-मण्डल आब कार्यक्षेत्रमे आबि रहल अछि, जाहिमे प्रत्येकक हृदयमे मातृभाषाक प्रति असीम श्रद्धा, आत्म विश्वास ओ संघर्षशील बनल रहबाक'अदम्य उत्साह भरल छैक।

एहि प्रकारक छात्र सैन्य संगठनमे प० श्रीकाशीकान्तमिश्र 'मधुप' जे मिथिला पण्डित सभाक दिससँ कवि चूड़ामणि उपाधिसँ विभूषित कैल गेल छथि, प० श्रीकाञ्चीनाथझा 'किरण', प० श्रीरामकृष्णझा 'किसुन', प० श्रीबच्चाठाकुर, श्रीएकनारायणचौधरी, (वर्त्तमान विधायक) प्रो० श्रीहितनारायणझा, श्रीसुरेन्द्रचौधरी प्रधानाध्यापक (पिण्डारुछ) आदि प्रमुख रूपें उल्लेखनीय छथि संगहि समस्त साहित्यकार मण्डल एहिमे योगदान करैत रहलाह। हमरासँ जे भऽ सकल, करैत रहलहुँ।

अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद्क प्रचार विभाग अभिभावकक नामें एक अपील प्रकाशित कैलक संगहि ओहिमे प्राचार्य अथवा प्रधानाध्यापकक नामें एक आवेदन पत्र सहित मुद्रित कराय प्रचारित कैने छल, जकर स्वरूप निम्नलिखित छलैक—

परिपत्र-संख्या—११

मैथिलीभाषी छात्र लोकनिक अभिभावक गँ

विज्ञप्ति

मैथिलीभाषी बन्धु वृन्द,

विश्वास अछि जे अपने लोकनि प्रस्तुत विषय क महत्व पर विचार कै निम्न लिखित बात में सहमत रहब जे :—

वर्त्तमान भारत-सरकार मातृभाषा द्वारा शिक्षक प्रचार चाहैत अछि जाहि सँ शीघ्र देशक जनता शिक्षित हो ओ जनतन्त्रात्मक आधार पर संगठित भारतक सरकार संसारक समक्ष सफल सिद्ध हो। तेँ भिन्न भिन्न भाग मे अपना मातृभाषाक पढ़ाइ आरम्भ भेल अछि। दुर्भाग्यवश मैथिली कँ ई अधिकार किछु विलम्ब सँ प्राप्त भेलैक अछि, जाहि हेतु अनेको देशक हित-चिन्तक लोकनि पूर्ण परिश्रम कै हमरा लोकनिक जे अपन भाषा मैथिली अछि तकरा सरकार द्वारा स्वीकृत करौलन्हि अछि। आब हुनका लोकनिक काज समाप्त भेलैन्हि आ अभिभावक (अपने) लोकनिक कर्त्तव्य होइत अछि जे, जे कोनो विद्यार्थी कोनो विषय पढ़ैत छथि ओ निश्चित रूपें मातृभाषा-पत्र मे मातृभाषा केँ छाड़ि आन भाषा नहि पढ़थि ताहि दिस विद्यार्थीक ध्यान आकृष्ट करिऐन्हि। दोसरभाषाक माध्यमसँ पढ़ला सन्ताँ विद्यार्थीकेँ अधिक भार पड़ि जाइत छैन्हि तेँ महात्मा गान्धी एक ठाम लिखने छथि जे 'मातृभाषाक निरादर माताक निरादर थीक आ' माताक निरादर कैनिहार देश-भक्ति क दाबी नहि कै सकैत अछि।' जखन सब प्रकारें विद्यार्थीकेँ मातृभाषा पढ़ला सन्ताँ लाभ छैन्हि तखन यदि क्यौ हुनका भड़कबैत छथिन्ह जे नीक नौकरी नहि भेटत से भ्रमजाल पसारि रहल छथि, अपन स्वार्थ सिद्ध करबाक हेतु। ताहि जाल मे पड़बाक नहि चाही। कारण पड़ोसमे रहनिहार बंगाली उड़िया भाइ लोकनि यदि मातृभाषा पढ़ि कै अधिक संख्या मे जज कलक्टर होइत छथि तँ हमरोसभक विद्यार्थी ई लाभ उठौताह। मातृभाषाक डूबैत बेड़ा केँ अपने लोकनि विचार कै बचैबाक हेतु यदि उद्यत नहि हैब तँ निश्चित अछि जे संविधान से हमरा सभक भाषा कें

स्थान नहि भेटत अा, हमरा लोकनिक विद्यार्थी पढ़िते-पढ़िते वृद्ध भै जैताह आ' नीक नीक, उच्च उच्च पदक अधिकारी हैबा सँ वंचित रहि जैताह। अतः अपने सभहि सँ नम्र निवेदन अछि जे परिस्थिति पर नीक जकाँ विचारि, देशक उन्नति मे सहयोग देबाक हेतु, अपना विद्यार्थी केँ शीघ्र विद्वान् बनैबाक हेतु, मातृभाषा पत्र मे मैथिली पढ़बाक हेतु प्रोत्साहित करिऐन्हि। निम्न लिखित खण्ड केँ भरि प्रिन्सिपल वा हेड मास्टरक ओहिठाम पठा दिऐन्हि।

निवेदक—

मन्त्री, प्रचार-विभाग अ० भा० मै० सा० परिषद्, दरभंगा

श्रीमान् अध्यापक महोदय!

हमर विद्यार्थी श्री..................वर्ग...............अपनेक शिक्षा-संस्था मे पढ़ैत छथि। हमरा लोकनिक मातृभाषा मैथिली थीक, तेँ अपने सँ सानुरोध विज्ञप्ति जे तदनुकूल मातृभाषा पत्र मे मैथिलीक अध्ययन अध्यापनक व्यवस्था कैल जाय।

हस्ताक्षर..................

पता..................

तिथि..............

विद्यालय, महाविद्यालयमे प्रवेश करबाक हेतु आगत छात्रक अभिभावक लोकनिसँ हस्ताक्षर कराय ओ आवेदन पत्र एकत्र कैनिहार छात्र लोकनि सन्नद्ध रहैत छलाह। क्रमशः छात्रक संख्यामे जे आशातीत वृद्धि भेल, तकर प्रमाण ई अछि जे गत वर्ष १६० छात्र आनर्स लै परीक्षा देलनि अछि।

एहि संग ईहो चेष्टा चलैत रहल जे पंजी व्यवस्थाक बहिर्भूतो वर्गक छात्रकेँ एहि प्रति अभिरुचि उत्पन्न होइनि। फलतः आब क्रमशः एहि भ्रमक निवारण भै रहल अछि जे वर्ग विशेषक मातृभाषा ई नहि, अपितु मिथिलामे उत्पन्न सभक मातृभाषा थीक।

एहि प्रसङ्गमे विस्तार पूर्वक लिखबाक प्रयोजन अछिए। एहि ठाम विस्तारक भयसँ संक्षेपमे एतबे कहब जे भाषाक विकासमे जे अनेक अवरो-

धक तत्त्व अछि से क्रमशः कम भेल जा रहल अछि, किन्तु मैथिलीक पाठ्य-ग्रन्थ सेहो एहिसँ असम्पृक्त नहि रहि सकल अछि।

कतेको रचना एहन पाठ्य ग्रन्थमे संकलित अछि, जाहिसँ ई प्रतीत होइछ जे ब्राह्मण एवं कर्णकायस्थसँ अतिरिक्त वर्गक पूर्ण अधिकार एहि भाषा पर नहि। दोसर वर्गक छात्रक सोझाँ ओकर स्पष्टीकरण वर्गमे कठिन भै जाइत अछि। अनेक उद्धरण देल जा सकैछ, किन्तु ताहिसँ कटुतामे वृद्धिक संभावना तेँ बोद्धालोकनि पाठ्य ग्रन्थ देखिए कै बूझि जाथि सैह पर्याप्त।

एक तँ पाठ्य ग्रन्थक जे संकलन कैल गेल अछि, तकर आइ धरि योजनावद्ध रूप भइए ने सकल अछि। कोन वर्गक हेतु कोन प्रकारक भाव ओ भाषा चाही ताहि पर पूर्णरूपेँ के कहै, आंशिको रूपेँ विचार नहि कैल गेल अछि। प्राथमिक कक्षाक हेतु की कोना अछि तकर सम्यक परिचय हमरा नहि अछि, किन्तु छठम वर्गसँ ऊपरक जे पाठ्य ग्रन्थ अछि ताहिमे आइधरि हमरा कोनो संगति नहि भेटल अछि। ने तँ कोनो साहित्यकारसँ आइधरि पूछल गेलनि अछि जे अमुक वर्गमे पढ़ैबाक हेतु अहाँ उपयुक्त रचना पठाउ आने मैथिलीक शिक्षके लोकनिसँ। सरकारी उदासीनता तँ सर्व विदित अछिए। अपनाकेँ मैथिलीक हेतु अर्पण करबाक दाबी रखनिहारो लोक एहि कालमे यैह दृष्टिकोण रखलनि अछि जे शीघ्र कोनो संकलन स्वीकृत करा लेल जाय जाहिसँ आय केर स्रोत बनल रहै। यदि ककरो पुछबैक तँ भै सकैछ—मनसा चिन्तितं कर्म वचसा न प्रकाशयेत्। अन्यलक्षित कार्यस्य यतः सिद्धिर्न जायते।' एहि सिद्धान्तक अनुसार पछाति गड़बड़ा ने जाय। १९३९ मे जखन ऐच्छिक रूपेँ मैथिलीकेँ स्वीकृति भेटलैक, तखन जे संकलन प्रकाशित भेल, ताहिमे संगतिपर किछु विचारो कैल गेल छल। बादमे तँ एहि सब पर विचार करब निरर्थके मानल गेल। पत्र पत्रिकाक पुरान फाइल उठौलहुँ आ हँसोथि पसोथि कै राखि देलिऐक सैह भेल पाठ्य ग्रन्थ। ओहू रचना सभक संकलनमे रचनाक गुण दोष पर ओतेक ध्यान नहि राखल गेल अछि जतेक ध्यान लेखकक उतेढ़ केर। अत्युच्च कुलोद्भव पहिने स्थान पाबि लेलनि अछि तखन जयवार, पठिहार, दछिनाहा सभक समावेश कैल गेलनि अछि। जे मैथिलीक नाम पर जिनगीमे एक बेर कदाचित कोनो मित्रक दुरा-

ग्रहसँ कलम उठा लेलनि अछि ओ महालेखकक पंक्तिमे उच्चासन पर वैसाय देल गेलाह अछि आ सुच्चासन लेखक बहुतो उपेक्षिते रहलाह। हमर ई मन्तव्य नहि जे ओहिमे सब तेहने लेखक छथि, किन्तु जे लेखक छथि, प्रायः हुनकासँ पाठ्य ग्रन्थक हेतु जँ लिखाओल जाइत तँ बेसो उपयुक्त पाठ्य विषयक संकलन भै सकैत। एखनहुँ ई काज अपेक्षित अछिए, किन्तु प्रश्न ई उठैछ जे एहि दृष्टि एँ यदि कोनो प्रतिष्ठित संस्था कार्यारम्भ करबो करत तँ ओही संकलनकेँ स्वीकृति भेटिजेतैक तकर कोन संभावना ?

आरम्भमे बहुतो पुस्तक एक प्रतिष्ठित संस्थाक नामे पर स्वीकृत भेल, किन्तु पछाति लेखक वा सम्पादक लोकनि अपन स्वत्व स्थापित कै लेलनि। ई सब एहन नग्न-सत्य अछि जकर उल्लेख भविष्यक सुरक्षार्थ परम आवश्यक अछि। एहि प्रकारक अनेक एहने कार्य होइत रहल अछि जे आन्दोलनक प्रगतिमे अवरोधक तत्वक काज करैत रहल अछि।

पाठ्य ग्रन्थक संकलन, स्वीकृति आदिएमे एहि प्रकारक पक्षपात वा स्वार्थ सिद्धिक आयोजन होइत रहल अछि से नहि, शिक्षकक नियुक्ति ओ परीक्षकता आदिअहुमे एतेक सूक्ष्म दृष्टि राखल गेल अछि जाहिसँ वर्ग विशेष ओ व्यक्ति विशेषे लाभान्वित होथि। जे शुद्ध कै मातृभाषेक सेवामे अनुखन दत्तचित्त रहैत छथि, तनिका लोकनिक कतहु चर्चा नहि। शिक्षकक नियुक्तिमे तँ एतेक दूर कैल गेल जे एक व्यक्तिक प्रतिभाकेँ मूर्च्छित कै एक निष्प्राण प्रतिभाक सम्मान हो, आ से भेल, किन्तु प्रतिभाकेँ मूर्च्छित करबाक प्रयास विफले रहल।

कोनो चिन्तनशील व्यक्ति हृदय पर हाथ राखि यदि एकान्तमे सोचथि तँ एहि प्रकारक कार्य कैनिहार व्यक्ति अपने हृदयसँ लजा सकैत छथि।

जेना आरम्भे कालसँ पारस्परिक मतैक्य नहि देखल जाइछ, सब दिन अन्तर्विरोध एकरा प्रगतिमे अवरोध अनैत रहल अछि, तहिना कोनो शब्दक लिखित रूपमे एक रूपता अनबाक प्रयासकेँ शैलीनिर्धारण नाम दै जे अन्तर्विरोध आरम्भ भेल, से अद्यापि दूर नहि भै सकल अछि। एहूमे बहुतो ठाम दुराग्रह देखना जाइछ।

अनेक वैकल्पिक रूपकेँ नहि स्वीकार कै, कोनहुँ एक रूपके अशुद्ध घोषित करबाक चेष्टा सेहो देखल जाइछ। बहुतो लोक अनेक वैकल्पिक रूपकेँ शुद्धे मानैत छथि। तनिक संख्या सेहो बेसी अछि आ एहि जनतन्त्रक युगमे बहुमतक आदर उचित बूझि अनेक वैकल्पिक रूपकेँ मान्यता देलेसँ क्षेत्रमे व्यापकता आबि सकत।

सर्वसाधारणक परिचयार्थ छोट सन गद्यक उद्धरण सब दैत छी जे षष्ठ वर्गक सुकुमार-बुद्धि-बालकक पाठ्य-ग्रन्थमे देल गेल अछि।

(क) 'जखन अहाँ सब क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष इत्यादिमे पड़ि मनुष्यत्वक सीमाक उल्लंघन कर लगैत छी, तखन मनकेँ रोकबाक आवश्यकता पड़ैछ, यदि एहि परीक्षामे उत्तीर्ण भेलहुँ तँ बुझू जे मनुष्यत्व पद सार्थक भेल आओर नहि तँ अहाँ समाजक दृष्टिमे काँट बनि गेलहुँ।

(ख) 'गंगोत्री लग हिमाच्छादित प्रदेश सबमे हिनक क्रीड़ा-प्रिय रूप; उत्तर काशी दिसुक चीर, देवदारुक काव्यमय प्रदेशक शोभनीय स्वरूप; देव प्रयागक पहाड़ी आओर साँकर प्रदेशमे चमचम करैत अलकनन्दाक सङ्ग हिनक क्रीड़ा, लक्ष्मण झूलाक विकरालवक्षसँ बहराएलाक पश्चात् हरद्वारमे स्वच्छन्द विहार, कानपुरक कातमे जाइत हिनक इतिहास प्रसिद्ध प्रवाह, प्रयागक विशाल वक्षक ऊपर हिनक कालिन्दीक संग त्रिवेणी संगम, प्रत्येकक शोभा किछु ने किछु अपूर्व अछि।'

(ग) 'विलक्षण व्यक्तित्व, अपूर्व प्रतिभा, अगाध पाण्डित्य एवं अद्भुत कार्य-शक्तिक पुंज स्वर्गीय झाजीक जन्म सन १८७१ ई० क २५ म सितम्बरकेँ दड़िभङ्गा जिलाक 'गन्धवार' नामक गाममे एक पलिवाड़ महिषी नामक उच्चकुल श्रोत्रिय ब्राह्मण परिवारमे भेल छल।'

ई तँ भेल गद्यक ओ सुलभ स्वरूप जाहि माध्यमसँ हम अपन बीलट मंडल, रामलखन पासवान, रामचन्द्र यादव, गौरीशंकर सिंह, कृष्णमोहन साहु, उमाशंकर पजियाढ़ आदिक संग फक्काँ झा. चिल्लाँ चौधरी सन विद्यार्थीकेँ मैथिली पढ़बैत छिऐनि, जनिका सोझाँमे फेर हमरा ईहो सिद्ध करै पड़ैत अछि जे हम अपन घर-द्वारमे भाइ-बन्धु सबसँ जाहि भाषामे

गप्प-सप्प करैत छी तकरे ई साहित्यिक रूप थीक तँ ओहि नेना लोकनिकेँ चकबिदोर लगैत छनि आ मोने मोन सोचैत छथि जे कतहु परीक्षामे यैह ने पूछै ! हुनका लोकनिकेँ जे रुचिकर लगैत छनि तकरो एक आध टा उद्धरण देब नीक बुझैत छी, जाहिसँ ई स्पष्ट भै सकत जे वस्तुत: कोन वर्गक हेतु कोन प्रकारक भाषा ओ भावक पुस्तक चाही। हुनका सबकेँ एहि प्रकारक भाषाक संग आत्मीयताक बोध होइत छनि जेना—

(क) 'कर्मनिहारिक एक मासक सिदहा उपजि गेलैक अछि। बेचारी उचिते ने कहैत छैक जे पेट बान्हि कऽ कोना काज करब, गोबर कढ़नीकेँ नूआ नहिये भेलैक। ओहो काल्हिसँ छोड़ि देलकऽ। मक्लो ओना मुँह पर जे कहऽ, आब रहतह नहि। खाइयो पीबौमे कोताहुले हेतै तऽ बेचारा चाकरीए किएक करत। लोक-वेद, धीया-पूता सब बिलटल जाइत छह।

(ख) 'पट दऽ बीचहिमे बुलो नरेन्द्रक मुँह अपना तरहत्थीसँ मुनि देलकनि—ई की करै छह इआर, माय पितिआइनिकेँ क्यौ गरिआबय ?'—ई: अहाँ की बुझबैक इआर,—नरेन्द्र बाजल–'अपन जँ एहन हड़ाशंखिनी माय बथाइलि रहितथि तखन ने ?'

(ग) 'अहाँ सबमे बहुतो गोटे एहन छथि जे पढ़िते काल एक दू नीन लऽ लैत छी। आगाँमे किताब फूजल अछि आ अपने नीन गबैत छी।...... आँखि मुनायल की वैतरणीक पार चल गेलहुँ। पल लगितो बेशी काल नहि भेल, एखनहि गप्प कऽ रहल छी, उत्तर दऽ रहल छी, छने भरिक बाद पुछि-औनि तँ बस, कतहु किछु नहि। जेना अनचोकेमे फुटबालसँ बसात बाहर भऽ गेल हो।'

एहि उद्धरण सबमे जे स्वाभाविकताक दर्शन होइत छनि, ताहिसँ आकर्षण आ उपर्युक्त उद्धरण सबसँ विकर्षण होइत छनि। एहिमे बाल-मनोविज्ञानकेँ आधार बनाय, ग्रन्थ-प्रणयनक आवश्यकता अछि आ एहि हेतु आवश्यक अछि जे मैथिली शिक्षक-मण्डलक एक संगठित गोष्ठी हो, जाहिमे एहि सब पर विचार कैल जाय आ अनुकूल पाठ्यग्रन्थ छात्र लोकनिकेँ भेटि सकनि।

मैथिली शिक्षक संघक संगठनसँ एक लाभ आरो हैत जे सम्प्रति विद्यालय सबमे मैथिली पढ़ैबाक प्रति जे उदासीनता अछि, तकर परिष्कार भै सकत। ई निः संकोच कहल जा सकैछ जे मैथिलीक बहुतो शिक्षक ओ परीक्षक सेहो एकरा हेतु अवरोधक तत्त्व बनल छथि।

शिक्षक एहि रूपेँ जे ओ वर्गमे जखन जाइत छथि तँ कहि दैत छथिन जे होअइ पढ़ैत जाइ, ई सब तँ अबिते छइ। 'राधाकेँ ने नौ मन घिउ हैतनि ने राधा नचतीह, ऊटक मुँहमे जीरक फोड़न' ई सब ककराने अवैत छैक ? एतबा कहि ओ अपन कुर्सी पर आसीन भै विद्यालयक अखबार लै पढ़ि लैत छथि। एहि प्रकारेँ छात्रक अपरिपक्व मस्तिष्कमे मातृभाषाक प्रति सुलभताक भावना नहि अंकित होइत छनि, अपितु एकरा प्रति एक प्रकारक हीन-भावना दृढ़ होइत जाइत छनि।

परीक्षक एहि रूपेँ जे बहुतो गोटे मूल्यांकन करब कोनो श्रमजन्य काज नहि बुझैत छथिन, परिणामतः नीको छात्रकेँ सामान्य अंक आ भुसकौलाचार्योकेँ समान अंक भेटि जाइत छनि तँ दूनूक दू प्रतिक्रिया होइत छनि। भुसकौल छात्र मैथिलीकेँ पढ़बाक योग्य साहित्य मानिते ने छथि। हुनक तर्क रहैत छनि जे हमरा बिनु पढ़नहि एतेक नम्बर आबि गेल, मैथिली किछु थिकैक ?' आ नीक छात्रकेँ वितृष्णा होइत छनि जे एतेक श्रम कैलो उत्तर एतबे अंक प्राप्त भेल। फलतः ओ विरत भै जाइत छथि।

विश्वविद्यालयीय क्षेत्रमे पक्षपातक दोषारोपण कैल जाइत अछि। एहि सबसँ प्रगतिमे किछु ने किछु अवरोध अवश्य अवैत अछि।

सारांश ई जे पाठ्य ग्रन्थक असन्तुलन दूर कैलजाय, मैथिली शिक्षकक विचार गोष्ठीक आयोजन हो, मैथिली शिक्षकक परामर्श सँ बालवर्ग सँ क्रमिक विकासकेँ दृष्टि मे राखि गद्य एवं पद्य संग्रहक संकलन हो, जाहि सँ नवम विशिष्ट वर्गक छात्र एवं छात्राकेँ —

'प्रथमहि अलक तिलक लेब साजि। चंचल लोचन काजरे आँजि॥'

झाँपब कुच दरसाओब आध। दृढ़कए बाँधब नीवी बाँध॥

सदृश पद पढ़ैबाक संकट शिक्षकक सोझाँ नहि आबि सकनि।

मैथिलीक समक्ष एखनहुँ अनेक समस्या अछि, जाहि दिस किछु वर्ष पूर्व मैथिली साहित्य परिषदक प्रचार विभाग सभक ध्यान आकृष्ट कैने छल। पुनः तकर स्मरण कराय हम एहि सर्वेक्षण कें एहि ठाम समाप्त करैत छी।

संसारक वस्तुस्थितिसँ साधारणो परिचय रखनिहार आब एहि यथार्थकें बूझि रहल छथि जे मातृभाषाक रक्षा अपना अस्तित्वक रक्षा थीक।

आब ई प्राकृतिक सम्पत्तिक क्रमिक राष्ट्रियकरण भै रहल अछि। आब जे व्यक्ति अपन पुरुषार्थक बलें जीवन स्तरकें उच्च नहि बना सकत से उत्तराधिकारक बल पर समाजमे विशिष्ट स्थान सुरक्षित नहि राखि सकत। जहिना बौद्धिक विकास शिक्षाक अभावमे सम्भव नहि, तहिना शिक्षाक विकास मातृभाषाक उपेक्षासँ सुलभ तवं शीघ्र होमैवला कथमपि नहि।

हमरा केवल जनक, याज्ञवल्क्य तथा उदयन, मंडन, वाचस्पति, विद्यापतिक नामोच्चारण कै मिथ्याभिमानमे आन्हर नहि बनबाक अछि।

जखन स्वाधीनताक शुभ्र आलोक मे हमरा ई सुअवसर प्राप्त भेल अछि, जे अपना मातृभाषाक यथाशक्ति अभ्युत्थान हम कै सकैत छी, तखन हमरा लोकनि मोहाभिभूत नहि रही।

सर्व प्रथम समस्या तँ ई अछि जे मिथिला मे बसनिहार कोनो जाति विशेषक मरौसी सम्पत्ति मैथिली भाषा नहि। ई तँ एहि ठाम जन्म लेनिहार वर्ण मात्रक मातृभाषा थीक। तें मिथिला वासी प्रत्येक व्यक्तिक हृदय मे मैथिलीक प्रति जन्मजात प्रेम एवं सम्मानक भावना हो, तेहन वातावरण हो।

एहि तथ्य कें दृष्टि पथ पर रखैत शिक्षित भेनिहार एवं शिक्षित बनौनिहार प्रत्येक शिक्षार्थी, अभिभावक ओ शिक्षक एहि लाभ कें बूझथि जे मातृभाषाक माध्यम सँ शिक्षा देब स्वार्थ साधन नहि, अपितु राष्ट्रक प्रति कर्त्तव्यक पालन थीक।

प्रत्येक विद्यालय एवं कालेज मे मैथिली पढ़ैबाक व्यवस्था करैबाक हेतु समस्त मिथिलावासी एक स्वर सँ अधिकारीक ध्यान आकृष्ट करथि।

मिथिला क्षेत्रक प्रतिनिधित्व कैनिहार राज्य ओ केन्द्रक प्रतिनिधि एहि हेतु सजग होथि जे कतहु कोनो प्रकारक भ्रमात्मक विचारक प्रचार नहि हो तथा सरकार एहू भाषाक संरक्षण अपन उत्तरदायित्व बूझे।

भाषा कें भाषा-विज्ञानक नाम पर जन साधारणक हेतु दुरूह बनैबाक प्रवृत्तिक अन्त हो आ भाषाक ओ रूप सर्वमान्य बूझल जाय जाहि सँ जन साधारण कें सौकर्यक बोध होइक।

लिखल पढ़ल व्यक्ति जन साधारण कें मातृ भाषाक महत्त्व बुझाय भाषान्तर वा कोनो आन नाम पर बौद्धिक शोषणक शिकार नहि बनै देथि।

मातृभाषाक भंडार के सर्वाङ्गपूर्ण बनैबाक हेतु मातृभाषा-सेवी लोकनि कें उचित प्रोत्साहन भेटि सकैन्हि। मिथिला क्षेत्रमे आकाश वाणी केन्द्रक स्थापना हो, कम सँ कम एक दैनिक पत्रक प्रकाशन हो, मैथिलीमे सिनेमाक निर्माण हो, जन-प्रिय गीत सभक रेकर्ड हो, एक मैथिलीक स्वतन्त्र रंग-मंचक संघटन हो।

एवं प्रकारें अनेको समस्या अछि। ई युग बहुत किछु प्रचार पर निर्भर अछि। अतः समस्त मैथिली भाषी एवं मिथिला निवासी प्रत्येक जाति, प्रत्येक वर्ग ओ प्रत्येक क्षेत्र मे काज कैनिहार सँ विनम्र प्रार्थना करबैन्हि जे ओ राष्ट्रक उत्थानक हेतु राष्ट्रभाषोक सेवा करथि एवं व्यक्ति ओ समाजक उन्नतिक हेतु तत्प्रान्तीय मातृभाषा सब कें समुचित स्थान ओ सम्मान देथि। जहिना एक व्यक्ति अपन दुश्चरित्रता सँ समस्त समाज कें कलंकित आ दोष पूर्ण बना सकैछ, तहिना अपन सच्चरित्रता सँ समाज कें समुन्नत ओ गुणान्वित कै सकैत अछि। हर्षक विषय थीक जे संस्कृत विश्वविद्यालयमे मैथिलीकें स्थान भेटि गेल अछि तथा मिथिलाक हृदय प्रदेश दरभंगाक चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालय मे मैथिलीक एम० ए० कक्षाक पाठन-व्यवस्था भेल अछि। आन्दोलन अर्थात् जन भावनाकें जाग्रत रखला सँ क्रमहिं सब अधिकार प्राप्त हैबे करत किन्तु साहस ओ दृढ़ता सँ।

उठू, अपन उन्नतिक संग समस्त भूमंडलक मानव जातिक कल्याणार्थ मातृभाषाक समुन्नति मे सन्नद्ध होउ।